सुप्रभात

धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

रांची और धनबाद से एक साथ प्रकाशित

सबकी बात सबके साथ

रांची, रविवार 02.02.2025

बजट 2025

फील गुड बजट

- गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति पर फोकस
- 12 लाख सलाना आय पर अब कोई टैक्स नहीं
- मैन्युफैक्चरिंग, स्वदेशी, रोजगार व इनोवेशन पर फोकस

● निर्मला सीतारमण की मधुबनी प्रिंट साड़ी का है रामायण काल से नाता

एजेंसी

नयी दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण शनिवार को रिकॉर्ड आठवां लगातार बजट पेश किया। बजट में वित्त मंत्री ने मध्यम वर्ग को बड़ा तोहफा देते हुए 12 लाख रुपये तक की आय पर कोई टैक्स नहीं लगाने का एलान किया। आयकर छूट में बड़ी राहत देते हुए मध्यम वर्ग को फील गुड कराने का मौका दिया है। किसानों और एमएसएमई सेक्टर के लिए कई अहम घोषणा की। बजट भाषण में वित्त मंत्री नेा कहा, हमारा फोकस ज्ञान (जीवाईएएन) यानी गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति पर है। इसके साथ ही स्वास्थ्य, मैन्युफैक्चरिंग और मेकिंग इंडिया, रोजगार और इनोवेशन पर हमारा ध्यान केंद्रित है। साथ ही कृषि और निर्यात पर हम काम कर रहे हैं, हमारा उद्देश्य विकसित भारत बनाने पर है। वित्त मंत्री ने अपने पिटारे से बिहार में मखाना बोर्ड बनाने , समेत बिहार के लिए कई अहम योजनाओं का एलान किया है। ये विकसित भारत का बजट है। पीएम मोदी के नेतृत्व में इकोनॉमी को गति देंगे। वित्त मंत्री ने बजट पेश करते हुए कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था बढ़ती हुई और बड़ी है। हमने पिछले 10 सालों में दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। यह बजट विकसित भारत के संकल्प का प्रतीक है।

बजट में मध्यम वर्ग को बड़ा तोहफा

मिडिल क्लास को 12 लाख तक कोई टैक्स नहीं, नया इनकम टैक्स बिल शीघ्र, टीडीएस की सीमा बढ़ाकर 10 लाख,, किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ी , गंभीर बीमारियों की दवाइयां कस्टम फ्री होंगी, सस्ते होंगे चमड़े से बने सामान, पीएम धन धान्य कृषि योजना का ऐलान, स्वास्थ्य सुविधाओं का ऐलान, बीमा क्षेत्र में एफडीआई की सीमा 10 प्रतिशत, बीमा क्षेत्र में एफडीआई की सीमा 10 प्रतिशत, मेडिकल कॉलेज में दस हजार से ज्यादा सीटें जोड़ी जाएंगी, IIT का विकास, बढ़ेगा आधारभूत ढांचा, स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए 20,000 करोड़, इनोवेशन के लिए 20 हजार करोड़ रुपये, 50,000 सरकारी स्कूलों में अटल टिंकरिंग लैब्स, 20 हजार करोड़ का परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम, जल जीवन मिशन का होगा विस्तार

50 लाख करोड़ रुपये का बजट

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का दूसरा बजट पेश किया। वित्तीय वर्ष 2025-26 में बजट अनुमान 50,65,345 करोड़ रुपये है, जिसमें कुल पूंजीगत व्यय 11,21,090 करोड़ रुपये है। इसमें राज्यों को 25,01,284 करोड़ रुपये मिलेंगे। सरकार ने बताया कि बजट में कुल राजस्व प्राप्ति 34,20,409 करोड़ रुपये है। वहीं पूंजीगत प्राप्तियां 16,44,936 करोड़ रुपये हैं।

टीडीएस की सीमा 10 लाख की गयी

बुजुर्गों के टैक्स डिडक्शन में सुधार किया जायेगा। टीडीएस की सीमा बढ़ाकर 10 लाख की जायेगी। आईटीआर भरने की समय सीमा बढ़ाकर चार साल कर दी जायेगी। सीनियर सिटीजन को टैक्स में दोगुनी छूट दी जायेगी। टीडीएस में भुगतान की देरी को अपराध की कैटेगरी से बाहर किया।

किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ी

किसान क्रेडिट कार्ड को लेकर बड़ा ऐलान किया। किसान क्रेडिट कार्ड से अधिक ऋण मिलेगा। किसान क्रेडिट कार्ड से लोन 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख कर दी जायेगी।

पीएम धन धान्य कृषि योजना

फसलों की उपज बढ़ाने हेतु प्रधानमंत्री धन-धान्य योजना शुरू की जायेगी। इस योजना से 1.7 करोड़ किसानों को फायदा होगा। राज्य सरकारों के सहयोग से देश के 100 जिलों में यह योजना चलायी जायेगी।

नयी कर व्यवस्था में स्लैब बदलने से कितना फायदा

कर योग्य आय	पहले टैक्स	अब टैक्स	फायदा
12 लाख	80,000	00	80,000
16 लाख	1,70,000	1,20,000	50,000
20 लाख	2,90,000	2,00,000	90,000
24 लाख	4,10,000	3,00,000	1,10,000
50 लाख	11,90,000	10,80,000	1,10,000

कितनी कमाई, कितना टैक्स, कितना लाभ

यदि आपकी वार्षिक आय 12 लाख रुपये तक है, तो आपको कोई कर नहीं देना होगा। यदि आपकी आय 13 लाख रुपये है, तो पहले आपको 88,400 रुपये का कर देना होता था, लेकिन स्लैब में बदलाव के बाद अब आपको 66,300 रुपये का कर देना होगा। इसका मतलब है कि अब आपको लगभग 22,100 रुपये का बड़ा लाभ होगा। 15 लाख रुपये सालाना कमाने वालों को पहले 1.30 लाख रुपये टैक्स देना होता था, लेकिन नये स्लैब के बाद उन्हें सिर्फ 97,500 रुपये देने होंगे। यानी अब उन्हें 32,500 रुपये का लाभ होगा। 17 लाख रुपये कमाने वालों को अभी 1 लाख 84 हजार रुपये टैक्स देना होता है, लेकिन नए स्लैब के बाद अब उन्हें 1.30 लाख रुपये टैक्स देना होगा, जिससे उन्हें 54,600 रुपये का लाभ होगा। वित्त मंत्री ने कहा कि कर छूट से मध्यम वर्ग के लोगों के पास खपत के लिए अधिक पैसे बचेंगे। साथ ही निवेश और बचत भी बढ़ेगी। यदि आपकी आय 22 लाख रुपये है, तो पहले आपको 3,40,600 रुपये टैक्स देना होता था, लेकिन अब आपको 2,40,500 रुपये टैक्स देना होगा। यानी, अब आपको 1,00,100 रुपये का फायदा होगा। 25 लाख रुपये सालाना कमाने वालों को पहले 4,34,200 रुपये टैक्स देना होता था। अब उन्हें 3,19,800 रुपये टैक्स देना होगा, जिससे उन्हें 1,14,400 रुपये का फायदा होगा।

12 लाख सालाना आय वालों को कोई कर नहीं

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने उम्मीदों के अनुरूप मध्यम वर्ग को बड़ी राहत देते हुए 12 लाख रुपये तक की सालाना आय को पूरी तरह से कर मुक्त किये जाने की घोषणा की। यह छूट नयी आयकर व्यवस्था में दी गयी है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को को बजट पेश करते हुए मध्यम वर्ग को यह बड़ी राहत दी। उन्होंने घोषणा की कि अब 12 लाख रुपये तक की वार्षिक आय वाले लोगों को कोई कर नहीं देना होगा। पहले, 12 लाख पर 71,500 रुपये का कर देना होता था।

सरल व नया आयकर बिल शीघ्र

वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार अगले सप्ताह एक नया आयकर विधेयक लाने जा रही है, जिससे कर प्रणाली को और अधिक सरल और पारदर्शी बनाया जायेगा। सीतारमण ने छह दशक पुराने कानून की जगह एक सरल और हल्का नया कानून लाने का वादा किया। नये कानून में 'न्याय' की भावना होगी और यह 'पहले विश्वास करो, बाद में जांच करो' के सिद्धांत पर काम करेगा।

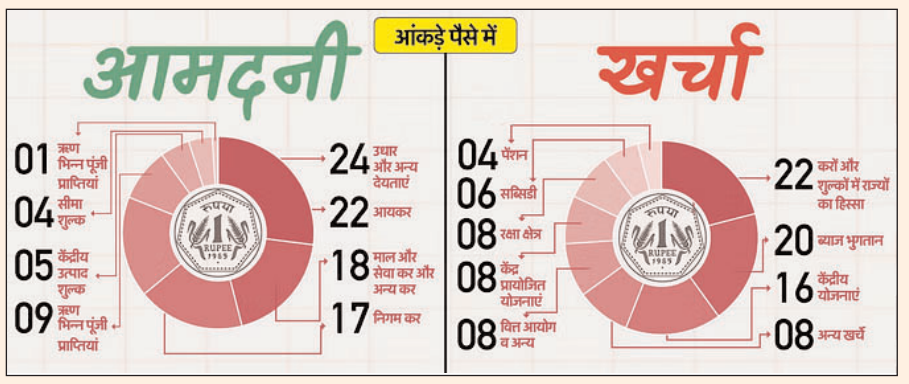

पाई-पाई का हिसाब-किताब

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को 50 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का बजट पेश किया। बजट में पैसा कहां से आता है, कहां जाता है, यह हिसाब आमतौर पर सभी लोग नहीं समझ पाते। इसे ठीक तरह से समझने के लिए उसके पाई-पाई के हिसाब को समझना जरूरी है। बजट में पैसा कहां से आता और कहां जाता है, इसे ऊपर के आंकड़े से समझा जा सकता है।

बजट से पहले गैस सात रुपये सस्ता

केंद्रीय बजट से पहले एलपीजी सिलेंडर के दामों में बड़ी राहत दी गयी है। ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने 19 किलो के एलपीजी कमर्शियल सिलेंडर की कीमत में 7 रुपये की कटौती की है। वहीं 14 किलोग्राम के घरेलू एलपीजी सिलेंडर की कीमत में कोई संशोधन नहीं किया गया है।

सीनियर सिटीजन को मिला यह तोहफा

सीनियर सिटीजन को भी बजट में सरकार ने खास तोहफा दिया गया है। अब 60 वर्ष से ऊपर के नागरिकों के लिए ब्याज पर टैक्स कटौती की सीमा को बढ़ाकर 1,00,000 रुपये कर दिया गया है। यह पहले 50,000 रुपये थी।

एससी-एसटी महिला उद्यमियों को बड़ी राहत

अपने भजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने देश की आधी आबादी यानी महिलाओं के लिए भी कुछ एलान किये। उन्होंने कहा कि सरकार पहली बार उद्यम शुरू करने वाली पांच लाख महिलाओं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों के लिए दो करोड़ रुपये का ऋण शुरू करेगी। भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी में बीते कुछ वर्षों में बड़ा इजाफा हुआ है। इसके तहत अगले पांच वर्षों में महिला उद्यमियों को दो करोड़ रुपये तक का टर्म लोन उपलब्ध कराया जायेगा। सक्षम आंगनबाड़ी एवं पोषण 2.0 स्कीम के तहत आठ करोड़ गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं और लड़कियों को पोषण देने की बात कही गयी है। देश में कुल 252 करोड़ बैंक अकाउंट हैं, जिनमें से 36.4 प्रतिशत यानी करीब 91 करोड़ खाते महिलाओं के हैं।

बजट की बड़ी बातें

- **पहली बार** सरकार ने पेश किया 50 लाख करोड़ से ज्यादा का बजट पेश।
- **किसानों को सौगात** किसान क्रेडिट कार्ड पर पांच लाख तक का लोन, कृषि क्षेत्र के लिए बड़े एलान।
- **मेड इन इंडिया का डंका** टीवी से लेकर मोबाइल तक होंगे सस्ते, पूरी दुनिया में बजेगा मेड इन इंडिया का डंका।
- **ऑटोमोबाइल** लिथियम-आयन बैटरी के घरेलू विनिर्माण को मिलेगा बढ़ावा, इलेक्ट्रिक वाहन होंगे सस्ते।
- **गरीब को क्या मिला?** ई-श्रम पोर्टल पर होगा एक करोड़ 'गिग वर्कर्स' का पंजीकरण।
- **आधी आबादी के लिए क्या?** एससी-एसटी महिला उद्यमियों के लिए नई योजना, पांच वर्षों में 2 करोड़ रुपये तक का टर्म लोन मिलेगा।
- **युवाओं के लिए क्या खास?** स्टार्टअप के लिए 10000 करोड़ की फंड ऑफ फंड्स योजना का एलान।
- **एमएसएसई के लिए क्या?** क्रेडिट कार्ड धारकों के लिए खुशखबरी, 5 नहीं अब 10 करोड़ होगी लिमिट।
- **खेल बजट** पिछली बार की तुलना में खेल बजट में 352 करोड़ रुपये की वृद्धि।
- **बिहार की बहार** बजट में बिहार की बहार, चुनावी राज्य के लिए वित्त मंत्री खोला खजाना

'गोली के घावों पर पट्टी' के समान बजट: राहुल गांधी

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने केंद्रीय बजट को 'गोली के घावों पर पट्टी' करार देते हुए कहा कि केंद्र 'विचारों के मामले में दिवालिया' हो चुका है। उन्होंने कहा कि आर्थिक संकट को हल करने के लिए बदलाव की जरूरत है। वैश्विक अनिश्चितता के बीच, हमारे आर्थिक संकट को हल करने के लिए बदलाव की जरूरत है। श्री गांधी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा- कांग्रेस ने पहले केंद्रीय बजट की आलोचना की थी।

विकसित भारत की ओर एक और कदम : राजनाथ

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बजट की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने की दिशा में एक शानदार बजट पेश किया। यह बजट युवा, गरीब, किसान, महिलाओं के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों और क्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देने वाला है। खासकर मिडिल क्लास के योगदान का ध्यान रखते हुए यह बजट अभूतपूर्व तोहफा लेकर आया है।

लॉलीपॉप जैसा लगता है यह बजट: शत्रुघ्न सिन्हा

टीएमसी सांसद शत्रुघ्न सिन्हा ने बजट में बिहार को दी गई तरजीह पर प्रसन्नता जतायी। उन्होंने कहा, बिहार को ध्यान में रखते हुए यह बजट लॉलीपॉप जैसा लगता है। बिहार के प्रावधानों को लेकर अच्छा लगा, लेकिन अभी चुनाव का समय भी है, तो क्या यह बिहार को आगे ले जाने वाला चुनावी बजट है।

सबके सपने पूरा करने वाला बजट है : पीएम

नयी दिल्ली। मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला पूर्ण बजट शनिवार को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण संसद में पेश किया। लगातार 8वीं वार बजट पेश कर उन्होंने इतिहास रच दिया। केंद्रीय बजट (2025) पर पीएम मोदी ने कहा कि आज भारत की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह 140 करोड़ भारतीयों की आकांक्षाओं का बजट है। यह हर भारतीय के सपनों को पूरा करने वाला बजट है। हमने युवाओं के लिए कई क्षेत्र खोले हैं। आम नागरिक विकसित भारत के मिशन को आगे बढ़ायेगा। मोदी ने कहा, 'यह बजट एक फोर्स मल्टीप्लायर है. यह बजट बचत, निवेश, खपत और विकास को तेजी से बढ़ायेगा। मैं इस जनता जनार्दन के बजट के लिए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और उनकी पूरी टीम को बधाई देता हूं। इस बजट से मिडिल क्लास को बहुत फायदा मिलेगा।

विकसित भारत के सपने साकार होंगे: शाह

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एमएसएमई क्षेत्र को क्रेडिट गारंटी कवर को दोगुना करने की सरहना की। उन्होंने कहा कि इससे स्टार्ट-अप और विनिर्माण केंद्रों को बढ़ावा मिलेगा। फुटवियर, चमड़ा और खिलौना विनिर्माण उद्योगों पर बजट का ध्यान जमीनी स्तर पर नौकरियों को बढ़ावा देगा, जिससे पीएम मोदी के विकसित भारत के सपने को साकार किया जा सकेगा।

- **एआई एजुकेशन को 500 करोड़ का तोहफा :** केंद्र सरकार शिक्षा के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए एक नये उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना करेगी। इसके लिए 500 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया गया है। यह घोषणा वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में दी।
- **गंभीर बीमारियों की दवाएं कस्टम फ्री:** घरेलू इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर में बड़ा निवेश किया जायेगा। कैंसर समेत रेयर डिजीज से पीड़ित लोगों के लिए दवाइयों को पूरी तरह से कस्टम फ्री कर दिया जायेगा। 36 जीवन रक्षक दवाओं पर पूरी तरह से सीमा कर खत्म कर दिया जायेगा। सभी सरकारी अस्पतालों में कैंसर डे केयर सेंटर बनाये जायेंगे। कैंसर के इलाज की दवाएं सस्ती होंगी। 6 जीवन रक्षक दवाओं पर कस्टम ड्यूटी 5 फीसदी कर दी जायेगी। अगले पांच सालों में 50,000 सरकारी स्कूलों में अटल टिंकरिंग लैब्स जायेगी।
- **सस्ते होंगे चमड़े से बने सामान:** चमड़े से बने सामान की कीमतों में कमी होने की संभावना है। इनकम टैक्स कानून में सुधार के बाद दंड की जगह न्याय पर फोकस रहेगा। लेदर उद्योग स्कीम में 22 लाख नई नौकरी पैदा करने का लक्ष्य है। लेदर उद्योग स्कीम में 22 लाख नई नौकरी पैदा करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए सरकार मदद मुहैया करायेगी।
- **टीवी एलइडी सस्ते:** केंद्र ने कोबाल्ट उत्पाद, एलईडी, जिंक, लिथियम आयन बैटरी स्क्रैप और 12 महत्वपूर्ण खनिजों को मूल सीमा शुल्क से पूरी तरह छूट देने का भी प्रस्ताव किया है। एलईडी, एलसीडी टीवी पर कस्टम ड्यूटी घटाकर 2.5 फीसदी कर दी जायेंगी। ऐसे में इन इलेक्ट्रॉनिक समानों के दाम कम होंगे।

सीता की घर वापसी को लेकर अटकलें, पर आज न कल लौटेंगी

दिशोम गुरू केजन्मदिन पर शिबू सोरेन के आवास पर जूटे थे पूरा परिवार, कड़वाहट कम कर हंसी ठिठोली हुई थी

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। शिबू सोरेन परिवार की बड़ी बहू सीता सोरेन झामुमो में लौट रही हैं, इस बात की अटकलें दो दिनों से तेज है। लेकिन परिवार में इनके वापसी को लेकर सहमति की बात किसी ने नहीं कही है। इनकी वापसी मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और कल्पना सोरेन की सहमति के बिना संभव नहीं है। यही कारण है कि परिवार के कोई सदस्य कुछ भी साफ-साफ नहीं बोल रहा। सीता सोरेन भी कुछ बोलने से बच रही हैं। उनका कहना है कि अभी फैसला नहीं लिया है। आगे समय बताएगा। अभी तो जहां हैं वहीं हैं। सीता सोरेन भाजपा में हैं।

लोकसभा व विधानसभा चुनाव में हार के बाद सीता सोरेन राजनीतिक भविष्य को लेकर चिंतित हैं। राजनीति में उनकी आगे की राह भी मुश्किल है। संथाल की राजनीति में झामुमो की पैठ है। ऐसे में भजापा में रहकर आगे भी सांसद-विधायक बनना सीता सोरेन के लिए कठिन है। इसलिए वह वापस झामुमो में लौटना चाहती हैं। सीता सोरेन की बेटियां भी चाहती हैं कि भविष्य की राजनीति को देखते हुए झामुमो में वापसी की जाए। झामुमो में वापसी के लिए परिवार में बेटियां भी संपर्क सूत्र बनीं हुई हैं।

घर वापसी की पहल को लेकर ही सीता सोरेन 11 जनवरी को झामुमो सुप्रीमो शिबू सोरेन के जन्मदिन पर बेटियों के साथ उनके घर गई थीं। जन्मदिन समारोह में शामिल हुईं। इसी दिन से यह कयास लगाया जा रहा था कि सीता सोरेन झामुमो में वापसी को लेकर पृष्ठभूमि तैयार कर रही हैं। सूत्रों के अनुसार सीता सोरेन की वापसी को लेकर शिबू सोरेन व रूपी सोरेन तैयार हैं। शिबू सोरेन चाहते हैं कि परिवार एकजुट रहे। विवाद को खत्म किया जाए। लेकिन अभी तक मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन व कल्पना सोरेन तैयार नहीं हैं। सीता सोरेन जिस तरह झामुमो को छोड़कर भाजपा में शामिल हुईं और जिस तरह के गंभीर आरोप हेमंत सोरेन व कल्पना सोरेन पर लगाकर हमलावर रहीं, उससे हेमंत व कल्पना आहत हैं। दिवंगत दुर्गा सोरेन को लेकर सीता सोरेन ने जो आरोप लगाए वह गंभीर थे।

दिशोम गुरू शिबू सोरेन के 81वां जन्मदिन पर पूरा परिवार शिबू सोरेन के आवास पर जूटे थे। सीता सोरेन और उनकी बेटियां भी पहुंची थी। कल्पना सोरेन भी मौजूद थीं। दोनों भाई सीएम हेमंत सोरेन और बसंत सोरेन सभी साथ में थे। यही वह समय था जब पुरानी कड़वाहट दूर हो गयी थी। सूत्रों के अनुसार हेमंत व कल्पना सोरेन को अब जो हुआ उसे भूल जाने को लेकर मनाया जा रहा है। परिवार में एकता बनी रहे यह समझाया जा रहा है। इस काम में पार्टी व परिवार के कई लोग लगे हुए हैं। संभव है दोनों परिवार हित में मान भी जाएं। हेमंत सोरेन की सहमति मिलने के बाद सीता सोरेन की घर वापसी होगी।

सीता सोरेन को भाजपा ने पूरा सम्मान दिया। पार्टी में शामिल कराकर पहले दुमका लोकसभा व फिर जामताड़ा विधानसभा सीट से टिकट दिया. वह दोनों चुनाव नहीं जीत सकीं। सीता सोरेन भाजपा में अब अपना राजनीतिक भविष्य नहीं देख रही हैं। वह अपनी बेटी को भी राजनीति में सक्रिय करना चाहती हैं। इसलिए भी झामुमो वापसी चाहती हैं. झामुमो सत्ता में है, इसलिए इसका लाभ भी उन्हें मिलेगा।

राष्ट्रपति 15 को बीआइटी मेसरा के प्लेटिनम जुबली समारोह में होंगी शामिल

रांची। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 15 फरवरी को राजधानी रांची आएंगी। वे बीआइटी मेसरा में आयोजित प्लेटिनम जुबली समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगी। यह कार्यक्रम बीआइटी मेसरा के 70 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित किया जा रहा है। समारोह 15 फरवरी से 15 जुलाई तक चलेगा। राष्ट्रपति मुर्मू सुबह 10 :00 बजे बीआइटी मेसरा पहुंचेंगी, जहां बिरला ग्रुप के चेयरमैन, राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन भी समारोह में शामिल होंगे। इस वर्ष संस्थान अपने 70 वर्षों का इतिहास मना रहा है। इस अवसर पर कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जो शिक्षा, नवाचार और समाज के उत्थान में बीआइटी मेसरा की योगदान को रेखांकित करेगा।

शपथ पत्र

समक्ष श्री
लेख्यप्रमाणक, कोडरमा।

मैं, महेश यादव, पिता स्व. युगल यादव (Late Yugal Yadav), उम्र करीब 43 वर्ष, धर्म-हिन्दू, राष्ट्रीयता भारतीय, निवास ग्राम गैड़ा, पोस्ट गुमो बरवाडीह, ओ०पी०-तिलैया डैम, थाना-जयनगर, जिला-कोडरमा (झारखण्ड) शपथ पूर्वक निम्नलिखित ब्यान करता हूँ कि:-

1. यह कि मैं उपरोक्त पते का स्थायी निवासी है।
2. यह कि मेरा आधार सं० 7382 5676 6470 एवं PAN No. AFEPY 0576E है, जिसमें मेरे पिता का नाम युगल यादव (Yugal Yadav) दर्ज है, जो सही है।
3.यह कि मेरा DL No. JH12 20030031766 है, जिसमें भूलवश मेरे पिता का नाम जुगल यादव (Jugal Yadav) दर्ज हो गया है।
4. यह कि मैं यह शपथ पत्र अपना उपरोक्त ड्राइविंग लाइसेन्स में दर्ज मेरे पिता का नाम जुगल यादव (Jugal Yadav) के स्थान पर मेरे पिता का सही नाम स्व० युगल यादव (Late Yugal Yadav) दर्ज करवाने हेतु बना रहा हूं।
5. यह कि कंडिका 1 से लेकर 4 तक की सारी बातें सत्य वो सही है। गलत पाये जाने पर इसकी जवाबदेही मेरी होगी।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष को अपनी टीम बनाने के लिए समर्पित कार्यकताओं की है तलाश

सत्येन्द्र

रांची। झारखंड प्रदेश कांग्रेस वर्ष 2025 को संगठन सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मना रही है। इस संबंध में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने कहा है कि इस साल के अंत तक झारखंड के गांव-टोलों तक कांग्रेस संगठन की पहुंच हो जाएगी। हालांकि अभी तक पूर्ण पीसीसी यानी प्रदेश कांग्रेस कमेटी का गठन नहीं हुआ है।

इस संबंध में उन्होंने बताया कि वर्तमान प्रदेश कांग्रेस की टीम में वहीं लोग होंगे जिन्होंने पिछले चुनाव में कम से कम अपने बूथ पर कांग्रेस या महागठबंधन के उम्मीदवार को लीड दिलाई हो। उन्होंने कहा कि जो पार्टी का निष्ठावान और समर्पित कार्यकर्ता होगा उन्हें पार्टी के प्रदेश कमेटी में मौका दिया जाएगा। उन्होंने कहा है कि कांग्रेस के नीति सिद्धांत में विश्वास रखने वाले और समर्पित कार्यकर्ता को ही झारखंड कांग्रेस प्रदेश कमेटी में जगह मिलेगी।

हालांकि जब पूछा गया कि क्या कांग्रेस को समर्पित और निष्ठावान कार्यकर्ता नहीं मिल रहे हैं, आखिर इतनी देरी के पीछे वजह क्या है? इस पर प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि बहुत ऐसे नेता हैं जो पार्टी के प्रति समर्पित और निष्ठावान रहे हैं। समय आने पर सबका नाम आलाकमान को भेज दिया जाएगा।

ज्ञात हो कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश को प्रदेश कांग्रेस की कमान संभाले पांच महीने से अधिक हो गये है। इसके बावजूद वे अपना टीम नहीं बना पाये है। इसको लेकर कांग्रेस के निष्ठावान कार्यकर्ताओं और नेताओं में अंदर ही अंदर आक्रोश व्याप्त है। रविवार को नामकुम के रामपुर में प्रदेश कांग्रेस प्रभारी गुलाम अहमद मीर की मौजूदगी में पार्टी से जुड़े वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं की बैठक होनेवाली है। इस बैठक में प्रदेश कांग्रेस संगठन के गठन को लेकर भी आवाज उठ सकती है। हलाकि यह बैठक नगर निकाय चुनाव को लेकर होनेवाली है। बैठक में गांव की सरकार कैसे बने इसको लेकर नेताओं के बीच मंथन होगा।

खबर एक नजर में

राज्य सेवा की अफसर मेरी मड़की पर चलेगी विभागीय कार्यवाही

रांची। अड़की प्रखंड खूंटी में बीडीओ रही मेरी मड़की पर विभागीय कार्यवाही चलाने का फैसला लिया गया है। झारखंड प्रशासनिक सेवा के इस अधिकारी पर मनरेगा योजना अंतर्गत मिप्ती मोरम पथ निर्माण योजना में अनियमितता बरतने, बिना काम किए राशि भुगतान कर वित्तीय अनियमितता करने, फर्जी मस्टर रोल कराने, अभिलेखों को सही तरीके से संधारित नहीं करने एवं योजनाओं के पर्यवेक्षण नहीं करने आदि से संबंधित कई गंभीर आरोप थे। ग्रामीण विकास विभाग ने इन पर 26 जुलाई 2016 को ही आरोप पत्र तैयार कर कार्रवाई की अनुशंसा की। पूरे मामले पर उनसे स्पष्टीकरण कर मामले की समीक्षा कर मेरी मड़की के विरुद्ध संचयात्मक प्रभाव से तीन वेतन वृद्धि र रोक का दंड दिया गया था। विभाग के इस आदेश पर मेड़ी मड़की हाइकोर्ट गयी जहां से दंडात्मक आदेश को निरस्त किया गया और फ्रेश विभागीय कार्यवाही चलाने का आदेश दिया गया है। ऐसे में कोर्ट के आदेश के आलोक में मेरी मड़की पर नये सिरे से विभागीय कार्यवाही करने का फैसला लिया गया है। पूरे मामले की जांच के लिए विभागीय जांच पदाधिकारी सेवानिवृत्त आइएएस गणेश कुमार को नामित किया गया है। उक्त अधिकारी से 15 दिनों में लिखित बचाव बयान समर्पित करने को कहा गया है।

337 प्रतिभागियों को नियुक्ति पत्र दिया गया

रांची। पलाश जेएसएलपीएस रांची द्वारा जिला स्तरीय चतुर्थ जनजातीय गौरव दिवस एवं रोजगार मेला का आयोजन मोराहाबादी, रांची में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उप विकास आयुक्त रांची दिनेश यादव ने दीप प्रज्वलन कर किया। अपने संबोधन में उन्होंने सभी अभ्यर्थियों को रोजगार के साथ कौशल विकास का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति में प्रतिभा होती है, लेकिन अवसर की कमी से वे आगे नहीं बढ़ पाते इसलिए सभी को इस आयोजन का पूरा लाभ उठाना चाहिए। जिला कार्यक्रम प्रबंधक रांची, निशिकांत नीरज के द्वारा उपविकास आयुक्त दिनेश यादव, राज्य कार्यक्रम प्रबंधक हसनैन वारसी और सभी ब्लॉकों से आए 1500 प्रतिभागियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में 1,481 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया जिसमें 337 प्रतिभागियों को नियुक्ति पत्र दिया गया। संभावित प्रतिभागी करीब 250 में स्वरोजगार के लिए 186 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया।

प्रदेश कांग्रेस का बजट पूर्व एवं निकाय चुनाव को लेकर परिचर्चा आज

रांची। प्रदेश कांग्रेस द्वारा बजट पूर्व एवं आगामी निकाय चुनाव को लेकर परिचर्चा का आयोजन रविवार को दो पालियों में होगी। प्रथम पाली में पूर्वा? 11:00 से नामकुम बाजार स्थित लाह अनुसंधान केंद्र मे मंत्री, सांसद एवं विधायकों के साथ एवं पूर्वाहन 2:30 बजे से गेस्ट हाउस रामपुर मे कांग्रेस जिला अध्यक्ष,पूर्व विधायकों ,सांसदों के साथ परिचर्चा होगी।

विशेष लोक अदालत 22 फरवरी को

रांची। विवाह एवं चेक अनादरण संबंधित विशेष लोक अदालत के सफलता के लिए डालसा सचिव कमलेश बेहरा ने कोर्ट नोडल पुलिस पदाधिकारियों के साथ डालसा हॉल में बैठक की और उन्हें कई निर्देश भी दिये है। उन्होंने कहा कि आप सभी अधिक से अधिक नोटिस का तामिला लोगों को करावें ताकि आगामी विशेष लोक अदालत में अधिक से अधिक वादों का निस्तारण किया जा सके।

शपथ पत्र

समक्ष,
नोटरी पब्लिक
डालटनगंज पलामू।

मैं अजय कुमार ठाकुर पिता स्व. नंदकिशोर ठाकुर निवासी ग्राम+पोस्ट सुआ, थाना- मेदिनीनगर सदर जिला - पलामू झारखंड शपथ पूर्वक एकरार करता हू कि -

1. यह कि मैं उपरोक्त नाम वो पते का निवासी हूं।
2. यह कि मैं भारतीय नागरिक हूं।
3. यह कि गुण निधि कुमार मेरा पुत्र है जिसका नाम गुण निधि कुमार है परंतु मैं अपने पुत्र का नाम बदलकर शनि कुमार ठाकुर रख लिया हूं।
4. यह कि आज की तिथि से मेरा पुत्र गुण निधि कुमार शनि कुमार ठाकुर के नाम से जाना वो पहचाना जायेगा।
5. यह कि शपथ पत्र मैं अपना पुत्र का वर्तमान नाम शनि कुमार ठाकुर होने को सत्यापित करने हेतू कर रहा हूं।

अजय कुमार ठाकुर
शपथ कर्ता

Book No.-IX- No.54
Date : 31.01.2025

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव से मिले बंधु तिर्की

रांची। झारखंड कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने पार्टी महासचिव के सी वेणुगोपाल से दिल्ली में मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान संगठन के काम_ काज और संगठन के विस्तार को लेकर चर्चा हुई । झारखंड में कांग्रेस का लगातार सफल कार्यक्रम चल रहा है। इसमें आम जनता की बड़ी गोलबंदी देखने को मिल रही है। झारखंड में आने वाले दिनों में संगठन की मजबूती और उसके विस्तार के लिए रणनीति तैयार की जा रही है। बंधु तिर्की ने बताया कि गठबंधन वाली सरकार की योजनाओं से हर दिन लाभुकों की संख्या में इजाफा हो रहा है। ग्रामीण इलाकों में सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को पहुंचाने में संगठन के कार्यकताओं की बड़ी भूमिका है। संगठन को इस दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

झामुमो इटकी और नगड़ी प्रखंड संयोजक मंडली का हुआ गठन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झामुमो केंद्रीय नेतृत्व के निदेर्शानुसार रांची जिला संयोजक मंडली का प्रखंडों मे दौरा सह सदस्यता अभियान कार्यक्रम के क्रम में शनिवार को इटकी प्रखंड की बैठक त्रिविंधा चौक स्थित मदीना मैरेज हॉल मे और नगड़ी प्रखंड की बैठक कोयल होटल, नगड़ी मे झामुमो रांची जिला संयोजक प्रमुख मुस्ताक आलम की अध्यक्षता मे संपन्न हुई।

बैठक में पार्टी द्वारा राज्य मे 50 लाख नए सदस्य बनाने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए सदस्यता अभियान को और गति देने पर चर्चा हुई। बैठक मे प्रखंड और पंचायतों से हजारों की संख्या मे कार्यकर्ता शामिल हुए। बैठक का संचालन रांची जिला संयोजक मंडली सदस्य डॉ हेमलाल मेहता ने किया।

बैठक मे झामुमो रांची जिला संयोजक मंडली ने सर्वसम्मति से प्रखंड स्तरीय संयोजक मंडली का गठन किया। झामुमो इटकी प्रखंड संयोजक प्रमुख वसीम इकबाल अंसारी एवं नगड़ी प्रखंड संयोजक प्रमुख कलाम आजाद को बनाया गया। इस बैठक मे मुख्य रूप से संयोजक मंडली सदस्य पवन जेडीया, अश्विनी शर्मा, डॉ हेमलाल मेहता, बीरू तिर्की, धर्मेंद्र सिंह, नयनतारा उरांव, जयवंत तिग्गा, झब्बूलाल महतो, संध्या गुड़िया, सोनू मुंडा, और केंद्रीय सदस्य समनूर मंसूरी, एवं कलाम आजाद, मुन्ना बड़ाइक, महावीर विश्वकर्मा, संजय राय, आफताब आलम, आदिल इमाम, सुजीत कुजूर, परवेज आलम, जावेद अख्तर अंसारी, मांडर प्रखंड संयोजक प्रमुख रौशन एनामुल तिग्गा, भुनेश्वर साहू, मो इरफान, राजेश सिंह, मोजाहिद हुसैन, गोपाल पांडेय, अनूप कुमार, राकेश, अतिकुर रहमान, सुनीता देवी, मोजाहिद, हसनैन मुजीबी, सुधांशु भगत, लाडले खान, लक्ष्मण राम, ललित लिंडा, राजकुमारी टोपनो, जिक्रुल्लाह अंसारी एवं अन्य शामिल हुए।

इन्हें बनाया गया संयोजक सदस्य : इटकी प्रखंड संयोजक सदस्य सुमित मिंज, शमीम अंसारी, नौशाद आलम, शीला मिंज, रफीक अंसारी, रफीक कुरैशी, सोमरा उरांव, मंगल, फिरोज मंसूरी, मनीर अंसारी, आशिक अंसारी, जबैर अंसारी, रॉयल तिर्की, बिमल सुभाष कुजूर, महादेव धान, समीर अंसारी, अमृत सिंह, कमल यादव, रेहान खान, इमरान अहमद, जमाहिर अंसारी, इकराम कुरैशी, मन्नान अंसारी, अयान मुस्तफा, अबुबकर सिद्दकी एवं नगड़ी प्रखंड संयोजक सदस्य बांदे उरांव, विनोद तिर्की, बिंदे उरांव, सुरेश महतो, तसलीम अंसारी, राजेंद्र महतो, दानिएल एक्का, जुबेदा खातून, परवन नायक, अशोक ठाकुर, बिरसा मुंडा, अजिमा बरवा, राखी देवी, सोमारी देवी, नीलम देवी, बसंती देवी, धुंचू तिर्की, संगीता टोप्पो, जिवानी खलखो, मनीषा लिंडा, धनेश्वर नायक, अख्तर अंसारी, अंशु लकड़ा, सुकरमणि देवी, कविता कच्छप, बिरसा लोहार को बनाया गया। साथ ही निर्देश दिया गया कि नवगठित प्रखंड संयोजक मंडल पंचायतों का गठन केंद्रीय नेतृत्व द्वारा तय समय सीमा मे कर जिला संयोजक मंडली को सूचित करेंगे।

भाकपा के पदाधिकारियों ने कांग्रेस का दामन थामा

रांची। प्रदेश कांग्रेंस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश की उपस्थिति में आयोजित एक समारोह में शनिवार को ईश्वर आनंद और मनोज सहाय उर्फ पिंकू के अगुवाई में कोडरमा जिला भाकपा के सम्मानित पदाधिकारीगण ने कांग्रेस का दामन थामा। जिला मंत्री एवं भाकपा राज्य परिषद सदस्य प्रकाश रजक, कउम उद्दीन, रामेश्वर यादव, प्रदीप राज जिला परिषद सदस्य, सुखदेव पांडे, असगर अली जिला परिषद सदस्य, सुनील शर्मा, मोहम्मद शमसुद्दीन, सोनु दास, रफीक मियां, राहुल दास व अन्य साथियों को प्रदेश अध्यक्ष के साथ कार्यालय प्रभारी अभिलाष साहू और सह प्रभारी राजन वर्मा ने कांग्रेस का पप्ता पहनाकर सदस्यता ग्रहण करवाया। इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिका अर्जुन खड़गे एवं नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के संविधान के रक्षा के आह्वान पर देश में गांधी एवं अंबेडकर के विचारधारा के लोग कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं जिनका हम स्वागत करते हैं। आज सत्ताधारी दल ही संविधान का मखौल बना रहे हैं ।

कार्यालय, झुमरी तिलैया नगर परिषद्
झुमरी तिलैया, जिला कोडरमा
Email-jhumritelaiyamunicipalcouncil@gmail.com

झुमरी तिलैया नगर परिषद् गणतंत्र दिवस, 2025 के अवसर पर सभी नगरवासियों को हार्दिक बधाई देते हुए यह अपील करती है कि:-

* शहर को साफ एवं स्वच्छ रखने में सहयोग करें एवं हेल्प लाईन (मोबाईल) नं० 89876 58581 पर साफ-सफाई व अन्य विषयों पर शिकायत दर्ज करवाये।
* सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करें।
* नियमित रूप से होल्डिंग टैक्स (Holding Tax), वाटर यूजर चार्ज (Water User Charge) सहित अन्य करों का भुगतान करें एवं जिम्मेदार नागरिक होने का परिचय दें।
* व्यवसायिक प्रतिष्ठान संचालक ट्रेड़ अनुज्ञप्ति (Trade Licence) आवश्यक लें, साथ ही ससमय नवीनीकरण करावायें।
* शहर में सभी प्रकार के विज्ञापन प्रदर्शित करने के पूर्व नगर परिषद् से अनुमति लेना अनिवार्य हैं
* धर्मशाला, विवाह भवन/बैंक्वेट हॉल, लॉज, हॉस्टल संचालक नगर परिषद् से अनुज्ञप्ति (Licence) लें, साथ ही ससमय नवीनीकरण करावायें।

सफाई अपनाओ डिबीमारी भगाओ

प्रशासक
झुमरी तिलैया नगर परिषद्

ज्ञापांक 4071/ दिनांक 24/07/2025

डीएसपीएमयू में नियमित प्रॉक्टोरियल बोर्ड गठित

रांची। विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या को ध्यान में रखते हुए संस्थान में अनुशासन, नियमों के अनुपालन और विद्यार्थियों से संबंधित विभिन्न मुद्दों के लिए कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य के निदेर्शानुसार एक नियमित प्रॉक्टोरियल बोर्ड का गठन किया गया है। यह बोर्ड नियमित तौर पर इन विद्यार्थियों के मध्य अनुशासन संबंधित नियमों के अनुपालन के लिए प्रतिबद्ध रहेगा। इसके तहत संदर्भित विषय के लिए सामाजिक संकाय, मानविकी संकाय और विज्ञान संकाय से निम्नलिखित शिक्षकों के सहयोग से एक प्रॉक्टोरियल बोर्ड के गठन से संबंधित अधिसूचना कुलपति के आदेशानुसार जारी कर दी गई हैं।

आदेश का अनुपालन करें या फिर हाई कोर्ट में हाजिर हो निदेशक डीओएसई एंड एल

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। राज्य सरकार के विभिन्न स्कूलों में वोकेशनल इंस्ट्रक्टर पद पर बहाल हुए हुए कर्मियों के ग्रेड पे से संबंधित अवमानना याचिका की सुनवाई झारखंड हाईकोर्ट में हुई। मामले में राज्य सरकार को निर्देश दिया गया कि कोर्ट के 11 अगस्त 2023 के आदेश का अनुपालन करें अन्यथा निदेशक, माध्यमिक स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग (डीओएसई एंड एल) को अगली सुनवाई 7 फरवरी को कोर्ट में सशरीर उपस्थित हो। कोर्ट ने निर्देशक माध्यमिक शिक्षा को यह बताने को कहा गया है कि कोर्ट के आदेश का अनुपालन नहीं करने पर क्यों नहीं अवमानना के तहत उनके खिलाफ आरोप गठित किया जाए।

दरअसल, वर्ष 1993 में प्रार्थियों सुजीत कुमार एवं अन्य ने राज्य सरकार के विभिन्न स्कूलों में वोकेशनल एजुकेशन इंस्ट्रक्टर के पद पर नियुक्ति पाई थी। बाद में केंद्र सरकार के एक अधिसूचना के तहत उनका ग्रेड पे 4800 रुपए कर दिया गया था। केंद्र सरकार की इस अधिसूचना में यह कहा गया था कि अगर वह (इंस्ट्रक्टर) आहर्ता रखते हैं तो शिक्षकों के समान ही उनका भी ग्रेड पे होगा। लेकिन सरकार द्वारा उनका ग्रेड पे घटा कर फिर से 4200 रुपए कर दिया गया था। मामला कोर्ट में पहुंचने पर कोर्ट ने प्रार्थियों के पक्ष में फैसला सुनाया था, जिसके खिलाफ राज्य सरकार ने हाई कोर्ट में अपील (एलपीए) दाखिल की थी लेकिन राज्य सरकार की अपील हाई कोर्ट से खारिज हो गई थी। अवमानना याचिका में प्रार्थियों ने कोर्ट के 11 अगस्त 2023 के आदेश का अनुपालन करने का निर्देश देने का आग्रह किया था। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से कहा गया था कि इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में एसएलपी दाखिल की गई है, जो अभी लंबित है। जिस पर कोर्ट ने कहा कि हाई कोर्ट की एकल पीठ एवं खंडपीठ दोनों जगह प्रार्थियों के पक्ष में फैसला आया है, इसलिए कोर्ट के आदेश का अनुपालन किया जाए। अन्यथा माध्यमिक शिक्षा निदेशक कोर्ट में सशरीर उपस्थित हो।

प्रार्थी को पेंशन से काटे गए राशि का भुगतान करें अन्यथा स्वास्थ्य सचिव हाईकोर्ट में 7 को हाजिर हो

रांची। हजारीबाग के तत्कालीन सिविल सर्जन के पेंशन में से 20% राशि 3 साल के लिए काटे जाने के मामले में दायर अवमानना याचिका की सुनवाई झारखंड हाईकोर्ट में हुई। कोर्ट ने सरकार को निर्देश दिया कि अगली सुनवाई 7 फरवरी को या तो कोर्ट के आदेश का अनुपालन करते हुए प्रार्थी को उसके पेंशन से काटे गए राशि का भुगतान करें अन्यथा स्वास्थ्य सचिव सशरीर अदालत में उपस्थित हो। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता दीपक कुमार प्रसाद ने पैरवी की। दरअसल, प्रार्थी डॉक्टर दीनानाथ पांडे के हजारीबाग सिविल सर्जन रहने के दौरान समान आपूर्ति का सुपरवाइज सही ढंग से नहीं करने को लेकर राज्य सरकार की ओर से 3 साल के लिए उनके पेंशन से 20% की राशि काटने का आदेश दिया गया था। हाई कोर्ट की एकल पीठ ने प्रार्थी को राहत देते हुए सरकार के आदेश को निरस्त कर दिया था। वहीं खंडपीठ में भी प्रार्थी को राहत मिली थी और सरकार की अपील खारिज हो गई थी। कोर्ट ने सरकार पर 10 हजार रुपए का जुमार्ना भी लगाया था एवं उस जुमार्ना राशि को प्रार्थी को देने को कहा था। इसके बाद भी कोर्ट के आदेश का अनुपालन नहीं हुआ। सरकार की ओर से कहा गया कि वह इस मामले में सुप्रीम कोर्ट जाएगी। जिस पर कोर्ट ने कहा कि सरकार कोर्ट के आदेश का अनुपालन अगली सुनवाई में सुनिि्त करें।

**NETARHAT RESIDENTIAL SCHOOL
NETARHAT**
(An autonomous Institution under School Education & Literacy Dept. Govt. of Jharkhand)
E-mail:principal.netarhat@gmail.com, Website:www.netarhatvidyalaya.in

Re Tender No. - 166 | Dated -01-02-2025

Expression of interest : Borewell Drilling for Supply of Drinking Water to 4th grade Quarter at Netarhat Vidyalaya.

Netarhat Vidyalaya , the state government's premier senior secondary school located on a beautiful Netarhat plateau, nearly 160 Km from Ranchi, is widely known for imparting quality education and all around development of the Students Since last 70 years. This school, a residential one, has since been granted autonomy and is being administered by 'Netarhat Vidyalaya Samiti' a society registered under the societies Registration Act, 1860. However, state government's budgetary support to it continues as before.
Netarhat Vidyalaya now proposes to Select relevant Contractors having experience for Borewell Drilling for Supply of Drinking Water to 4th grade Quarter at Netarhat Vidyalaya, Netarhat. EOI are invited from reputed Firm/Agencies/ Individuals etc in respect of the subject matter cited above which shall be in the shape of two bid system – Technical and Financial – to be presented in two separate sealed envelopes by 2.00pm Before 15th February, 2025. Tender cost is Rs. 2000/- Online Which has to be paid through Our School website i.e www.netarhatvidyalaya.com.
The following documents need to be submitted along with the tender:-
Technical Bid: (i) PAN Card (ii) GST Registration Paper (iii) GST Return Certificate (iv) Last three year (21-22, 22-23, 23-24) Income Tax Return (v) Experience certificate in the relevant field.
Financial Bid: Best comparative industry rate in the standard format.

Sd/-
Principal
Netarhat Residential School
- Cum Member Secretary
Netarhat Vidalaya Samiti,

PR 345625 Human Resource Developement(24-25).D

धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

सुप्रभात
रांची, रविवार
02.02.2025
नगर संस्करण। पेज : 12

खबर मन्त्र

khabarmantralive.com
रांची और धनबाद से एक साथ प्रकाशित
सबकी बात सबके साथ

khabarmantra.net
माघ, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी, संवत् 2081
मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 12 । अंक : 202

12 शहरी गरीबों पर भी बरसेगी लक्ष्मी

विकसित भारत के लक्ष्य पर केंद्रित है बजट : चैंबर अध्यक्ष

रांची। आम बजट का प्रसारण देखने–सुनने की व्यवस्था चैंबर भवन में की गई थी। इस दौरान व्यापार, उद्योग और प्रोफेशनल्स जगत ने बजट का प्रसारण देखा। आम बजट पर चैंबर सदस्यों की प्रतिक्रिया।

विकसित भारत के लक्ष्य पर केंद्रित बजट है। उद्यमिता से लेकर आम लोगों तक का ख्याल सरकार ने रखा है। एमएसएमई को क्रेडिट गारंटी कवर पर बडी राहत की घोषणा की गई है। इससे सूक्ष्म एवं छोटे उद्यमियों को अगले पांच साल में 1.5 लाख करोड रू0 अतिरिक्त कर्ज उपलब्ध होगा। 12 लाख रू तक की आय पर जीरो टैक्स, 100 से अधिक आयकर अधिनियम को डि-क्रिमनलाइज किया जाना स्वागतयोग्य है। बजट में टेक्सटाइल सेक्टर का प्रोत्साहन, फूटवियर और लेदर क्षेत्र के लिए सहायता, मेक इन इंडिया को बढावा देने का उल्लेख है। भारत को खिलौनों का केंद्र बनाने की योजना भी सरकार ने बताई है। कलस्टर का विकास होने से खिलौना उद्योग को बढावा मिलेगा। यह कदम आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत स्थानीय कारीगरों और छोटे उद्योगों को भी लाभ पहुंचायेगा।

परेश गट्टानी, अध्यक्ष, झारखण्ड चैंबर

वित्त मंत्री द्वारा प्रस्तुत बजट में एक बार फिर झारखंड की उपेक्षा साफ दिखती है। झारखंड, जो खनिज संपदा से भरपूर है, उसके लिए कोई ठोस औद्योगिक नीति नहीं लाई गई। यहां के खनिज संसाधनों का उपयोग कर नए उद्योग स्थापित करने की दिशा में सरकार ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया। इसके अलावा, झारखंड पूर्वी भारत का प्रवेश द्वार होने के साथ-साथ अपनी अद्भुत जैव विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य के कारण एक बेहतरीन पर्यटन स्थल बन सकता है, जिससे राष्ट्रीय जीडीपी में बड़ा योगदान हो सकता था। लेकिन बजट में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कोई विशेष नीति नहीं बनाई गई। व्यक्तिगत कर स्लैब में बदलाव की जरूरत थी क्योंकि महंगाई दर काफी अधिक है, ऐसे में वित्त मंत्री के पास इसे बदलने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था। कुल मिलाकर, झारखंड को इस बजट से फिर से सौतेला व्यवहार झेलना पड़ा है।

राहुल साबू उपाध्यक्ष झारखण्ड चैंबर

बजट 2025 भारत के औद्योगिक और लॉजिस्टिक्स क्षेत्रों में बड़े बदलावों की रूपरेखा तैयार करता है, जिसका उद्देश्य विनिर्माण, भंडारण और आपूर्ति श्रृंखलाओं को बदलना है। पीएम गति शक्ति और भारत ट्रेड नेट जैसी प्रमुख परियोजनाएं निवेश को बढ़ावा देंगी, दक्षता बढ़ाएंगी और लॉजिस्टिक्स लागत कम करेंगी। मोबाइल फोन और मोबाइल बैट्री सस्ता करने की भी घोषणा की गई है। सरकार के 10,000 करोड़ रुपये के योगदान से स्टार्टअप्स के लिए फंड की भी व्यवस्था की जाएगी। इसके तहत सरकार पहली बार 5 लाख महिलाएं, एससी और एसटी उद्यमियों के लिए 2 करोड़ रुपये का लोन भी देगी।

ज्योति ,उपाध्यक्ष

एमएसएमई के लिए लोन गारंटी लिमिट बढाना, सोषल वेलफेयर सरचार्ज हटाने का प्रस्ताव स्वागतयोग्य है। इससे व्यापारियों को बडी राहत मिलेगी। ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर टियर 2 शहरों में स्थापित किये जाने से नये निवेष और रोजगार के अवसर बनेंगे। बजट के माध्यम से पूर्वी भारत के डेवलपमेंट पर ध्यान दिया गया है। एमएसएमई सेक्टर को आसान लोन मिलने, लेदर स्कीम से रोजगार बढने और खिलौना उद्योग को प्रमोट करने से देष के व्यापारिक परिदृष्य में सुधार होगा।

आदित्य मल्होत्रा, महासचिव, झारखण्ड चैंबर

झारखंड की उम्मीदों के विपरीत है बजट : दयाल

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। केंद्रीय बजट को जानेमाने अर्थशास्त्री हरिश्वर दयाल ने झारखंड की उम्मीदों के विपरीत बताया है। उन्होंने कहा कि बिहार को जितना मिला है उस संदर्भ में झारखंड को थोड़ी मायूसी है। झारखंड को भी काफी उम्मीद थी जो इस राज्य को वह नहीं मिला है। अर्थशास्त्री ने कहा कि अन्य राज्यों को कुछ समय से केंद्र सरकार से दो तरह से सपोर्ट मिलता है। केंद्रीय करों में राज्य का जो अंशदान होता है और दूसरा ग्रांड्स इन ऐड का पैसा मिलता है। ऐसा नहीं है कि दोनों पर राज्य का हक होता है वह कांस्टीट्यूशनल प्रोविजन है जिसके तहत राज्यों को मिलना है और यह है कि सभी राज्यों में के बीच में बराबरी होनी

चाहिए। यह इक्विटी कंसीडरेशन के कारण होता है।

उन्होंने कहा कि नीड एंड इक्विटी कंसीड्रेशन की वजह से हम लोग उम्मीद करते हैं कि हम लोगों को इसमें अच्छा शेयर मिलना चाहिए ताकि हम भी विकसित राज्यों के बराबर आ सकें। लेकिन कुछ समय से डिवोल्यूशन का जो केंद्रीय करों में राज्य का जो हिस्सा है यानी झारखंड का जो हिस्सा है उसमें थोड़ी धीमी गति से वृद्धि हुई है और जो ग्रांड्स इन ऐड है उसमें तो कमी आयी है। ऐसा समझा जा रहा था कि इस बजट में जो ग्रांड्स इन ऐड जो कम हो गए हैं या बंद हो गये हैं उसको फिर से रिस्टोर किया जायेगा वह नहीं दिखा है।

मध्यमवर्ग का रखा खयाल-

अर्थशास्त्री हरिश्वर दयाल का मानना है कि इस बार के बजट में मध्यम वर्गीय लोगों का खास ख्याल रखा गया है। उन्होंने कहा कि कुछ साल से मध्यम वर्ग अपने आपको अनदेखा महसूस कर रहा था खास करके वह लोग जिनकी कम सैलेरी इनकम ग्रुप है या मिडिल इनकम ग्रुप है या लो इनकम ग्रुप है उनके करों में राहत मिला है। उनका मानना है कि बजट में करों को सिंपलीफाई किया गया है, दर को रेशनलाइज किया गया है सिर्फ इनकम टैक्स को नहीं अन्य करों को भी किया गया है।

बेटियों को उड़ान भरते देखना चाहती है हेमंत सरकार

75 % उपस्थिति पर मिलेगा 1-1 हजार

सुधीर

रांची। हेमंत सोरेन सरकार फेज-3 में जनता की बल्ले-बल्ले है। मंइयां के बाद अब छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। राज्य सरकार ने विवि और कॉलेजों में पढ़ने वाली छात्राओं के लिए एक बड़ी घोषणा की है। 75 प्रतिशत उपस्थिति दर्ज करनेवाली छात्राओं को हर माह 1-1 हजार रुपये का यात्रा भत्ता दिया जायेगा। यह लाभ उन छात्राओं को भी मिलेगा, जो मंईयां सम्मान योजना का लाभ ले रही हैं। महंगाई के कारण मीडिल क्लास की बेटियां कॉलेज की पढ़ाई से वंचित रह जाती हैं। बस-ऑटो किराया को लेकर उनकी आागे की पढ़ाई में बाधा आ जाती है। नतीजा पढ़नेवाली बेटियों को भी चूल्हा-चौकी संभलने में लगना पड़ता है। मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने कहा कि छात्राओं को उच्च शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह यात्रा भत्ता दिया जायेगा। इससे छात्राओं में उच्च शिक्षा के प्रति रूची जगेगी। वे आगे की पढ़ाई जारी रख सकेंगी। इसके साथ ही सरकार विवि में रिसर्च और स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए नीति लागू करने की तैयारी कर रही है। 10 फरवरी को छह पोर्टल की लॉन्चिंग की जाएगी।

खबर | बजट पर पूर्व सीएम का बयान

सशक्तिकरण की दिशा में बड़ा कदम: बाबूलाल

रांची। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा है कि पीएम मोदी के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने मध्यम वर्ग को बड़ी राहत दी है। अब 12 लाख तक की आय पर कोई टैक्स नहीं। देश के अन्नदाताओं के लिए सुनहरी शुरूआत की गई है। प्रधानमंत्री धन–धन्य कृषि योजना से कम उत्पादक जिलों में सुधार और 1।7 करोड़ किसानों को सीधा लाभ मिलेगा। किसान क्रेडिट कार्ड की ऋण सीमा 3 लाख से बढ़कर 5 लाख की गई है। मछुआरे और डेयरी किसान लाभांवित होंगे। शहर के श्रमिकों को हक मिलेगा। अब ई–श्रम पोर्टल और प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के जरिए स्वास्थ्य सुविधाएं और आर्थिक स्थिरता मिलेगी। एक करोड़ श्रमिकों को सीधा फायदा होगा।

बजट में जनता के हितों का ध्यान रखा गया: मुंडा

रांची। पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश की प्रगति की सराहना की। उन्होंने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत केंद्रीय बजट को भी सराहनीय बताया। मुंडा ने कहा कि यह बजट देश की आम जनता को ध्यान में रखकर बनाया गया है। उन्होंने बताया कि इस बजट से सभी वर्गों को लाभ मिलेगा। बजट में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन और रोजगार को प्राथमिकता दी गई है, जबकि गंभीर बीमारी के लिए उपयोगी दवा पर रियायत भी की गयी।

बजट विकासवादी और प्रगतिशील : रघुवर दास

रांची। पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने केंद्रीय बजट 2025 पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह बजट विकासवादी और प्रगतिशील है। कहा कि बजट में कर सुधारों के माध्यम से मध्यम वर्ग को बड़ी राहत प्रदान की गई है। नए कर ढांचे के तहत 12 लाख तक की आय पर कोई कर नहीं लगेगा। बजट में कृषि क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने पर जोर दिया गया है। प्रधानमंत्री धन–धान्य योजना से देश के करीब 1।7 करोड़ किसानों को मदद मिलेगी।

मोदी सरकार की दूरदर्शिता का ब्लूप्रिंट है बजट: चंपाई

रांची। पूर्व सीएम चंपाई सोरेन ने बजट पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। कहा है कि यह सर्वांगीण, सर्वस्पर्शी और समावेशी बजट आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में केंद्र की मोदी सरकार की दूरदर्शिता का ब्लूप्रिंट है। यह बजट गरीबों, मजदूरों, किसानों, महिलाओं, छात्रों व आम लोगों के जीवन–स्तर को बेहतर बनाने का प्रयास करेगा। इसमें किसानों तथा छोटे कारोबारियों की आय बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। इनकम टैक्स पर मिली राहत मिडिल क्लास के लिए एक तोहफा है। कैंसर समेत अन्य जीवनरक्षक दवाइयों तथा मेडिकल उपकरणों की कीमतों में कमी का फैसला सराहनीय है। पीएम रिसर्च फेलोशिप तथा आईआईटी एवं नीट में बढ़ रही सीटों से देश में कुशल इंजीनियरों/डॉक्टरों की संख्या बढ़ेगी।

ADVT.

कैंब्रियन पब्लिक स्कूल में एनुअल स्पोर्ट्स मीट का आयोजन

संकल्पों की सिद्धि का जज्बा, सामंजस्य और समन्वय दिखा जूबिलेशन-2025 में

जूबिलेशन -2025 में संकल्पों को सिद्ध करने की प्रेरणा, आपसी सहयोग और परस्पर सामंजस्य का जज्बा दिखा। बच्चों ने फिटनेस,स्वस्थ जीवन और टीमवर्क पर आधारित कई आकर्षक प्रस्तुतियां दी। पीयूष मिश्रा रचित आरंभ है प्रचंड शौर्य गीत के माध्यम से बच्चों ने शारीरिक सुरक्षा के महत्व को दर्शाया। बच्चों ने शरीर और मन को स्वस्थ रखने वाले विभिन्न योग मुद्राओं का प्रदर्शन किया। गंगा आरती के माध्यम से भारतीय संस्कृति में नदियों के महत्व और पर्यावरण जागरूकता की भावना को मनमोहक ढंग से प्रस्तुत किया गया। आत्मसुरक्षा के लिए जूडो और कराटे के दावों की अद्भुत प्रस्तुति दी। बच्चों ने लयबद्ध तरीके से ड्रिल और लेजियम प्रस्तुत किया। इसके अलावा सौ मीटर ,दो सौ मीटर और चार सौ मीटर रेस तथा रिले रेस जैसी प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया गया। कमांडर मनीष कुमार के नेतृत्व में प्रस्तुत बैंड डिस्प्ले कार्यक्रम ने उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।

कैंब्रियन टूप के मार्च पास्ट का नेतृत्व शैलेश अनीम टेकन और अनामिका सिंह ने किया। मार्च पास्ट में गंगा हाउस को चैंपियन जबकि सतलज हाउस को ओवर ऑल चैंपियन घोषित किया गया। व्यक्तिगत स्पर्धाओं के लिए विभिन्न आयु वर्ग के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। दीपक मुंडा को स्टूडेंट ऑफ द ईयर, हेडबॉय अनमोल राज को बेस्ट रोल प्लेयर के खिताब से नवाजा गया। सोनाली कुमारी को एकेडमिक और रीमा कुमारी को-कोकरिकुलर एक्टिविटी में अच्छे प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत किया गया। मानिया राजवंशी को बेस्ट एनसीसी कैडेट के खिताब से नवाजा गया। ईशान सिंह, मान्या गुप्ता, अदिति स्नेह, अद्रिका बनर्जी, रूप मलिक, कुमारी मीनाक्षी, सोनू कुमारी और मोनू कुमारी को जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बेस्ट अचीवर्स अवार्ड प्रदान किया गया। जूबिलेशन-2025 का शुभंकर ' द हॉक ' है। यह एक बाज है जो तेज उड़ान ,तेज नजर और तेज दिमाग का प्रतीक है। यह शुभंकर हर विषम परिस्थिति में जूझने की प्रेरणा देता है। कार्यक्रम का सूत्रवाक्य 'चैंपियंस इन द मेकिंग' नई पीढ़ी को देश और दुनिया में अपनी पहचान स्थापित करने का संदेश देता है।

जूबिलेशन- 2025 के सफल आयोजन पर विद्यालय के संस्थापक श्री पंचम सिंह ने सभी को बधाई दी। मौके पर भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य एवम वरिष्ठ पत्रकार श्री विनय कुमार, रामगढ़ के जिला खेल पदाधिकारी सह पर्यटन, कला एवं संस्कृति के

नोडल अधिकारी श्री मार्कस हेम्ब्रोम, श्रीमती आनंदमयी सिंह, श्री जयवर्धन ठाकुर, श्री हरिनंदन शर्मा एवं आर एस मीडिया के डॉ. पंकज कुमार सिंह बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद थे। कार्यक्रमों का संयोजन उप प्राचार्या प्रेमलता कुमारी, एक्टिविटी कोऑर्डिनेटर मोनिका कुमारी और रौनक कुमार सिंह जबकि संचालन डॉ. अभय नाथ मिश्र, विनीत कौर और वाणी आनंद तथा छात्रों श्रीजा चौधरी, आशना सामान और आदित्य कुमार ने किया कार्यक्रम के अंत में उप प्राचार्या प्रेमलता कुमारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में काफी संख्या के छात्र एवम अभिभावक शामिल हुए।

विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास विद्यालय को अलग पहचान देती है: राजेश कुमार शर्मा

'चैंपियंस इन द मेकिंग' के सूत्र वाक्य को साकार करने के जज्बे के साथ शनिवार को कांके रोड स्थित कैंब्रियन पब्लिक स्कूल में एनुअल स्पोर्ट्स मीट जूबिलेशन-2025 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि झारखंड सरकार में आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव श्री राजेश कुमार शर्मा ने किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि किसी भी विद्यालय की पहचान उसके विद्यार्थियों के द्वारा प्राप्त अंकों से ही नहीं , बल्कि उनके सर्वांगीण विकास के लिए किए गए प्रयासों और परिणामों से होती है। उन्होंने कहा कि कक्षा में पढ़ाए जानेवाले पाठ्यक्रमों के अलावा खेल के मैदान में प्राप्त शिक्षा और अनुभव विद्यार्थियों को जीवन भर काम आता है। उन्होंने कहा कि खेल में हार जीत का होना तय है लेकिन यह कई संभावनाओं का द्वार खोलता है।

विद्यालय के चेयरमैन **श्री विशाल कुमार सिंह** ने अपने ऑनलाइन संबोधन में कहा कि विद्यार्थियों को केवल पुस्तकीय ज्ञान देना हमारा उद्देश्य नहीं,बल्कि उनमें अंतर्निहित संभावनाओं को प्रकटीकरण का अवसर प्रदान करना भी हमारा संकल्प है। उन्होंने कहा कि ज्ञानान्वेषी, संवादपरक और व्यावहारिक शिक्षा देना हमारा उद्देश्य है, ताकि वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकें। उन्होंने कहा कि कैंब्रियन पब्लिक स्कूल, कांके रोड बच्चों को हर संभव बुनियादी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तत्पर है।

विद्यालय प्रबंधन के सचिव **श्री कुणाल कुमार सिंह** ने कहा कि खेलकूद और योग का अभ्यास बच्चों की बौद्धिक क्षमता को कारगर तरीके से इस्तेमाल करने की चेतना जागृत करता है। यह भाषा ,संस्कृति ,रंग और भौगोलिक सीमाओं सहित तमाम विभेदकारी कारकों के बावजूद सामाजिक सामंजस्य का एक प्रमुख वाहक है। उन्होंने कहा कि खेल मनुष्य के शारीरिक और मानसिक विकास के साथ-साथ आत्म नियंत्रण , आत्मानुशासन और सहयोग की भावना को भी विकसित करता है। उन्होंने कहा कि कैंब्रियन पब्लिक स्कूल सर्वांगीण और जमीनी स्तर पर विकास का आग्रही होने के कारण बच्चों को चरित्र निर्माण, स्वावलंबन, सहकारिता, सहचर्य और नागरिक जीवन के आदर्शों के अनुपालन की शिक्षा देता है।

प्राचार्या **डॉ. नीता पांडेय** ने अतिथियों का स्वागत एवम विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि पिछले तीन दशकों के कालखंड में विद्यालय के द्वारा बच्चों को नियमित पाठ्यक्रम के साथ साथ सहचर्य, नेतृत्व क्षमता,और सकारात्मकता की भावनाओं को पोषित और पल्लवित किया गया है जिससे उन्हें देश -विदेश में एक अलग पहचान मिली है। उन्होंने कहा कि विगत कुछ वर्षों में कैंब्रियन पब्लिक स्कूल ने गुणात्मक और समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में एक नया प्रतिमान स्थापित किया है।

उपप्राचार्या **श्रीमती प्रेमलता कुमारी** ने अतिथियों का परिचय कराया। उन्होंने विद्यार्थियों के समग्र और निरंतर विकास में स्कूल की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगे कहा, 'एक अच्छा स्कूल विद्यार्थियों को एक सुरक्षित, सहायक, और प्रेरक वातावरण प्रदान करता है, जहां वे अपनी पूरी क्षमता को विकसित कर सकते हैं।"

Basant Panchami
Grand Launching
of
Our New Project
RMC APPROVED
2nd Feb. 2025
SUMITRA ENCLAVE
G+4 Luxurious 2/3 BHK Apartment

Amenities:
• Temple
• Children park area
• Roof Top Party Lounge
• Spacious Lobbies With Falls Ceiling

Near By:
• Lalpur 2.3 km.
• Women's College 3.5 km.
• Railway Station 4.8 km.
• BIT Extension College 2 km.
• Orchid Hospital 2.5 km.
• Bus Stand 2.9 km.

RADHE SHRI PROJECTS & SERVICES LLP
Site Address:- 261, B2/5, Tiril Rd, Sundar Vihar Colony, Kokar, Ranchi, Jharkhand
Office Address: - 1st Floor, Ranjit Avenue, Before Gurunanak School, P P Compound ,Ranchi
Contact:- +91 93152 19929, +91 92793 69958, +91 91537 15719, +91 95254 70205.

केंद्रीय बजट पर झारखंड की राजनीति में उबाल

झामुमो और कांग्रेस ने झारखंड की उपेक्षा का लगाया आरोप

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा शनिवार को केंद्रीय बजट पेश किए जाने के बाद झारखंड की राजनीति गरमा गई है। केंद्रीय बजट में झारखंड की अनदेखी करने और चुनावी साल होने के कारण पड़ोसी राज्य बिहार के लिए पिटारा खोलने का झामुमो और कांग्रेस ने आरोप लगाया है। दोनों पार्टी के नेताओं ने इसे आम बजट की जगह चुनावी बजट करार दिया है।

झामुमो प्रवक्ता मनोज पांडेय ने कहा कि पड़ोसी राज्य बिहार को बहुत कुछ मिला है और मिलना भी चाहिए, लेकिन झारखंड के साथ अन्याय क्यों? मनोज पांडेय ने कहा कि यह बजट पूरी तरह से चुनावी बजट है। उन्होंने कहा कि बिहार में चुनाव आ रहे हैं और बिहार चुनाव में भाजपा की नाव डूबती दिख रही है, इसलिए भाजपा किसी तरह से बजट में प्रावधान दिखाकर वोट की तलाश में दिख रही है।

झामुमो ने कहा आखिर हमारा गुनाह क्या है

मनोज पांडेय ने बजट में झारखंड के लिए कोई विशेष योजना या प्रावधान नहीं किए जाने पर सवाल उठाते हुए कहा कि क्या हमारा गुनाह है कि हमारे कोयले से पूरा देश रोशन होता है। क्या हमारा गुनाह है कि हमारे लोहे से देश बनता है। झामुमो नेता ने कहा कि

उम्मीद थी कि केंद्र की मोदी सरकार दलगत भावना से ऊपर उठकर राज्य को कुछ सौगात देगी लेकिन आज पूरे झारखंड को निराशा हाथ लगी है। उन्होंने कहा कि कम से कम हमें हमारा हक 1,36,000 करोड़ रुपए तो मिलना चाहिए था लेकिन आपने वह भी नहीं दिया।

केंद्रीय बजट में झारखंड की पूरी तरह उपेक्षा करने का आरोप लगाते हुए झामुमो नेता ने चेतावनी दी कि आने वाले समय में झारखंड मुक्ति मोर्चा का जुझारू तेवर जरूर देखने को मिलेगा, हम अपने पैसे के लिए किसी भी हद तक जाएंगे, आंदोलन करेंगे और केंद्र सरकार को झुकाने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि राज्य की जनता ने आज के केंद्रीय बजट में झारखंड की पूर्ण उपेक्षा देखी है, लेकिन भाजपा के जो सांसद जीतकर लोकसभा पहुंचे हैं, उन्होंने अपने मुंह पर सेलो टेप चिपका रखा है। ऐसे लोगों को क्षेत्र में घुसने से रोकना होगा।

बजट में झारखंड की गयी उपेक्षा : कांग्रेस

कांग्रेस के प्रदेश मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा ने भी शनिवार को पेश किए गए आम बजट में झारखंड की पूर्ण उपेक्षा का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इस बार भी केंद्रीय बजट में झारखंड के साथ धोखा हुआ है, क्योंकि इस राज्य में चुनावी जनादेश भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ गया है, इसलिए इस राज्य को कुछ नहीं मिला। राकेश सिन्हा ने कहा कि राज्य से 12 सांसद और दो मंत्री हैं, उन्हें बताना चाहिए कि उन्होंने झारखंड को क्या दिया है। भारतीय जनता पार्टी ने एक बार फिर झारखंड की जनता को धोखा दिया है। उन्होंने कहा कि उन्हें लगा था कि हमारे बकाया 1,36,000 करोड़ रुपए, जिसे केंद्र सरकार दबाए बैठी है, उसे वापस करने के लिए कुछ बजटीय प्रावधान होगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ. उन्होंने कहा कि बिहार चुनाव को देखते हुए यह बजट है, यह आम बजट नहीं बल्कि चुनावी बजट है।

सीएम से मिलीं गायिका मृणालिनी अखौरी

रांची। झारखंड की सुप्रसिद्ध गायिका डॉ मृणालिनी अखौरी शनिवार को झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से उनके कांके रोड स्थित आवास पर शिष्टाचार मुलाकात की। इन दौरान उन्होंने सीएम को मुख्यमंत्री पद की नई पारी और नव वर्ष की शुभकामनाएं दी। मृणालिनी ने मुख्यमंत्री को अपनी संस्था तरन्नुम संगीत संस्थान में झारखंड के युवाओं एवं बच्चों को शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देकर झारखंड की कला संस्कृति पर अपने किए गए कार्यों की जानकारी दी। साथ ही पूरे देश में झारखंडी कला संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए विचार विमर्श किया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भी गायिका डॉ मृणालिनी को उनके संगीत पूर्ण जीवन में और प्रगति करने और झारखंड का नाम रोशन करने के लिए शुभकामनाएं दी।

ऑन द रॉक्स में मेराकी फैशन शो आयोजित

रांची। स्थानीय रॉक गार्डन में आयोजित ऑन द रॉक्स में मेराकी फैशन शो का आयोजन किया गया। इसमें झारखंड के चुनिंदा डिजाइनरों ने अपने डिजाइन को शोकेस किया। इसमें खास आकर्षण राज्य की बेहतरीन डिजाईनर सुरभि लाल का जूट का डिजाइन था। पैशन शो के दौरान उन्होंने कपड़े और जूते के इस्तेमाल से बेहतरीन डिजाइन पेश किया। टेक्सटाइल डिजाइन में उन्होंने डेनिम जींस, सिल्क, नेटवेयर भी शोकेस किया। सुरभि ने बताया कि उन्होंने अपने डिजाइन में हजारीबाग की चर्चित सोहराय कलाकार रूना देवी की मदद से झारखंड की कला और समृद्ध विकसित को भी दर्शाने का प्रयास किया है। मेराकी फैशन शो के आयोजन सुमंगल नाग एवं अन्य डिजाइनरों ने भी अपने डिजाइन शोकेस किये। रॉक गार्डन में आयोजित इस फैशन शो में कपड़ों की अलग-अलग डिजाइन फैशन डिजाइनरों ने पेश किया।

देश में रोजगार के अवसर नहीं बढ़ रहे हैं : सीपीएम

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। सीपीआई (एम) माकपा के राज्य सचिव प्रकाश विप्लव ने पेश बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि भारत के दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था होने और वर्ष 2027 तक इसके 5 ट्रिलियन डालर बन जाने की अर्थव्यवस्था बन जाने की बड़ी-बड़ी बातों के बावजूद जमीनी सच्चाई इससे पूरी तरह अलग है। बढती बेरोजगारी, अनाज समेत खाने-पीने की चीजों की बढ़ती कीमतें, बेहद कम निजी निवेश, उपभोग खर्च में गतिरोध, छोटे खुदरा कर्जों के न चुकता होने की बढ़ती संख्या और विनिर्माण क्षेत्र में गिरावट, यह सभी सरकार की आर्थिक नीतियों के कारण हो रहे हैं।वित्तमंत्री ने अपने भाषण में देश में जारी आर्थिक मंदी के मुख्य कारण अर्थव्यवस्था में मांग की कमी से निपटने का कोई जिक्र नहीं किया है। बीमा क्षेत्र में एफडीआई एक सौ फीसदी लाए जाने का प्रस्ताव सरकारी बीमा कंपनियों को जिनका देश की अर्थव्यवस्था में काफी बड़ा योगदान है। बीमा क्षेत्र को पूरी तरह विदेशी दिवालिया बीमा कंपनियों और कापोर्रेट घरानों के हाथों सौंपने की तैयारी है। वित्तमंत्री ने अपने बजट भाषण में रुपए की गिरती हालत पर कुछ नहीं कहा है, जो आज एक डालर के मुकाबले 86 रुपया हो गया है। यह स्थिति पहले से ही जारी सारी मौजूदा समस्याओं को और बढ़ा देगी। उन्होंने कहा है कि आज केंद्र सरकार को यह समझ में नहीं आ रहा है कि इस लगातार बढ़ते संकट से कैसे निपटे, जिसमें आय कम है, लागतें बढ़ रही हैं और रोजगार के अवसर नहीं बढ़ रहें हैं तथा आमलोगों पर बोझ निरंतर बढ़ता जा रहा है। सीपीएम का झारखंड राज्य सचिवमंडल इस जनविरोधी और कापोर्रेटपरस्त बजट के खिलाफ आगामी 5 फरवरी को देश के किसानों और मजदूर संगठनों के देशव्यापी विरोध कार्रवाई का समर्थन करता है।

12 लाख तक की आय पर टैक्स नहीं लगाना करोड़ों परिवारों के लिए लाभकारी : संजय सेठ

- युवा, किसान, महिला और गरीब कल्याण को समर्पित है मोदी सरकार

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची/नई दिल्ली। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने आम बजट 2025-26 को विकसित भारत के सपने को पूर्ण करने वाला बजट बताया है। उन्होंने कहा है कि इस बजट में देश के हर वर्ग का ख्याल रखा गया है। यह 140 करोड़ भारतीयों की आकांक्षाओं को पूरा करने का रोडमैप है। गरीब, युवा, किसान और नारी शक्ति के साथ मध्यमवर्ग को राहत देने वाले इस बजट के लिए श्री सेठ ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का आभार प्रकट किया है। उन्होंने कहा कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस बजट के माध्यम से

विकसित भारत के लक्ष्य को पूर्ण करने में हर वर्ग की सहभागिता को सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा है। निःसंदेह यह बजट विकसित भारत के हमारे सपने को पूरा करने में नींव का मजबूत पत्थर सिद्ध होगा। श्री सेठ ने कहा कि यह पहली बार हुआ है, जब जोमैटो, स्विग्गी सहित विभिन्न प्लेटफार्म पर जुड़कर घर-घर सामान पहुंचाने का काम करने वाले युवाओं को अलग से पहचान पत्र देने की बात हुई है। इसके साथ ही भारत सरकार उनका बीमा भी करेगी। यह देश के लाखों युवाओं के लिए कल्याणकारी होगा। 12 लाख तक की आय पर किसी तरह इनकम टैक्स नहीं लगाने का निर्णय भी देश के करोड़ों मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। खिलौनों को वैश्विक पहचान देने के लिए भारत को खिलौने का वैश्विक केंद्र बनाने का निर्णय भी सराहनीय है। वहीं किसान क्रेडिट कार्ड को 3 लाख से बढ़कर 5 लाख तक की सीमा का किया जाना, किसान हित में उठाया गया शानदार कदम है। इसके अतिरिक्त इस बजट में मोदी सरकार ने हर वर्ग का ख्याल रखा है ताकि विकसित भारत के लक्ष्य को पूर्ण करने में देश का हर वर्ग अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके।

बजट में मध्यम वर्ग के लिए आयकर में बड़ी राहत : संजय सर्राफ

रांची। झारखंड पेरेंट्स एसोसिएशन के प्रांतीय प्रवक्ता सह रांची जिला मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री संजय सर्राफ ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा संसद मे प्रस्तुत बजट- 2025-26 पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि यह बजट देश की अर्थव्यवस्था को पुनः संजीवनी देने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इस बजट में जनता को राहत देने के लिए कई अहम घोषणाएं की गई हैं। सबसे पहले मध्यम वर्ग के लिए आयकर में बड़ी राहत दी गई है।

मेडिकल कॉलेज खोलने की तैयारी में जुटा कर्मचारी राज्य बीमा निगम

निगम को हॉस्टल स्किल लैबोरेट्री के लिए नामकुम में चाहिए और भी स्पेस

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। कर्मचारी राज्य बीमा निगम की ओर से नामकुम, रांची में मेडिकल कॉलेज की स्थापना की स्वीकृति दी जा चुकी है। इसके अंतर्गत निगम आदर्श अस्पताल, नामकुम द्वारा 50 एमबीबीएस सीट वाले मेडिकल कॉलेज की शुरूआत की जा रही है। इसके अकादमिक सत्र की शुरूआत 2025-26 से की जानी है। निगम को फिलहाल और भी स्पेस की आवश्यकता है। खासकर 13 हजार वर्ग फीट में तैयार भवन की। निगम के मेडिकल कॉलेज के डीन ने सूचना जारी करते इसकी जरूरत बताई है। कहा है कि वर्तमान अस्पताल परिसर के 10 किमी के दायरे में आधुनिक सुविधायुक्त न्यूनतम 13000 वर्ग मीटर (बिल्ट अप एरिया) वाले निर्मित भवन की जरूरत है। इसमें विशेष रुप से सेंट्रल लाइब्रेरी, स्किल लैबोरेट्री, एग्जामिनेशन हॉल, कॉलेज काउंसिल और चार ले^र थियेटर का होना अनिवार्य है। इसके अलावा 200 स्टूडेंट्स के लिए अलग-अलग हॉस्टल (लड़के-लड़कियां) भवन की भी आवश्यकता है। निगम ने कहा है कि ऐसे सेंट्रल डिपार्टमेंट, स्टेट गवर्नमेंट, पीएसयू या अन्य के पास अगर निगम के मेडिकल कॉलेज के 10 किमी के दायरे में स्थित कोई भवन हो तो डीन (प्रभारी, मेडिकल कॉलेज) से ईमेल या दूरभाष 0651-2261919 पर संपर्क कर जानकारी दे सकते हैं।

बीआईटी मेसरा में वार्षिक एथलेटिक मीट का आगाज

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। बीआईटी, मेसरा ने 37वें वार्षिक एथलेटिक मीट 2024-25 की शानदार शुरूआत की। यह खेल उत्सव 31 जनवरी से 2 फरवरी तक संस?थान के स्टेडियम में होगा। इसमें संस्थान के विभिन्न परिसरों से आए खिलाड़ी अपनी प्रतिभा दिखाएंगे। उद्घाटन समारोह 31 जनवरी को हुआ। डीन ऑफ स्टूडेंट अफेयर्स डॉ। भास्कर करन ने सभी का स्वागत किया। इस खास मौके पर मुख्य अतिथि सरोज लकड़ा, जो कि एक बेहतरीन धाविका हैं और भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं, ने खिलाड़ियों को प्रेरित किया। बीआईटी मेसरा के कुलपति प्रोफेसर इंद्रनील मन्ना ने अपने भाषण में संस्थान की 70 वर्षों की उपलब्धियों का जिक्र किया। खेलों के महत्व पर जोर दिया। आयोजन सचिव डॉ। महेंद्र कुमार ने सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत किया। उद्घाटन समारोह में रंगारंग परेड और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ हुईं। बीआईटी, मेसरा के लालपुर, देवघर,

पटना, नोएडा और जयपुर परिसरों के खिलाड़ियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। नवोदय विद्यालय गर्ल्स बैंड ग्रुप की शानदार प्रस्तुति सभी के लिए आकर्षण का केंद्र रही। तीन दिनों तक चलने वाले इस मीट में दौड़, हाई जंप, लॉन्ग जंप, भाला फेंक और बाधा दौड़ जैसी कई प्रतियोगिताएं होंगी। अंतिम दिन स्टाफ रेस का आयोजन भी होगा, जिसमें शिक्षक और कर्मचारी भी भाग लेंगे। इन खेलों में विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे। यह आयोजन विद्यार्थियों को अपनी खेल प्रतिभा दिखाने और खेल भावना को बढ़ावा देने का शानदार अवसर देगा।

उद्योगों को बढ़ावा देगा यह बजट : डॉ पूजा शुक्ला

रांची। एमिटी विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ पूजा शुक्ला ने कहा कि बजट का उद्योगों पर गहरा प्रभाव पड़ने की संभावना है। सरकार ने एमएसएमइ और स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं, जैसे निवेश और कारोबार सीमाओं में वृद्धि, जिससे इन क्षेत्रों में रोजगार सृजन और आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा, न्यूक्लियर एनर्जी मिशन और डिजिटल बुनियादी ढांचे का विस्तार करने से ऊर्जा और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में नई संभावनाएं उत्पन्न हो सकती हैं। कृषि सुधार और चिकित्सा शिक्षा विस्तार से स्वास्थ्य, कृषि और संबंधित उद्योगों में सकारात्मक बदलाव हो सकता है। हालांकि, इन पहलों को सफल बनाने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश और कार्यान्वयन की चुनौतियां बनी रहेंगी।

ट्रेन की पटरी उड़ाने की धमकी के बाद पटना से लेकर रांची तक हड़कंप, सिल्ली से धराया

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। ट्रेन की पटरी उड़ाने की धमकी से पटना से लेकर रांची तक हड़कंप मच गया। एक अनजान शख्स ने एम्स पटना को रात 11 बजे के आसपास कॉल करके ट्रेन की पटरी को उड़ाने की धमकी दी। धमकी के इस फोन कॉल से पटना पुलिस और रेलवे पुलिस में हड़कंप मच गया। धमकी के कॉल आने के बाद तुरंत रेलवे पुलिस और पटना पुलिस ने कॉल किए गए नम्बर का जांच पड़ताल शुरू की। कुछ ही देर में कॉल करने वाले नम्बर का पता चल गया।

उसके बाद पटना पुलिस ने तुरन्त रांची पुलिस और रेलवे पुलिस रांची को जानकारी दी। रांची पुलिस को मिली जानकारी के बाद रांची पुलिस एक्शन में आ गई। त्वरित कार्रवाई के लिए एसएसपी चंदन सिन्हा ने सिटी डीएसपी केवी रमन, चुटिया थाना प्रभारी लक्ष्मीकांत के नेतृत्व में आरपीएफ रांची और रांची पुलिस ने शुक्रवार देर रात ही कार्रवाई शुरू की।

रांची के सिल्ली से पकड़ा गया युवक : जांच में जिस नम्बर से धमकी दी गई थी, उसका लोकेशन निकाला गया तो सिल्ली इलाके में आया। उसके बाद जिसके नाम से सिम था उस शख्स को चुटिया थाना क्षेत्र के महादेव टोली से दो बजे रात में पुलिस ने उठाया। फोन करने वाला शख्स इसी का भाई था। हिरासत में लिए गए युवक धर्मेश्वर लोहरा से पूछताछ में पुलिस को जानकारी मिली कि ये सिम उसके नाम से है लेकिन ये नम्बर उसने मां को दिया है।

जो मानसिक रूप से बीमार भाई का देखभाल करती है। इसलिए एक मोबाइल देकर रखा है।

पूछताछ में पता चला कि उसका भाई की दिमागी हालत ठीक नहीं है। मानिसक रूप से बीमार रहने के कारण हो सकता है फोन कर दिया होगा।

भाई ने बताया कि इससे पहले कई जगहों पर फोन किया था। कहा कहीं भी फोन करते रहता है। सीआईपी कांके में भर्ती कराने ले जा रहे थे तो हमसे मारपीट किया उसके बाद छोड़ दिया।

खबर एक नजर में

केंद्रीय बजट से झारखंड को कई योजनाओं में सीधा लाभ मिलेगा : प्रतुल शाहदेव

रांची। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने कहा कि केंद्रीय बजट में की गई घोषणाओं से झारखंड सीधे तौर पर लाभान्वित होगा। भारत नेट परियोजना के तहत स्कूलों और प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों को ब्रॉडबैंड कनेक्शन से जोड़ने की योजना है। इस योजना से राज्य के 35,000 स्कूलों और हजारों प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों को लाभ मिलेगा। इसके अतिरिक्त, जल जीवन मिशन को 2028 तक बढ़ाने से झारखंड में पिछड़ी हुई इस योजना का लाभ जनता तक पहुंच सकेगा। सक्षम आंगनबाड़ी केंद्र और पोषण 2.0 योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, एसटी महिला उद्यमियों को ऋण और विभिन्न स्टार्टअप की सुविधा देने में प्राथमिकता से झारखंड को सीधा लाभ मिलेगा। आकांक्षी जिलों की तर्ज पर उन्नत खेती के लिए प्रधानमंत्री धन-धान्य किसान योजना में देश के 100 जिलों का चयन किया जाएगा, जिसमें झारखंड के भी कई जिले शामिल हो सकते हैं।

2047 के विकसित भारत के मार्ग को प्रशस्त करने वाला समदर्शी बजट : राजश्री जयंती

रांची। भाजपा प्रदेश प्रशिक्षण प्रमुख डॉक्टर राजश्री जयंती ने कहा कि 2047 के विकसित भारत के मार्ग को प्रशस्त करने वाला समदर्शी बजट है। ज्ञान (गरीब , युवा, अन्नदाता और नारी) गरीबों के लिए, युवाओं के लिए, अन्नदाता के लिए और नारी के लिए सभी के लिए बजट में प्रावधान है। 5 लाख एससीएसटी भी महिलाओं के सशक्तिकरण लिए 5 लाख नई योजनाएं लाई गई हैं। स्टार्ट अप के लिए 20 करोड़ रुपए तक लोन दिए जाएंगे। टैक्स पेयर्स के लिए 12 लाख रुपये तक टैक्स नहीं देना है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण को सस्ता किया गया है। डिजिटल बुक, मोबाइल फोन के सस्ते होने पर और साथ ही ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी के कारण सरकारी स्कूलों के बच्चे लाभान्वित होंगे। 6 लाइफ सेविंग दवाइयों पर ड्यूटी टैक्स घटेगी। उड़ान योजना के जरिए विभिन्न 100 शहरों को कनेक्टिविटी से जोड़ा जाएगा। 80 नए एयरपोर्ट बनाए जाएंगे।

केंद्रीय बजट भारत के संकल्प को पूरा करने की दिशा में ऐतिहासिक कदम : संजय जायसवाल

रांची। भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य संजय कुमार जायसवाल ने कहा कि बजट में युवा किसान मिडिल क्लास को खास ध्यान में रखकर लाया गया है। महिला अनुसूचित जाति और जनजाति के उद्यमियों के लिए विशेष पैकेज गरीब किसान और मध्य वर्ग को राहत वाला बजट है। स्टार्टअप के लिए 20 करोड रुपए तक का लोन दिए जाने टैक्स पेयर्स के लिए 12 लाख तक का छूट आम आदमी को राहत देगा।

केंद्रीय कर्मियों और राज्य कर्मियों को राहत देने वाला बजट : आदिल जहीर

रांची। झारखंड राज्य कर्मचारी महासंघ के राज्य अध्यक्ष आदिल जहीर ने कहा कि केंद्रीय आम बजट में सालाना 12 लाख आय पर 0 प्रतिशत टैक्स में हुए छूट से राज्य कर्मियों में हर्ष का माहौल है। इससे 15 लाख तक छूट दिया जा सकता था। इस बजट में आठवें वेतन आयोग के खर्च का कोई उल्लेख नहीं है और न ही 50 प्रतिशत महंगाई भत्ता को मूल वेतन में मर्ज करने का कोई चर्चा नही है। लेकिन फिर भी केंद्रीय कर्मियों राज्य कर्मियों को राहत देने वाला बजट है इसमें बेरोजगारों को रोजगार का कोई ठोस पहल नहीं की गई है

महिला, युवा और आम लोगों का बजट : अजय राय

रांची। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) झारखंड के कार्यसमिति सदस्य और मीडिया संपर्क विभाग के संयोजक अजय राय ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा संसद में प्रस्तुत बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह बजट महिला, युवा और आम लोगों का बजट है, जो भारत के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। श्री राय ने कहा कि इस बजट में मध्यम वर्ग के परिवारों को ध्यान में रखते हुए कई उत्पादों को सस्ता किया गया है, जिससे समाज के हर वर्ग को लाभ होगा। उन्होंने कहा कि यह बजट देश के विकास और भविष्य की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने बताया कि इस बजट में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और रोजगार पर विशेष ध्यान दिया गया है। उन्होंने कहा कि सरकार ने घरेलू संस्थानों में उच्च शिक्षा के लिए 10 लाख रुपये तक के ऋण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने की घोषणा की है। इसके अलावा, मेडिकल कॉलेजों में 75,000 सीटें बढ़ाई गई हैं और आईआईटी में भी हजारों सीटें बढ़ाई गई हैं। इस बजट में महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को बढ़ावा देने के लिए बजट में महिलाओं और लड़कियों को लाभान्वित करने वाली योजनाओं के लिए 3 लाख करोड़ रुपये से अधिक का आवंटन किया गया है। उन्होंने कहा कि यह बजट देश के विकास और भविष्य की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

नवाचार, समावेशिता और आत्मनिर्भर भारत पर केंद्रित है बजट : अभिषेक शुक्ला

रांची। आम बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए अबुआ अधिकार मंच के अभिषेक शुक्ला ने कहा कि शिक्षा क्षेत्र के लिए बड़े सुधारों की घोषणा की गई। 50,000 अटल टिंकरिंग लैब्स, 10,000 पीएम रिसर्च फेलोशिप, और मेडिकल कॉलेजों में 10,000 अतिरिक्त सीटें जोड़ी जाएंगी। पांच राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस शिक्षा केंद्र स्थापित होंगे। भारतनेट परियोजना के तहत सभी सरकारी स्कूलों में ब्रॉडबैंड सुविधा दी जाएगी। भारतीय भाषा पुस्तक योजना के तहत डिजिटल पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराई जाएंगी। आईआईटी और मेडिकल संस्थानों का विस्तार किया जाएगा। रोजगार वृद्धि को प्रोत्साहित करने के लिए नवाचार और कौशल विकास पर जोर दिया गया है।

अमीरों को और अमीर बनाने वाला बजट: माले

रांची। भाकपा माले के राज्य सचिव मनोज भक्त ने कहा कि मोदी सरकार का वर्तमान बजट अमीरों को और अमीर बनाने के लिए है, जबकि ग्रामीण रोजगार का कानूनी अधिकार, मनरेगा, छीनने के लिए यह आर्थिक हमला है। यह बजट निम्न आय वर्ग की आय को और संकुचित करेगा। कृषि के लिए किए गए वादे भी बस जुमलेबाजी साबित हुए हैं। मोदी सरकार ने इस बजट में झारखंड के प्रति बदले की भावना को प्रकट किया है। विनिवेशीकरण और विनियमन की रफ्तार को बढ़ाने वाला यह बजट सार्वजनिक क्षेत्रों में कारपोरेट लूट को बढ़ावा देगा, सुरक्षित नियोजन पर घातक हमला करेगा, छंटनी को प्रोत्साहित करेगा और नौकरियों की समाप्ति में तेजी लाएगा।

नशेड़ियों व जुआड़ियों पर होगी सख्त कार्रवाई

थाना में ऐसे लोगों की पैरवी करने वालों का नाम भी नोट होगा

खबर मन्त्र संवाददाता

बैठक में बोलते पूर्व सांसद रामटहल चौधरी।

ओरमांझी। पुलिस की कार्रवायी में पैरवी करने वालों का अब थाना में नाम नोट किया जाएगा। उक्त निर्णय थाना परिसर ओरमांझी में हुई शांती समिति की बैठक में हुई। शनिवार को थाना प्रभारी अनिल कुमार तिवारी की अध्यक्ष में सरस्वती पूजा को लेकर बैठक हुई। जिसमें प्रखंड क्षेत्र के कई ज्वलंत मुद्दो पर भी चर्चा की गई। शास्त्री चैक स्थित कुच्चू व सिकिदिरी रोड में अतिक्रमण कर दुकान खोलने से दोनो मार्ग में जाम की स्थिति व आवागन में होने से स्कूली छात्र-छात्राओं के साथ आम लोगों को होने वाली परशानियों पर पुलिस से कार्यवायी करने की मांग की गई। मुख्य अतिथि पूर्व सांसद रामटहल चौधरी द्वारा तेजरफ्तार से बाइक चलाने, क्षेत्र में जुवाड़ी व गंजेडियों के खिलाफ कार्रवायी करने और थाना में पैरवी करने वाले का नाम नोट करने को कहा गया। इसके अलावे प्रमुख अनुपमा देवी, पूर्व प्रमुख जयगोविंद उर्फ लालू साहू सहित कई लोगों ने संबोधन किया और सभी ने प्रखंड क्षेत्र में हुई कई अपराधिक घटनाओं का उदभेदन व कार्रवायी करने के लिए थाना प्रभारी अनिल तिवारी को बधाई देते हुए सरहाना की गई। वहीं थाना प्रभारी ने सरस्वती पूजा से संबंधित सरकारी गाइडलाइन से अवगत कराया और सभी से विधि व्यवस्था बनाने में सहयोग करने की अपील किया। सभी पूजा पंडाल में रात्रि 10 बजे के बाद डीजे साउंड बजाने पर प्रतिबंध लागाने व प्रतिमा विसर्जन के दौरान गहरे पानी में नही जाने सहित कई दिशा-निर्देष किया। वहीं उपस्थित लोगों द्वारा उठाए गए मामले पर पुलिस द्वारा गंभीरता पूर्वक कार्रवायी करने का आश्वसन दी। कहा मादक पदार्थ व जुआ के खिलाफ अभियान चलाया जाएगा। जुआ अड्डा में छेपामारी कर धर-पकड़ करने के साथ मौके पर खड़ी वाहनों को भी जब्त करने व पकड़े गए लोगों को जेल भेजने की भी कार्रवायी की जाएगी। मौके पर उपप्रमुख रिजवान अंसारी, मुखिया रमेश बेदिया, सत्यनारायण तिवारी, समुंदर पाहन, दुर्गाशंकर साहू, बाबुलाल महली, हरिमोहन महतो, तुलसी खरवार, शिवप्रसाद साहू, प्रेमनाथ मुंडा, रमेश उरांव, कासीनाथ पाहन, सत्यमराज कुशवाहा, कुदुस अंसारी, रोहित साहू, सलीम अंसारी, उमाशंकर साहू, रवि मुंडा मुमताज अंसारी, सुनील नायक, सुरेंद्र उरांव, सहित कई लोग उपस्थित थें।

स्पीड न्यूज

मांडर में भूमि अदालत का उद्घाटन

मांडर। अंचल कार्यालय में शनिवार को मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की के निदेर्शानुसार भुमि संबंधित विवाद समाधान हेतु भुमि अदालत कक्ष का उद्घाटन प्रमुख फिलीप सहाय एक्का विधायक प्रतिनिधि जमील मलिक अंचलाधिकारी चंचला कुमारी और थाना प्रभारी राहुल कुमार ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर विधायक प्रतिनिधि जमील मलिक ने कहा कि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने देखा की मांडर प्रखंड में जमीन को लेकर यहां के जनता रोज अंचल कार्यालय का चक्कर लगाते रहते है कभी कभी तो आपस में लड़ाई झगडे तक कर लेते हैं और थाना में बैठे रहते हैं इसी को लेकर प्रत्येक शनिवार को भुमि सुधार एवं उसका निपटारा किया जाय जिसमें अंचल और थाना के अलावा जन प्रतिनिधि जमीन निपटारा करने में सहयोग करेंगे जिससे आम जनता को परेशानी से निजात मिलेगी। इस मौके पर मुस्लिम अंसारी, नशीम अंसारी, रशीद खान, हाशिम अंसारी, होसे उरांव, सरिता तिग्गा, सिरोफिना मिंज, गुलजार अंसारी सहित अन्य मौजूद थे।

रेलवे परामर्शदात्री समिति सदस्य से मिलकर समस्याओं संबंधित ज्ञापन सौंपा

नामकुम। शनिवार को पूर्व कर्नल वीरेंद्र कुमार सिंह के नेतृत्व में टाटीसिलवे सहित आसपास क्षेत्र के लोगों ने रेलवे परामर्शदात्री समिति सदस्य सतीश सिन्हा से मिलकर क्षेत्र की समस्या से संबधित ज्ञापन सौंपा। जिसमें मुख्य रूप से भागलपुर रांची वनांचल एक्सप्रेस, पाटलिपुत्र एक्सप्रेस, झारखंड स्वर्णजयंती एक्सप्रेस, रांची बनारस एक्सप्रेस, रांची पटना जनशताब्दी एक्सप्रेस, रांची आरा एक्सप्रेस सहित अन्य ट्रेनों का टाटीसिलवे स्टेशन में ठहराव कराने सहित स्टेशन पर रिजर्वेशन काउंटर की स्थापना, प्लेटफार्म की लंबाई बढ़ाने रात में रोशनी की व्यवस्था करने, आरामदेह सीढ़ियों के निर्माण कराने की मांग की गयी। मौके पर मुख्य रूप से अनिल शर्मा, रामू जी, सुधीर सिन्हा, आशा सिंह, डेजी सिंह, उषा शर्मा, गायत्री देवी, वर्षा, प्रियंका महतो, सावित्री महतो सहित अन्य लोग उपसथित थे।

आदिवासी मूलवासी संघर्ष समिति का बैठक कर समिति का गठन किया गया

खलारी। आदिवासी मूलवासी संघर्ष समिति का बैठक हुटाप पंचायत भवन में किया गया। बैठक की अध्यक्षता अशोक राम एवं संचालक फारूक रजा ने की। बैठक में आम जनमानस, क्षेत्र की समस्याओं एवं आदिवासी दलित शोषण कुरीतियों पर चर्चा कर उसके समाधान के लिए एकजुट होने पर बल दिया गया। वही आदिवासी मूलवासी संघर्ष समिति का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष बद्री गंझू,उपाध्यक्ष विक्रम सिंह, सचिव अशोक राम, सह सचिव शत्रुध्न मुडा, कोषाध्यक्ष मोहम्मद इरफान अंसारी, सहकोषाध्यक्ष सुधीर मुंडा, संगठन सचिव फारूक रजा, सहसंगठन सचिव किशुन भुइयां, रामकुमार गंझू , पिंटू नायक एवं रोहन मुंडा को बनाया गया। मौके पर रितु भगत, फलिंदर मुंडा, चंदन कुमार राम, अख्तर खान, पंकज मुंडा, विनोद भुईयां, कार्तिक भुईयां, परमेश्वर गंझू, जावेद अख्तर शामिल थे।

बेड़ो में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर कल

बेड़ो। लोहरदगा रोड स्थित संतोष मेडिकल हॉल बेड़ो में हड्डी व इस रोग की समस्या को लेकर नि:शुल्क जांच शिविर का आयोजन सोमवार को किया जाएगा। जहां रांची के प्रसिद्ध डा अभिषेक राय और डा विजय कार्तिक हड्डी एवं नस रोग विशेषज्ञ उपस्थित रहेंगे। इधर शिविर की जानकारी देते हुए संतोष कुमार ने बताया कि नसों का सूनापन,हाथ पैर में झनझनाहट, मस्तिष्क,रीढ़ व नसों से संबंधित अन्य रोगों की जांच किया जाएगा। उन्होंने ने लोगों से इस अवसर का लाभ उठाने की अपील की है।

एफसी हजारीबाग बना चैम्पियन्स

राहे। हितजारा गांव में आयोजित 54 वां मिलन महोत्सव फुटबॉल टूनार्मेट में एफसी हजारीबाग की टीम ने 1 लाख 21 हजार की राशि जीत कर चैम्पियन्स बना। फाइनल मुकाबले में एफसी ईचागढ़ की टीम को एक गोल से हरा कर 1 लाख 21 हजार की राशि पर कब्जा किया। मुखिया विकास सिंह मुंडा ओर आयोजन समिति के द्वारा विजेता टीम को पुरस्कार की राशि दिये। उप विजेता टीम को 81हजार दिया गया। तीसरे स्थान की टीम रोहन स्पोर्टिंग चांडिल और चौथे स्थान की टीम एफसी ओरमांझी को 25-25 हजार रुपये दिये गये। मौके पर मनोरंजन महतो, कृष्णा महतो, मंटू महतो, पिंटू महतो, उमाकांत महतो, राजू महतो, सृष्टिधर महतो, केदारनाथ महतो, अरूण महतो, उपानन्द यादव, हरेन्द्र महतो, जगदीश महतो, जयराम अहीर, हरेन्द्र महतो, धीरज यादव, धनेश्वर महतो, कमिटि के सभी सदस्य मौजूद थे। संचालन धनु नाग के द्वारा किया गया। इस अवसर में चौड़ल प्रदर्शनी में सुमानडीह की टीम प्रथम स्थान, उरांवडीह की टीम को दूसरा पुरस्कार दिया गया।

ग्रामीणों ने अफीम खेती नहीं करने की ली शपथ

खबर मन्त्र संवाददाता

सोनाहात। प्रखंड सभागार में प्रमुख विक्टोरिया देवी के अध्यक्षता में 14 पंचायत के मुखिया, ग्राम प्रधान, वार्ड सदस्यों के बीच जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जागरूकता कार्यक्रम के इस अभियान में बुंडू एसडीएम किष्टो कुमार बेसरा, डीएसपी ओम प्रकाश, सीओ मनोज कुमार महथा,बीडीओ खगेश कुमार, थाना प्रभारी चंदन कुमार के द्वारा अफीम से होने वाले नुकसान के बारे में बारी बारी से जानकारी दीये। एसडीएम बुंडू किष्टो कुमार बेसरा ने कहा कि अफीम जैसी नशीली फसलें समाज और परिवार दोनों के लिए घातक हैं।उन्होंने ग्रामीणों से अपील की वे नशीले पदार्थों की खेती छोड़ कर वैकल्पिक रोजगार और खेती के तरीकों को अपनायें। उन्होंने ग्रामीणों को सब्जी उत्पादन, मधुमक्खी पालन और बागवानी आदि खेती करने की बात कही। इन्होंने कहा कि जागरूकता अभियान का उद्देश्य न केवल अवैध गतिविधियों पर रोक लगाना है, बल्कि ग्रामीणों को स्वावलंबन की ओर प्रेरित भी करना भी है। डीएसपी बुंडू ओम प्रकाश ने अफीम का दुष्प्रभाव व कानूनी कार्रवाई के बारे में जानकारी दी। इन्होंने कहा कि अफीम की खेती कानूनन व सामाजिक अपराध है। इससे समाज को नुकसान हो रहा है। अफीम की खेती करने पर गिरफ्तारी की कार्रवाई होगी। इसलिए जो खेती है उसे स्वेच्छा से नष्ट कर दे। इस दौरान मौजूद सभी लोगों ने अफीम खेती नहीं करने और खेती पर रोक लगाने के लिए शपथ लिया। मौके पर प्रखंड के सभी मुखिया, ग्राम प्रधान, वार्ड सदस्य मौजूद थे।

बुद्धा पब्लिक स्कूल में खेल महोत्सव का हुआ समापन

सिल्ली। सिल्ली प्रखंड अंतर्गत शनिवार के दिन बुद्धा पब्लिक स्कूल में वार्षिक खेल कुद महोत्सव का समापन हुआ। खेल महोत्सव में कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें क्रिकेट टीम में आरसीबी की टीम विजेता रही एवं फुटबॉल खेल में बुद्धा एफसी विजय रहा। लड़कियों की कबड्डी प्रतियोगिता में पायल टीम विजय रही तथा लड़कों की कबड्डी में हिमेश टीम विजय रहा। भाला फेंकने की प्रतियोगिता में राजू महतो ने खिताब जीत साथ ही शिक्षकों के लिए म्यूजिकल चेयर में विद्यालय के प्राचार्य वी सुधीर राव विजयी रहे। अंतिम पुरस्कार के रूप में सभी को पुरस्कार वितरण किया गया साथ ही सभी विजेताओं को विद्यालय के निदेशक रणधीर कौशिक ने ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। इस कार्यक्रम में शिक्षक गोविन्द्र कुमार सिंह, राकेश, जितेंद्र महतो, विपुल रॉय, राहुल भद्रा, नकुल बड़ाईक, प्रेमचंद महतो, विपुल राय, प्रतिमा देवी, आशा चौधरी, पायल साव, सुजाता कुमारी एवं हर्षा कुमारी का आयोजन में महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

महाकुंभ पर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

बेड़ो। बेड़ो विनय बगीचा स्थित डीएवी विवेकानंद पब्लिक स्कूल में शनिवार को महाकुंभ पर पेंटिग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा छह से कक्षा आठ तक के विद्यार्थी सामिल हुए। जिसमें बच्चों ने महाकुंभ के विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए महाकुंभ की झलकियों का अपनी कुंची से अपनी कल्पनाओं को साकार रूप दिया और एक से बढ़कर एक चित्रांकन का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधानाध्यापक कैलाश कुमार ने बतलाया कि सीबीएसई के द्वारा शिक्षा मंत्रालय के सौजन्य से सभी सीबीएसई स्कूलों में यह प्रतियोगिता आयोजित की जानी थी और फोटो सीबीएसई के वेबसाइट पर अपलोड करना था। इसके तहत शनिवार को हमारे विद्यालय के बच्चों ने एक से बढ़कर एक पेंटिंग महाकुंभ की झलकियों को बनाया। जिसमे प्रथम स्थान भावेश कुमार, प्रिया कुमारी,आदित्य राज गुप्ता, प्राची मेहता व साक्षी तिग्गा दूसरा स्थान श्रेया कुमारी, दिव्या टंडन, माही गुप्ता, सृष्टि गुप्ता, आकृति स्नेहा वहीं तीसरे स्थान पर श्रेजल कुमारी, कुमकुम कुमारी, आकांक्षा कुमारी, नव्या राज, सब्बा तब्बासुन, खुशी कुमारी और मैथिली भगत रही। विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मुखिया के जाली हस्ताक्षर से बनायी वंशावली डीसी से जमीन दलालों पर कार्रवाई की मांग

खबर मन्त्र संवाददाता

नेवरी मुखिया साधो उरांव का फाइल फोटो।

ओरमांझी। जमीन दलालों द्वारा नेवरी मुखिया साधो उरांव का जाली हस्ताक्षर व मुहर का इस्तिमाल कर वंषवाली बना लिया गया है। इतना ही नही वंषावली के अधारा पर जमीन की खरिद बिक्री भी की गई। इसकी जानाकरी होने पर मुखिया साधो उरांव द्वारा जांच करने व सत्यता की पुष्टि होने पर मेसरा थाना व डीसी से इसकी षिकायत कर जमीन दलालों के खिलाफ कार्रवायी की मांग की गई है। मुखिया साधो उरांव ने बताया कि गांव के विषुन महतो व चंदवे का मोहम्मद तबरेज द्वारा उसका जाली हस्ताक्षर व मोहर से वंशावली बना कर एक एकड़ जमीन की (पावर डीड) खरीद बिक्री किया गया है। इसकी जानाकरी होने पर नेवरी मुखिया साधो उरांव उसने इसपर संज्ञान लेते हुए उपायुक्त रांची और मेसरा थाना थाना प्रभारी को लिखित षिकायत कर मामले में संलिप्त जमीन दलालों पर कानूनी कार्रवाई करने की मांग गई है।

जमीन के रैयत को जान मारने की मिल रही धमकी

रातू। मौजा बेलांगी के खाता संख्या-1 की जमीन पर ऊपजे विवाद के मद्देनजर रैयत और मुरगू निवासी रामानंद तिवारी के आग्रह पर सदर एसडीओ उत्कर्ष कुमार ने धारा-144 लगा दिया है। ताकि, विधि-व्यवस्था की समस्या खड़ी न हो सके। इसके बावजूद आरोपियों की ओर से इसमें जबरन कब्जा करने के उद्देश्य से काम कराया जा रहा है। तिवारी ने जब इसका विरोध किया, तो उसके साथ न केवल गाली-गलौज की गयी, बल्कि जान मारने की धमकी भी दी जा रही है। इसे लेकर उसने सीनियर एसपी चंदन कुमार सिन्हा के कार्यालय में 28 जनवरी को 8 लोगों के खिलाफ लिखित शिकायत करते हुये सुरक्षा की मांग की है। बताते चलें, कि वह मंडल भाजपा का महामंत्री हैं। उसने पार्टी नेताओं से भी न्याय दिलाने की गुहार लगायी है। इधर, आरोपित पक्ष के लोगों से बात करने की कोशिश की गयी। लेकिन, संपर्क नहीं हो सका।

चट्टीनदी गांव में ट्रांसफॉर्मर लगने से किसानों और ग्रामीणों में हर्ष

खबर मन्त्र संवाददाता

खलारी। लपरा पंचायत के चट्टीनदी गांव में 25 केवीए का ट्रांसफॉर्मर लगा, किसानों व ग्रामीणों में हर्ष। मुख्य रूप से उपस्थित झामुमो पूर्व रांची जिला सह सचिव रंथू उरांव ने जानकारी देते हुए बताया कि चट्टीनदी गांव में लगे 10 केवीए का ट्रांसफार्मर लगभग तीन माह पूर्व ओवरलोड की वजह से जल गया था। समस्या से मैक्लुस्कीगंज के कांके विधायक सुरेश बैठा को अवगत कराया गया। उनकी पहल पर चट्टीनदी में 25 केवीए का ट्रांसफार्मर लगाया गया। जिससे ग्रामीणों में हर्ष का माहौल है। वहीं पंचायत के लोगों ने झामुमो नेता रंथू उरांव, शशि मुंडा, श्रवण भोगता के प्रति आभार प्रकट किया। इस अवसर पर रेशमा कुमारी, जमनी देवी, आरती कुमारी, सुषमा कुमारी, राजा राजाराम उरांव, निशांत उरांव सहित अन्य मौजूद थे।

इंटर नेशनल मैथमेटिक्स ओलंपियाड में झारखंड का दबदबा

लेडी केसी रॉय के सातवीं का छात्र बना स्टेट टॉपर

खबर मन्त्र संवाददाता

रातू। इंटर नेशनल मैथमेटिक्स ओलंपियाड में झारखंड का दबदबा कायम है। राज्य के टॉप 100 रैंकर्स में लेडी केसी रॉय मेमोरियल स्कूल के 20 विद्यार्थियों में से सातवीं के छात्र सृजन कुमार ने स्टेट टॉपर होने का गौरव हासिल किया। वह झारखंड में पहले और वर्ल्ड रैंक में दूसरे स्थान पर है। एसओएफ की ओर से आयोजित इंटरनेशनल मैथमेटिक्स ओलंपियाड 2024-25 में विद्यालय के पहली से दसवीं कक्षा तक के छात्र-छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन के जरिये झारखंड में ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय पटल पर विद्यालय का परचम लहराया है। बताते चलें, कि इसमें देशभर के लाखों विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

स्कूल के सफल विद्यार्थी

सृजन कुमार (झारखंड रैंक 1), आयुष पूरी (रैंक 5), आरव चौधरी (रैंक 12), आंचल कुमारी (रैंक 14), अदिति पूरी (रैंक 16), आकाश कुमार (रैंक 17), लोकेश ओरांव (रैंक 17), सलमान राजा (रैंक 17), अयान खान (रैंक 17), राम नंदन (रैंक 22), आयुष गुंजन (रैंक 22), ईशान आलम (रैंक 24), नमन कुमार (रैंक 28), अफशीन नाज (रैंक 38), हर्ष कुमार सिंह (रैंक 39), गौरव कुमार (रैंक 41), अर्णव कुमार (रैंक 51), तंजील आलम (रैंक 55), शिवम कुमार (रैंक 82)।

प्रपत्र VI 'क'

झारखण्ड सरकार, समाहरणालय, खूँटी

(जिला भू-अर्जन शाखा)

पत्रांक–22(ii)
दिनांक–29.01.2025

प्रारंभिक अधिसूचना

(अधिनियम–30/2013 की धारा–11 (1) के अधीन)

चूंकि समाहर्त्ता को यह प्रतीत होता है कि ग्राम मसमानो थाना– कर्रा थाना सं0 97 अंचल कर्रा जिला खूँटी में भूमि सार्वजनिक प्रयोजन, यथा परियोजना हटिया लोधमा कर्रा खूँटी पथ चौड़ीकरण एवं मजबुतीकरण हेतु अपेक्षित है। प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन के प्रयोजनार्थ अपर समाहर्त्ता प्रशासक के रूप में नियुक्त किये गये हैं। अतएव अधिसूचित किया जाता है कि ग्राम मसमानो थाना– कर्रा थाना सं0 97 अंचल कर्रा जिला खूँटी के भीतर उपर्युक्त परियोजना के लिए कमोबेश **3.2025** एकड़ यानि 1.296006 हेक्टेयर मानक माप का भू–खण्ड जिसका विस्तृत विवरण निम्नलिखित अर्जनाधीन है।

ग्राम मसमानो थाना– कर्रा थाना सं0 97 अंचल कर्रा जिला–खूँटी का विस्तृत विवरणी

क्र0सं0	खाता संख्या	प्लॉट संख्या	अर्जन किया जाने वाला क्षेत्रफल एकड़ में	अर्जन की जाने वाली भूमि की चौहदी उ0द0पू0प0	भूमि का वर्गीकरण	खतियानी रैयत का नाम	पूरा पता सहित वर्तमान रैयत का नाम
1	6	376	0.095	उ0–376 द0–रास्ता पु0–392 प0–377	टॉड़ दो	रैयती	संजीत बड़ाईक वो रंजीत बड़ाईक पिता महली बड़ाईक वो मांगो बड़ाईक वल्द कृपा बड़ाईक वो फुदो बड़ाईक पति महादेव बड़ाईक वो अशोक बड़ाईक वो सचीन्द्र बड़ाईक पिता पुरन बड़ाईक
2	6	626	0.015	उ0–रास्ता द0–626 पु0–668 प0–625	टॉड़ दो		
3	8	418	0.03	उ0– 422 द0–317 पु0–418 प0–रास्ता	टॉड़ दो	रैयती	गोयेंदा पाहन पिता लेदोवा पाहन वो डोबाई पाहन
4	13	391	0.12	उ0– रास्ता द0–391 पु0–393 प0–390	टॉड़ दो	रैयती	शंकर कच्छप वो विष्णु कच्छप वो कृष्णा कच्छप वो वल्द रिझा उराँव कच्छप व सुरेश कच्छप वो श्याम सुन्दर कच्छप वल्द लडाउ उराँव वो अमृत कच्छप वल्द सुर्यनारायण कच्छप वल्द रिझा कच्छप वो रिझा कच्छप वो रामा कच्छप वो राकेश कच्छप पेशरान नन्दु उराँव वो अंगनी कच्छप पति नहना कच्छप
5	20	696	0.07	उ0–696 द0–रास्ता पु0–674 प0–690	टॉड़ दो	रैयती	सीताराम महतो स्व0 इंदु महतो महेश महतो कृष्णा महतो लक्ष्मण महतो वल्द मनु महतो
6	20	848	0.05	उ0–रास्ता द0–848 पु0–854 प0–841	टॉड़ दो		
7	23	423	0.02	उ0– नदी द0–422 पु0–423 प0–रास्ता	टॉड़ दो	रैयती	गोंगा पाहन रुसवा पाहन वल्द स्व0 सलुवा पाहन
8	28	755	0.34	उ0–रास्ता द0–755 पु0–841 प0–763	टॉड़ दो 1	रैयती	बसंत सारंगी हुनकू सारंगी बिरंचि सारंगी वल्द कपूर सारंगी
9	28	764	0.12	उ0–रास्ता द0–764 पु0–763 प0–सी कर्रा	टॉड़ दो		
10	42	393	0.07	उ0–रास्ता द0–393 पु0–409 प0–391	टॉड़ दो	रैयती	एतवा धान वल्द रतन मुंडा
11	48	378	0.035	उ0–378 द0–रास्ता पु0–377 प0–383	टॉड़ दो	रैयती	दुखु बड़ाईक वल्द मनी बड़ाईक वो बेनी बड़ाईक वो बिरसा बड़ाईक वो बुधनाथ बड़ाईक पेशरान रघुनाथ बड़ाईक वो महली बड़ाईक वल्द मनी बड़ाईक वो मनी बड़ाईक वो धनी बड़ाईक पेशरान लक्ष्मण बड़ाईक
12	48	385	0.05	उ0– रास्ता द0–385 पु0–386 प0–385	टॉड़ दो		
13	48	621	0.09	उ0–रास्ता द0–621 पु0–624 प0–619	टॉड़ दो		
14	48	762	0.005	उ0–763 द0–762 पु0–755 प0–763	टॉड़ दो		
15	55	619	0.04	उ0–रास्ता द0–619 पु0–621 प0–620	टॉड़ दो	रैयती	गोंगा पाहन रुसवा पाहन वल्द स्व0 सलुवा पाहन
16	55	671	0.075	उ0–रास्ता द0–671 पु0– प0–672	टॉड़ दो		
17	60	353	0.07	उ0– 353 द0–रास्ता पु0–352 प0–354	टॉड़ दो	रैयती	शंकर कच्छप वो विष्णु कच्छप वो कृष्णा कच्छप वो वल्द रिझा उराँव कच्छप व सुरेश कच्छप वो श्याम सुन्दर कच्छप वल्द लडाउ उराँव वो अमृत कच्छप वल्द सुर्यनारायण कच्छप वल्द रिझा कच्छप वो रिझा कच्छप वो रामा कच्छप वो राकेश कच्छप पेशरान नन्दु उराँव वो अंगनी कच्छप पति नहना कच्छप
18	60	354	0.02	उ0– 354 द0–रास्ता पु0–353 प0–356	परती नाली		
19	60	746	0.10	उ0–746 द0–रास्ता पु0–754 प0–सी कर्रा	टॉड़ दो		
20	63	386	0.040	उ0–रास्ता द0–386 पु0–388 प0–385	टॉड़ दो	रैयती	चेरंगा होरो वो मनसिद्ध होरो पिता गोंगरा पाहन वो बलिया होरो पति सनिका होरो वो मांगु होरो वो जोहन होरो वो समीर होरो पिता रूसुवा पाहन वो मार्सेल होरो वो ख्रिस्टोफर होरो पिता हिलारियुस होरो सुधीर होरो वो सिलारियुस होरो वो जोहन होरो वो राकेश होरो पिता मिखाएल होरो वो उहरू होरो वो जेम्स होरो वो लड़ाउ होरो वो सुखराम होरो वो सरयु होरो पिता शिबु पाहन वो गंगा होरो पिता सलुवा होरो वो रंजीत होरो वो अजीत होर पिता कुशल होरो वो बोधन होरो वो अजीत होरो पिता बुधवा होरो वो गोंदला होरो वो घामा होरो वो पिसब होरो वो दशरथ होरो वो अलबर्ट होरो पिता बिरसा होरो वो रसई होरो वो मंगरा होरो वो रोशन होरो पिता चमरा होरो
21	63	409	0.03	उ0–रास्ता द0–409 पु0–412 प0–393	टॉड़ दो		
22	63	668	0.07	उ0–रास्ता द0–668 पु0–672 प0–626	टॉड़ दो		
23	64	97	0.28	उ0– 97 द0–रास्ता पु0– 90 प0– 100	दोन दो		
24	64	99	0.04	उ0– 99 द0–980 पु0–100 प0–101	दोन दो		
25	64	100	0.10	उ0– 100 द0–रास्ता पु0– 97 प0– 100	दोन दो		
26	64	417	0.085	उ0– रास्ता द0–417 पु0–रास्ता प0–416	टॉड़ दो		
27	66	101	0.01	उ0– 101 द0–980 पु0–99 प0–980	पत्थर नाला	गैरमजरूआ खास	लडाउ कच्छप पिता रीझा कच्छप
28	66	352	0.06	उ0– 352 द0–रास्ता पु0–980 प0–353	परती नाली		
29	82	854	0.01	उ0–रास्ता द0–854 पु0–620 प0–848	टॉड़ दो	रैयती	भुवेश बड़ाइक संतोष बड़ाइक पिता स्व0 जगन्नाथ बड़ाइक व सुष्कांत बड़ाइक लालदेव बड़ाइक वल्द महल बड़ाइक
30	85	624	0.05	उ0–रास्ता द0–624 पु0–625 प0–621	टॉड़ दो	रैयती	शंकर कच्छप वो विष्णु कच्छप वो कृष्णा कच्छप वो वल्द रिझा उराँव कच्छप व सुरेश कच्छप वो श्याम सुन्दर कच्छप वल्द लडाउ उराँव वो अमृत कच्छप वल्द सुर्यनारायण कच्छप वल्द रिझा कच्छप वो रिझा कच्छप वो रामा कच्छप वो राकेश कच्छप पेशरान नन्दु उराँव वो अंगनी कच्छप पति नहना कच्छप
31	95	392	0.08	उ0– 392 द0–रास्ता पु0–374 प0–376	टॉड़ दो	रैयती	सतीश बड़ाइक रंजित बड़ाइक वल्द महली बड़ाइक फुदो देवी पति महादेव बड़ाइक अशोक बड़ाइक सचिंदर बड़ाइक वल्द पूरण बड़ाइक
32	101	371	0.08	उ0– 371 द0–रास्ता पु0–371 प0–374	टॉड़ दो	रैयती	नरेश महतो वो दुर्गा महतो वो मन्टु महतो वो प्रदीप महतो पेशरान हरिलाल महतो
33	101	373	0.005	उ0– 373 द0–रास्ता पु0–371 प0–374	टॉड़ दो	रैयती	
34	101	374	0.06	उ0–374 द0–रास्ता पु0–373 प0–392	टॉड़ दो	रैयती	
35	103	413	0.14	उ0– रास्ता द0–413 पु0–414 प0–412	टॉड़ दो	रैयती	शिवशंकर प्रसाद वल्द रामनाथ महतो वो छवू महतो वो बलदेव महतो वल्द पुजु महतो वो झुबलू महतो वल्द बुधु महतो
36	103	414	0.005	उ0– रास्ता द0–413 पु0–415 प0–413	टॉड़ दो		
37	103	415	0.12	उ0– रास्ता द0–414 416 पु0–416 प0–414	टॉड़ दो		
38	103	416	0.12	उ0– रास्ता द0–416 पु0–417 प0–415	टॉड़ दो		
39	105	412	0.04	उ0– रास्ता द0–412 पु0–413 प0–409	टॉड़ दो	रैयती	रतन मुंडा वल्द बैलू मुंडा
40	107	388	0.0025	उ0–रास्ता द0–388 पु0–389 प0–386	टॉड़ दो	रैयती	लंगड़ू पाहन वगैरह
41	107	389	0.04	उ0– रास्ता द0–389 पु0–390 प0–388	टॉड़ दो		
42	108	390	0.06	उ0– रास्ता द0–390 पु0–391 प0–389	टॉड़ दो		
43	3	990	0.16	उ0–990 द0–रास्ता पु0–696 प0–991	टॉड़ दो	रैयती	बसंत सारंगी हुनकू सारंगी बिरंचि सारंगी वल्द कपूर सारंगी
44	15	991	0.10	उ0–754 द0–रास्ता पु0–990 प0–754	टॉड़ दो	रैयती	मनी बड़ाइक, धनी बड़ाइक, वल्द लक्ष्मण बड़ाइक व बेनी बड़ाइक, बिरसा बड़ाइक, बुधनाथ बड़ाइक वल्द रघु बड़ाइक
		कुल	3.2025				

यह अधिसूचना भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता का अधिकार अधिनियम 2013 (अधिनियम संख्या 30/2013), की धारा 11(1) के उपबन्धों के अधीन उन सभी व्यक्तियों के लिए जारी की जाती है, जिसका इससे संबंध हो। भूमि की योजना/ नक्शा का निरीक्षण जिला भू अर्जन पदाधिकारी, खूँटी के कार्यालय में किसी भी कार्य दिवस में किया जा सकेगा। समाहर्त्ता उक्त अधिनियम की धारा 12 में यथाउपबंधित एवं यथाविनिर्दिष्ट कार्यों के समुचित निष्पादन हेतु अपेक्षित किसी भूमि का सर्वेक्षण एवं उसकी प्रविष्टि करने किसी भूमि के किसी स्तर को मापने के लिए अवभूमि खोदने या भू वेधन छिद्र करने सहित सभी अन्य कार्यों के संचालन हेतु जिला भू अर्जन पदाधिकारी, खूँटी और उसके कर्मचारी को प्राधिकृत करते हैं।

अधिनियम की धारा 11(4) के अधीन कोई व्यक्ति जिला समाहर्ता के पूर्विक अनुमोदन के बिना इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से प्रारंभिक अधिसूचना में विनिर्दिष्ट भूमि का कोई अन्तरण यथा क्रय विक्रय नहीं करेगा या ऐसा कोई अंतरण नहीं करवायेगा या ऐसी भूमि पर कोई अवभार नहीं उत्पन्न करेगा। अधिनियम का धारा 15 के अधीन यथाउपबंधित इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से 60 दिनों के भीतर भू अर्जन की बाबत किसी प्रकार की आपत्तियां हितबद्ध व्यक्ति के द्वारा जिला भू अर्जन पदाधिकारी, खूँटी के समक्ष दर्ज की जा सकेगी।

ह0/–
उपायुक्त, खूँटी

PR 345609 Land Reforms (24-25)_D

समय संवाद

रात को जब आसमान में चांद निकला हो तब कभी-कभार छत पर जायें। आजकल बच्चे अंधेरे में सितारे देखना भूल गए हैं। अगर आप जरा सी मेहनत करें तो बच्चे आकाशगंगा, सप्तऋषि, ध्रुव तारा, चांद की सोलह कला आदि रोचक बातें जानने लगेगा। घर में कुछ गमले या छोटा सा उद्यान बना सकते हैं जिसमें अपने बच्चों की सहायता से कुछ पौधे लगाएं। इसमें बच्चों की मदद लें जैसे कि मिट्टी को खोदना, उसमें पौधे लगाना और उसमें रोजाना सुबह व शाम पानी देना। जब बच्चे अपनी आंखों के सामने बीज से नया पौधा निकलता देखेंगे तो उनको जिंदगी के बारे में अच्छा ज्ञान प्राप्त होगा। इससे उनका जिंदगी के बारे में सोचने -समझने का नजरिया भी बदलेगा।

बच्चों को प्रकृति से जोड़ने का प्रयास करें

मनोज शर्मा

बच्चे का मन एक कोरी स्लेट जैसा होता है। बच्चा जो देखता है वही करता है। आज के तकनीकी समय में बच्चे कंप्यूटर तथा मोबाइल ज्यादा पसंद करते हैं। अगर माता-पिता या अभिभावक जरा सा जागरूक होकर छोटी-छोटी कोशिश करते हैं तो बच्चों का प्रकृति से सुन्दर जुड़ाव भी बना सकते हैं। इससे उनकी प्रकृति के लिए संवेदनशीलता भी विकसित होगी। बच्चों को जब भी बात करने का मन हो तब एक-दो सवाल नियमित रूप से पेड़-पौधों, जंगल, पशु-पक्षी , घास-सब्जी आदि पर पूछें या उनसे जानें। कुछ ही दिनों में आप यह महसूस करेंगे कि बच्चा अब मशीन या बैटरी के खिलौने की तुलना में प्रकृति से जुड़ाव महसूस कर रहा है। बच्चे को एक खाली कॉपी दें। उससे यह आग्रह करें कि वह सिर्फ अपने देखे हुए पेड़, पत्ते, फूल, सब्जी, फल, चिड़ियां, पशु, बादल व आसमान इसमें बनाये। यह काफी लाभदायक सिद्ध होगा।

रात को जब आसमान में चांद निकला हो तब कभी-कभार छत पर जायें। आजकल बच्चे अंधेरे में सितारे देखना भूल गए हैं। अगर आप जरा सी मेहनत करें तो बच्चे आकाशगंगा, सप्तऋषि, ध्रुव तारा, चांद की सोलह कला आदि रोचक बातें जानने लगेगा। घर में कुछ गमले या छोटा सा उद्यान बना सकते हैं जिसमें अपने बच्चों की सहायता से कुछ पौधे लगाएं। इसमें बच्चों की मदद लें जैसे कि मिट्टी को खोदना, उसमें पौधे लगाना और उसमें रोजाना सुबह व शाम पानी देना। जब बच्चे अपनी आंखों के सामने बीज से नया पौधा निकलता देखेंगे तो उनको जिंदगी के बारे में अच्छा ज्ञान प्राप्त होगा। इससे उनका जिंदगी के बारे में सोचने -समझने का नजरिया भी बदलेगा। जिंदगी कितनी अमूल्य

होती है वह इसके बारे में भी जानेगा।

कभी समय हो तो आसपास किसी अभयारण्य में बच्चों को ले जायें। उनकी समझ बेहतर होगी। वे महसूस करेंगे कि कार्टून से भी बड़ी यह सचमुच की दुनिया कितनी सुंदर है। एक बहुत बड़ा लाभ यह होगा कि बच्चों की सोचने -समझने की क्षमता बढ़ेगी। शोधकताओं के अनुसार, चौबीस घंटे में कुछ मिनट अगर प्रकृति का सान्निध्य हो तो सकारात्मक ऊर्जा बनती है व उदासी मिट जाती है। अगर बच्चे समय निकाल सकें तो ओस की बूंदों का पत्तों पर मोती जैसा बन जाना, मिट्टी में खुद-ब-खुद उग आते मशरूम, छुई मुई के हरे पौधों को होले से छूने के बाद उनका सिकुड़ जाना उन्हें दिखायें। पहले-पहले तो महीने में एक बार भी अगर ऐसा अनुभव होगा तो बच्चे अपनी इस अद्भुत प्रकृति को देखकर रोमांचित हो जायेंगे। फिर वे बार बार फूल, पत्तों को देखना पसंद करेंगे। जानवरों, पौधों से जुड़ी कहावत बोलें तो बच्चे भी सीख लेंगे।

बच्चे अगर कार्टून कैरेक्टर के संवाद याद कर लेते हैं तो यह भी याद करेंगे,और अपने पर्यावरण को समझ लेंगे। मिसाल के तौर पर ऊंट के मुंह में जीरा, अब आया ऊंट पहाड़ के नीचे,बिल्ली के गले मे घंटी कौन बांधे, कुएं का मेंढक, हाथी मेरे साथी, शेर कभी घास नहीं खाता, शेर जैसा कलेजा है, मगरमच्छ के आंसू, चिड़ियां अपना घोसला खुद बनाती हैं ,गिरगिट की तरह रंग बदलना आदि। इससे कई लाभ होंगे व बच्चे की भाषा भी समृद्ध होगी। यह अनुभव उन्हें जीवन भर उनके काम आयेगा। **(पत्रकारिता विभाग रांची विवि)**

गुरु चरण की वंदना

स्वामी सत्यानंदजी परमहंस

सभी लोग महात्मा हो जायेंगे तो क्या होगा? यह प्रश्न बार-बार पूछा जाता है और स्वतः मन में भी उठता है। सवाल यह है कि अगर सभी लोग डाक्टर हो जाये तो क्या होगा? सभी लोग वकील हो जाये तो क्या होगा? यह प्रश्न ही गलत है। प्रकृति ने संसार की रचना ही इतने अच्छे ढंग से की है कि सा कोई -सा कुछ नहीं हो जाता है। महात्मा दर्शनानंद जी इस बात की व्याख्या बहुत अच्छे ढंग से कहते रहे। भक्ति में प्राथमिक स्थिति से विश्वविद्यालय तक की स्थिति बनती है। सभी को इस दिशा में प्रयास करना चाहिए कि वह यूनिवर्सिटी में पढ़ाई करें। चरण चलने का सूचक है,

बंदऊँ गुरू पद पदुम परागा

आखिर कौन सा कारण है कि तुलसीदास ने गुरू चरण की वंदना की है, उनके शरीर के बाकी अंग जैसे नाक, कान, मुंह, मस्तक आदि की वंदना नहीं की है। गुरूचरण की वंदना करने का कारण यह है कि गुरू जिस रास्ते पर चले हैं अथवा वे जिस रास्ते का अनुसरण किये है भक्तगण को उसी रास्ते पर चलना चाहिए। गुरू के रास्ते का अनुसरण करना चाहिए। गुरू ने जिस तरीके से ज्ञान भक्ति तथा वैराग्य धारण किया है तरीके को जानकर उसे अपनाना चाहिए। जीवन में धार्मिक ग्रंथों का ड़ा महत्व है, निम्नलिखित दर्शन धार्मिक ग्रंथ में पाये जाते हैं-

1. वेदांत दर्शन, 2. न्याय दर्शन 3. योग दर्शन 4. सांख्य दर्शन 5. वैशेषिक दर्शन 6. मीमांसा दर्शन। सांख्य दर्शन के प्रतिपादक कपिलमुनि है। सांख्य शब्द संस्कृत के शद साक्ष्य से बना है। साक्ष्य का शादिक अर्थ प्रमाण है। सांख्य में अनुसार ब्रह्म ज्ञान का द्योतक है। सांख्य का मतलब ब्रह्म ज्ञान का प्रमाण होता है। सांख्य दर्शन में ब्रह्म ज्ञान का वर्णन है। यह दर्शन समान मार्ग वालों की है। आसन, प्राणायाम, यम नियम, इत्यादि से ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति इस दर्शन से होता है एक बार राजा जनक ने यह अनुष्ठान किया था। उस यज्ञ में मुख्य पुरोहित याज्ञवलक्य जी थे। चारों तरफ से विद्वान तथा पंडित आये थे। उन्हीं विद्वानों में पांचाल क्षेत्रा की भार्गी थी। बहुत विद्वानों ने याज्ञवलय जी से प्रश्न पूछे वृहदारण्यक उपनिषद उन्हीं प्रश्नों का संग्रह है। याज्ञवलय जी से पूछा गया-पृथ्वी किससे आच्छादित है, उत्तर था जल। जल पृथ्वी के कण-कण में समाया है, निा जल के पृथ्वी टूट जाएगी। जल किससे आच्छादित है उत्तर था अग्नि, क्योंकि अग्नि में जल समाहित हो जाती है। अग्नि वायु से आच्छादित है, वायु आकाश से आच्छादित है। आकाश मन से आच्छादित है। जा तक मन की गति है आकाश है। जा मनुष्य सुषुप्त अवस्था में होता है तो आकाश का आभाष नहीं होता है। मन ब्रह्म में आच्छादित है, पर ब्रह्म किसी में आच्छादित नहीं है। यह पूछना अतिवाद है। ब्रह्म किसी से आच्छादित नहीं है, यह सर्वोच्च है। ब्रह्म का भाव ही ज्ञान है।

(ब्रम्ह्म विद्यालय आश्रम छोटका राजपुर, बक्सर बिहार)

लहसुन की चाय एक दवा

मिताली जैन

हेल्थ एक्सपर्ट बताते हैं कि लहसुन की चाय कोलेस्ट्रॉल कम करने में मदद करती है। जिसके कारण यह मधुमेह से जुड़े अन्य स्वास्थ्य जोखिमों को कम करता है।

लहसुन जिसका इस्तेमाल लगभग हर भारतीय किचन में किया जाता है, सदियों से अपने औषधीय गुणों के कारण स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी मानी जाती रही है। अमूमन घरों में लोग इसे कई तरीके से इस्तेमाल करते हैं। वैसे अगर किसी व्यक्ति को हाई ब्लड शुगर या हाई ब्लड प्रेशर की समस्या है तो उन्हें अपनी रेग्युलर चाय को लहसुन की चाय से स्विच कर देना चाहिए। **कम करे अमीनो एसिड होमोसिस्टीन**

हेल्थ एक्सपर्ट के अनुसार, अगर आप लहसुन की चाय का सेवन करते हैं तो इससे अमीनो एसिड होमोसिस्टीन को नेचुरली कम होता है। यह मधुमेह रोगियों के लिए एक बड़ा जोखिम कारक है। इस प्रकार लहसुन की चाय आपके स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

बेहतर प्रतिरक्षा तंत्र

हेल्थ एक्सपर्ट के अनुसार, किसी भी बीमारी से लड़ने के लिए शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली का मजबूत होना आवश्यक है। इस लिहाज से भी लहसुन की चाय आपके लिए लाभदायक है। यह एक शक्तिशाली एंटीबायोटिक पेय है, जो आपके संपूर्ण स्वास्थ्य और प्रतिरक्षा में सुधार करता है। इसके अलावा, लहसुन में विटामिन सी होता है, जो हमारी प्रतिरक्षा को बढ़ाने में मदद करता है और हमारे अंगों को कार्यशील और स्वस्थ रखता है।

भारतीय सनातन संस्कृति में मां सरस्वती

डॉ. उषा किरण

सरस ज्ञान जिसका हो या जिसमें हो, उसे सरस्वती कहा गया है । सरस्वती का शाब्दिक अर्थ है- जल से उत्पन्न । भारतीय संस्कृति में ब्रह्मा की शक्ति को सरस्वती के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसके अनुसार- अक्षय अमृत से परिपूर्ण ब्रह्मसर(ब्रह्मा का सरोवर), जो प्रकृति और उससे परे सभी क्रियात्मक शक्तियों का स्रोत है, जो संसार का मूल है, उसी सरोवर से देवी सरस्वती उत्पन्न है। इसी कारण इनका नाम है सरस + वती अर्थात उस अक्षय अमृत सरोवर से उफनकर निकली हुई देवी, जो आध्यात्मिक रूप से ब्रह्मा की शक्ति है और भौतिक रूप से एक पवित्र नदी। ऋग्वेद में सरस्वती सबसे अधिक पवित्र नदी के रूप में वर्णित है।

भारतीयों का विश्वास है कि यह नदी आज भी अदृश्य रूप से प्रवाहित होती है। सरस्वती को विद्या, ज्ञान और विवेक की देवी कहा गया है। इनका दुसरा नाम देवी वाणी भी है। मनुष्य के अन्दर जो ज्ञान है, वह वाणी के द्वारा ही व्यक्त किया जाता है, इसलिए इन्हें वाग देवता भी कहा गया है। ये कला एवं संगीत की देवी भी है, क्योंकि देवी सरस्वती की कृपा से स्वर, ग्राम, मूर्च्छना आदि संगीत सम्बंधी ज्ञान प्राप्त होते हैं ।

देवी सरस्वती को दुग्ध धवल वर्ण वाली, वीणा, पुस्तक धारण करनेवाली तथा जल के ऊपर कमल के आसन पर विराजमान रहने वाली कहा गया है। वीणा और पुस्तक इनके विशिष्ट चिन्ह है। देवी का श्वेत वर्ण उनके सत्व गुण का प्रतीक है । जल इस पृथ्वी का सार है, जो मन के सिद्धांत को प्रदर्शित करता है। सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से कमल के भी गूढ प्रतीकात्मक अर्थ हैं। मानव विग्रह के अन्तर्गत विभिन्न नाडी चक्रों को कमल की संज्ञा दी गयी है और मनस को सहस्त्रदल कमल कहा गया है। कमल को जीवन संगीत का सबसे महान प्रतीक कहा जाता है । सरस्वती का वाहन हंस है, जो हमें अन्तरिक्ष (मानव लोक से ब्रह्म लोक) तक ले जाता है। हंस को परमेश्वर का प्रतीक माना जाता है। जीव, जो परमात्मा का अंश माना गया है, उसे भी हंस कहा गया है। श्वेत वर्णीय हंस पवित्रता, स्वच्छता का प्रतीक है। हंस नीर- क्षीर विवेचन करता है।

देवी सरस्वती के चारों हाथों में वीणा, अक्षमाला, पुस्तक और अभयमुद्रा का प्रदर्शन का भी गूढ है। ये चारों पराशक्ति रूप वाणी के ही प्रतीक कहे गये हैं और ये शब्द की चार अवस्थाएं- परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी- को प्रदर्शित करते हैं, जिसके द्वारा देवी समस्त ब्रह्मांड पर नियंत्रण करती हैं ।

रक्षा बजट रिकॉर्ड 6.81 लाख करोड़ रुपये का हुआ: राजनाथ सिंह केन्द्रीय रक्षा मंत्री 2025-26 में रक्षा मंत्रालय को रिकॉर्ड 6.81 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं, जो पिछले वर्ष से 9.53% अधिक है। सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण के लिए 1.80 लाख करोड़ रुपये और घरेलू खरीद के लिए 1.12 लाख करोड़ रुपये रखे गए हैं। रक्षा पेंशन में 14% की बढ़ोतरी, ईसीएचएस के लिए 8,317 करोड़ रुपये। रक्षा अनुसंधान एवं विकास को 12% बढ़ावा मिलता है, जबकि तटरक्षक बल का पूंजीगत बजट 43% बढ़ जाता है। बीआरओ को 7,146 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। यह बजट राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करता है और 2047 तक पीएम मोदी के विकसित भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

बजट 2025-26 में आर्थिक गति तेज करने के उपाय मेडिकल और टूरिज्म पर भी फोकस

सीए गुरप्रीत कौर

जीएसटी में राहत से लेकर हाऊस प्रॉपर्टी टैक्स तक, जानें 5 बड़ी सौगातें

इनकम टैक्स छूट से लेकर सीनियर सिटिजन्स तक, बजट 2025 में टैक्स को फायदेमंद बनाया गया है।

निर्मला जी के वादे के अनुसार अगले हफ्ते वाले आने वाले नए इनकम टैक्स नियम का बेसब्री से इंतजार है, वादा यह है की यह नया नियम पुराने नियम से आधे शब्दों का प्रयोग करेगा यानि सरल होगा। आशा है की जीएसटी की तरह एक्ट, रूल्स के अलावाकरकुलस नोटिफिकेशन इत्यादि से जटिल होने की बजाय सच में सरल अधिनियम आये।

नई रेजीम में रिबेट की वजह से ज्यादा लोग नई प्रणाली में ही टैक्स भरना चाहेंगे, पुरानी प्रणाली को रद्द नहीं किया गया है जिससे करदाताओं को बेवजह भ्रान्ति होती है,

विकास और उन्नति की नजर से बजट प्रयत्नशील लगता है, एमएसई के लोन लिमिट्स को बढ़ाना, नई एससी एसटी कारोबारी महिलाओं को अतिरिक्त करलाभ, माइक्रो व्यवसाय को ५ लाख का क्रेडिट कार्ड, राज्यों का इनवेस्टमेंट फ्रेंडनेस इंडेक्स अच्छी सोच है।

2047 तक 100 जीवी न्यूक्लियर एनर्जी ट्रांजीशन का लक्ष्य सामने आया है, जो काफी महत्वकांशी है। भारतीय पोस्ट सेवा को एक नया चेहरा देकर पोस्ट नेटवर्क का एक बेहतरीन इस्तेमाल हो सकता है, इस पर ध्यान देना दिलचस्प है। केंद्रीय बजट 2025 ने टैक्सपेयर्स को राहत की सौगात दी है। सरकार ने न सिर्फ इनकम टैक्स में छूट दी है, बल्कि कई ऐसे बदलाव किए हैं, जिनसे आम आदमी की जिंदगी आसान होगी और ज्यादा बचत का मौका मिलेगा। आइए जानते हैं इस बजट की 5 बड़ी खुशखबरियां!

अब 4 साल तक भर सकते हैं संशोधित रिटर्न

पहले अगर रिटर्न में कोई गलती हो जाती थी तो उसे सुधारने के लिए सिर्फ 2 साल का समय मिलता था। लेकिन अब ये समयसीमा बढ़ाकर 4 साल कर दी गई है। मतलब, अब चिंता की कोई बात नहीं, आराम से रिटर्न में सुधार कर सकते हैं। टीडीएस और टीसीएस के नियमों में राहतकिरायाः अब किराए पर टीडीएस की सीमा 2.4 लाख रुपये से बढ़ाकर 6 लाख रुपये कर दी गई है। यानी अगर आप किराए पर प्रॉपर्टी दे रहे हैं तो आपको कम टैक्स देना पड़ेगा।विदेश में पैसा भेजने पर राहतः एलआरएस स्कीम के तहत विदेश में धन भेजने पर अब 10 लाख रुपये तक कोई बड़ी परेशानी नहीं होगी क्योंकि टीसीएस की सीमा 7 लाख से बढ़कर 10 लाख रुपये हो गई है।

टीसीएस भुगतान में देरीः अगर टीसीएस का भुगतान समय पर नहीं हुआ तो अब इसे अपराध नहीं माना जाएगा।

महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में पहचान दिलाने का उद्देश्य है।

इसके अलावा बजट में पीएम गतिशक्ति योजना की भी घोषणा की गई है, जिसके तहत निजी क्षेत्र को विभिन्न डेटा और मैप्स तक पहुंच प्रदान की जाएगी। इसका उद्देश्य परिवहन और कनेक्टिविटी में सुधार कर पर्यटकों की यात्रा को और अधिक सुविधाजनक बनाना है।

सरकार ने होमस्टे और छोटे होटल व्यवसायियों के लिए मुद्रा लोन योजना की घोषणा की है। इसके तहत छोटे व्यवसायियों को वित्तीय सहायता मिलेगी, जिससे वे पर्यटन उद्योग में प्रवेश कर सकेंगे और स्थानीय उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा। इसके साथ ही होटल उद्योग के लिए एक समान मानक की योजना बनाई जाएगी, जिससे भारतीय होटल उद्योग की गुणवत्ता में वृद्धि होगी। कुल मिलाकर, केंद्रीय बजट 2025 भारत के पर्यटन क्षेत्र के लिए विकास और समृद्धि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इन योजनाओं से पर्यटन उद्योग में रोजगार सृजन और स्थानीय अर्थव्यवस्था में सुधार होगा।

-सीए दिवलीन कौर

सरलीकृत अनुपालन

बजट 2025 कर अनुपालन को सरल बनाने, व्यक्तियों को लाभ पहुंचाने और प्रशासनिक बोझ को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

वेतनभोगी के अलावा अन्य व्यक्तियों के लिए वार्षिक बचत

लाभः नई कर व्यवस्था के तहत, व्यक्तियों को 62,400 का वार्षिक लाभ मिलता है।

मासिक बचतः इसका मतलब प्रति माह 5,200 की शुद्ध बचत है।

वेतनभोगी व्यक्तियों के लिए लाभ

वेतनभोगी व्यक्तियों के लिए अतिरिक्त लाभ- वेतनभोगी व्यक्ति भी ?75,000 की मानक कटौती के लिए पात्र हैं।

12.75 लाख तक कोई टैक्स नहींः 12,75,000 तक की आय वाले वेतनभोगी व्यक्तियों को कोई टैक्स नहीं देना होगा।

. मध्यम वर्ग के लाभ पर ध्यान

संभावित राजस्व हानि के बावजूद, सरकार का ध्यान मध्यम वर्ग आय वर्ग को राहत और लाभ प्रदान करने पर बना हुआ है।

सीनियर सिटिजन्स के लिए खुशखबरी

वरिष्ठ नागरिकों के लिए ब्याज पर टैक्स कटौती की सीमा 50,000 रुपये से बढ़ाकर 1 लाख रुपये कर दी गई है। यानी अब उन्हें ज्यादा ब्याज पर टैक्स छूट मिलेगी और बचत बढ़ेगी।

छोटे धर्मार्थ ट्रस्टों के लिए राहत

अब छोटे ट्रस्टों और संस्थाओं को बार-बार पंजीकरण की झंझट से राहत मिलेगी। पंजीकरण की अवधि 5 साल से बढ़ाकर 10 साल कर दी गई है, जिससे वे बिना किसी रुकावट के काम कर सकते हैं।

. दो घरों पर टैक्स छूट

अब अगर आपके पास दो घर हैं (दोनों आपकी अपनी प्रॉपर्टी हैं), तो उन पर टैक्स देने में आपको छूट मिलेगी। पहले, अगर आपकी प्रॉपर्टी खाली पड़ी रहती थी या किराए पर नहीं दी जाती थी, तब भी सरकार उसकी एक तय राशि पर टैक्स लेती थी। लेकिन अब सरकार ने ये नियम आसान कर दिया है। अब आपकी दो प्रॉपर्टी पर टैक्स नहीं लगेगा (उसे शून्य वार्षिक मूल्य माना जाएगा)। इसका मतलब है कि आपको ज्यादा टैक्स नहीं देना पड़ेगा और आपकी बचत बढ़ेगी।

मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा, 50 पर्यटन स्थलों का विकास, बौद्ध धर्मस्थलों का प्रसार; केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज भारत का केंद्रीय बजट 2025-26 पेश किया। वित्त मंत्री ने अपने बजट भाषण में पर्यटन को लेकर कई घोषणाएं कीं, जो देश के पर्यटन क्षेत्र के लिए एक नई उम्मीदों को लेकर आया है। इस बजट में पर्यटन क्षेत्र के विकास, रोजगार सृजन और आधारभूत संरचना को मजबूत बनाने पर जोर दिया गया है। आइए जानते हैं, केंद्रीय बजट 2025 में इस क्षेत्र के लिए क्या क्या कहा गया है।

पर्यटन स्थलों का विकास

सरकार ने भारत को दुनिया भर में एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में पहचान दिलाने की घोषणा की है। इसके लिए सरकार ने शीर्ष 50 पर्यटन स्थलों को राज्य सरकारों के सहयोग से विकसित करने की बात कही है। इसमें इन पर्यटन स्थलों की आधारभूत संरचना को बेहतर बनाने की दिशा में काम किया जाएगा, जिससे पर्यटकों के लिए अनुभव को और भी आकर्षक और आरामदायक बनाया जाएगा।इसके अलावा केंद्रीय बजट में पर्यटन स्थलों के विकास के लिए राज्य सरकारों के साथ मिलकर 22 प्रमुख स्थलों पर ध्यान केंद्रित करने की घोषणा की गई है। इस पहल का उद्देश्य इन स्थलों तक पर्यटकों की पहुंच को बढ़ाना है। ताकि अधिक से अधिक पर्यटक इन स्थलों पर आएं।

बसन्त पंचमी : प्रकृति और ज्ञान के संगम का पर्व

डॉ मेरी ग्रेस

बसंत पंचमी, प्रकृति और ज्ञान के संगम का पर्व है। यह त्योहार बसंत ऋतु के आगमन पर मनाया जाता है। इस दिन मां सरस्वती की पूजा की जाती है। बसंत पंचमी पर प्रकृति का खिलना और नई फसल आना भी देखा जाता है। बसंत पंचमी बहुआयामी त्योहार है जो बसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है और समृद्ध परंपराओं, कृषि महत्व और आध्यात्मिक प्रथाओं से भरा हुआ है। यह एक ऐसा दिन है जब प्रकृति की जीवंतता, देवी सरस्वती की भक्ति और कृषि समुदाय का जीवन उत्सव की एक खूबसूरत तस्वीर में एक-दूसरे से जुड़ जाता है।

माघ महीने में जब बसंत ऋतु का आगमन होता है तो इस महीने के पांचवें दिन यानी पंचमी को बसंत पंचमी के रूप में मनाया जाता है। शास्त्रों में बसंत पंचमी को ऋषि पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। बसंत उत्तर भारत तथा समीपवर्ती देशों की छह ऋतुओं में से एक ऋतु है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार माता सरस्वती जिन्हें विद्या, संगीत और कला की देवी कहा जाता है, उनका अवतरण इसी दिन हुआ था और यही कारण है कि भक्त इस शुभ दिन पर ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनकी पूजा करते हैं।

सभी शुभ कार्यों के लिए बसन्त पंचमी के दिन अत्यंत शुभ मुहूर्त माना गया है। बसन्त पंचमी को अत्यंत शुभ मुहूर्त मानने के पीछे अनेक कारण हैं। यह पर्व माघ मास में ही पड़ता है। माघ मास का भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से विशेष महत्व है। इस माह में पवित्र तीर्थों में स्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है। दूसरे इस समय सूर्यदेव भी उत्तरायण होते हैं। के रूप में मनाया जाता है।

बसन्त पंचमी का दिन सरस्वती जी की साधना को अर्पित ज्ञान का महापर्व है। शास्त्रों में भगवती सरस्वती की आराधना व्यक्तिगत रूप में करने का विधान है। किंतु आजकल सार्वजनिक पूजा-पाण्डालों में देवी सरस्वती की मूर्ति स्थापित कर पूजा करने का रिवाज चल पड़ा है। मां सरस्वती का प्रिय रंग पीला है। इसलिए उनकी मूर्तियों को पीले वस्त्र, फूल पहनाए जाते हैं। देश में लोग बसंत पंचमी पर पीले कपड़े पहन कर विद्या की देवी मां सरस्वती की वंदना मंत्र का उच्चारण कर उनकी पूजा करते हैं।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।

माघ महीने की शुक्ल पंचमी से बसन्त ऋतु का आरंभ होता है। फाल्गुन और चैत्र मास बसन्त ऋतु के माने गए हैं। फाल्गुन वर्ष का अंतिम मास है और चैत्र पहला। इस प्रकार हिंदू पंचांग के वर्ष का अंत और प्रारंभ बसन्त में ही होता है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है। मौसम सुहावना हो जाता है। पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं। सरसों के फूलों से भरे खेत पीले दिखाई देते हैं। अतः राग रंग और उत्सव मनाने के लिए यह ऋतु सर्वश्रेष्ठ मानी गई है।

ग्रंथों के अनुसार देवी सरस्वती विद्या, बुद्धि और ज्ञान की देवी हैं। अमित तेजस्विनी व अनंत गुणशालिनी देवी सरस्वती की पूजा-आराधना के लिए माघमास की पंचमी तिथि निर्धारित की गयी है। बसन्त पंचमी को इनका आविर्भाव दिवस माना जाता है। ऋग्वेद में सरस्वती देवी के असीम प्रभाव व महिमा का वर्णन है। मां सरस्वती विद्या व ज्ञान की अधिष्ठात्री हैं। ईश्वर को सृष्टि में कुछ कमी का अहसास हो रहा था लेकिन वह समझ नहीं पा रहे थे कि किस बात की कमी है। उन्हें पशु-पक्षी, मनुष्य तथा पेड़-पौधे सभी चुप दिखाई दे रहे थे। तब उन्हें आभास हुआ कि क्या कमी है। वह सोचने लगे कि ऐसा क्या किया जाए कि सभी बोलें और खुशी में झूमें। ऐसा विचार करते हुए ईश्वर ने अपने कमण्डल से जल लेकर धरती पर छिड़का। जल छिड़कने के बाद श्वेत वस्त्र धारण किए हुए एक देवी प्रकट हुई। इस देवी के चार हाथ थे- एक हाथ में वीणा, दूसरे हाथ में कमल, तीसरे हाथ में माला तथा चतुर्थ हाथ में पुस्तक थी। ईश्वर ने देवी को वरदान दिया कि तुम सभी प्राणियों के कण्ठ में निवास करोगी। सभी के अंदर चेतना भरोगी, जिस भी प्राणी में तुम्हारा वास होगा वह अपनी विद्वता के बल पर समाज में पूजनीय होगा। कड़कड़ाती ठंड के बाद बसंत ऋतु में प्रकृति की छटा देखते बनती है। झारखंड में पलाश के लाल फूल, आम के पेड़ों पर आए बौर, हरियाली और गुलाबी ठंड मौसम को सुहाना बना देती है। यह ऋतु सेहत की दृष्टि से भी बहुत अच्छी मानी जाती है। मनुष्यों के साथ पशु-पक्षियों में नई चेतना का संचार होता है। इस दिन पवित्र नदियों में स्नान का विशेष महत्व है। **(उर्सूलाइन इंटर कॉलेज,रांची)**

युद्ध की विभीषिका और अन्न की कमी

साभार : कार्टून मूवमेंट डॉट काम

स्पीड न्यूज

12वीं के छात्रों को दी गयी विदाई

रामगढ़। आर्मी पब्लिक स्कूल रामगढ़ कैंट में सत्र 2024-25 के कक्षा 12वीं के छात्र-छात्राओं के लिए समारोह आयोजित किया गया। विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों और सहपाठियों के साथ बिताया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत गीत से हुआ। जिसने पूरे माहौल को संगीतमय और उत्साहपूर्ण बना दिया। इसके बाद कक्षा 12वीं के छात्रों ने केक काटकर इस खास दिन का जश्न मनाया जो उनके विद्यालय जीवन के अंतिम उत्सवों में से एक था। इस विशेष दिन को और यादगार बनाने के लिए, कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों ने कई मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं, जिनमें समूह गीत, नृत्य, नाट्य प्रदर्शन और मनोरंजक खेल शामिल थे। इन मनोरंजक और भावनात्मक प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया और पूरे समारोह को जीवंत बना दिया। प्राचार्य ने अपने प्रेरणादायक आशीर्वचन के माध्यम से सभी विद्यार्थियों को जीवन में सफलता पाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने छात्रों को ईमानदारी, धैर्य और आत्मनिर्भरता के मूलमंत्र पर चलने की सीख दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

बजट से जनता को राहत:सूर्यवंश

रामगढ़। भारतीय जनता पार्टी रामगढ़ कैंट मंडल के अध्यक्ष सूर्यवंश श्रीवास्तव ने नरेंद्र मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के प्रथम बजट का स्वागत करते हुए कहा कि यह बजट मध्यमवर्गीय लोगों को बहुत ही राहत देने वाला है। 12 लाख तक के इनकम पर कोई टैक्स नहीं देने को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के दूरदर्शी नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त किया है। कहा कि यह बजट रोजगार के नए अवसर पैदा करेगा। लेदर स्कीम के जरिए 22 लाख नए रोजगार से आत्मनिर्भर भारत को आगे बढ़ाएगा। टूरिज्म को बढ़ावा देने से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। 5 साल में 75000 मेडिकल की सीट , आईआईटी में 6500 सीट बढ़ने से युवाओं के लिए अवसर बढ़ेंगे। पॉवर सेक्टर और माइनिंग पर जोर इससे रोजगार के नए द्वार खुलेंगे । देश भर में 200 कैंसर केयर सेंटर बनाए जाएंगे। सभी अस्पतालों में केयर सेंटर खुलने से स्वास्थ्य के क्षेत्र में बहुत बड़ी उपलब्धि होगी ।

बजट को भाजपा नेताओं ने सराहा

कुजू। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के द्वारा पेश किया गया बजट को भाजपा नेताओं ने गरीबों व मध्यम वर्ग परिवार के हित के लिए बेहतर बताया। बजट पर भाजपा ओबीसी मोर्चा के रांची महानगर प्रभारी जगेश्वर प्रजापति, भाजपा मांडू उपाध्यक्ष रतन प्रसाद साहू, महामंत्री अशोक कुमार, भाजयुमो मांडू मंडल अध्यक्ष रवि साहू, भाजपा मंत्री डिंपल प्रजापति, भाजपा नेता पंचित महतो आदि ने कहा कि बजट-2025 विकसित और हर क्षेत्र में श्रेष्ठ भारत के निर्माण की दिशा में मोदी सरकार की दूरदर्शिता का ब्लूप्रिंट है. किसान, गरीब, मध्यम वर्ग, महिला और बच्चों की शिक्षा, पोषण व स्वास्थ्य से लेकर स्टार्टअप, इनोवेशन और इन्वेस्टमेंट तक, हर क्षेत्र को समाहित करता यह बजट मोदी जी के आत्मनिर्भर भारत का रोडमैप है. वित्त मंत्री ने मिडिल क्लास को राहत देते हुए न्यू टैक्स रिजीम के तहत 12 लाख रुपये सालाना तक की इनकम को आयकर के दायरे से बाहर रखने का ऐलान किया। इससे नौकरीपेशा वर्ग के करोड़ों लोगों को फायदा होगा। इस सर्वसमावेशी और दूरदर्शी बजट के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को बधाई के पात्र है।

एस्पायर में टेस्ट सीरीज आयोजित

भुरकुंडा (रामगढ़)। रिभर साईड और पटेलनगर भुरकुंडा स्थित एस्पायर कोचिंग सेंटर में पिछले सप्ताह की भांति इसबार भी तृतीय टेस्ट सीरीज का आयोजन किया गया। इसमें सैंकड़ो छात्र-छात्राएं शामिल हुए। टेस्ट में आरआरबी, एनटीपीसी और एसएससी जीडी परीक्षा के पैटर्न पर प्रश्न पूछे गए। इसके तहत आरआरबी एनटीपीसी का 100 प्रश्न और एसएससी जीडी से संबंधित 80 प्रश्न शामिल परीक्षा में शामिल किये गये थे। मौके पर संस्था के निदेशक रत्नेश कुमार ने कहा कि ऐसे आयोजनो से विद्यार्थियों में बौद्धिक क्षमता का विकास होता है। साथ ही टाइम मैनेजमेंट की जानकारी मिलती है। उन्होंने कहा कि परिश्रम ही सफलता की कुंजी होती है। जीवन में सफलता पाने के लिए विद्यार्थियों को लक्ष्य का निर्धारण कर तैयारी करनी चाहिए। निदेशक श्री कुमार ने प्रतियोगिता छात्रों को सफलता का मूल मंत्र देते हुए कहा कि यह टेस्ट सीरीज शिक्षा के क्षेत्र में आपसबों के लिए मील का पत्थर साबित होगा। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले इच्छुक विद्यार्थी संपर्क कर नये बैच में जल्द से नामांकन करा लें।

सरस्वती विद्या मंदिर में दीक्षा समारोह

रजरप्पा। सरस्वती विद्या मंदिर रजरप्पा में दीक्षा समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कक्षा 11वीं के भैया बहनों ने कक्षा 12वीं के भैया बहनों को समारोह पूर्वक विदाई दी। कार्यक्रम के शुभारंभ प्रभारी मिथिलेश कुमार खन्ना के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।कार्यक्रम में कक्षा 11वीं के छात्र-छात्राओं ने अपने बड़े भैया-बहनों का तिलक लगाकर स्वागत किया। इस अवसर पर मिथिलेश कुमार खन्ना ने विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य की ओर अटूट निष्ठा और समर्पण से काम करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने शिक्षकों, माता-पिता और समाज के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करने का आग्रह किया।

मध्यम वर्ग को बड़ी राहत: सांसद

व्यापार व उद्योग जगत के लिए सकारात्मक संकेत : चेंबर

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत बजट 2025-26 को लेकर पूरे देश में चर्चाएँ जारी हैं। इस बजट को मध्यम वर्ग, किसान, युवा, महिला और उद्योग जगत के हितों को साधने वाला बजट बताया जा रहा है। बजट में जहां 12 लाख तक की आय को कर-मुक्त करने का ऐतिहासिक फैसला लिया गया है, वहीं किसानों और छोटे उद्यमियों के लिए भी बड़े ऐलान किए गए हैं। हालांकि, स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र में अपेक्षित निवेश की कमी पर कुछ वर्गों ने असंतोष भी जताया है। सांसद मनीष जायसवाल ने इस बजट को मध्यम वर्ग के लिए ऐतिहासिक राहत करार दिया। उन्होंने कहा कि 12 लाख रुपये तक की वार्षिक आय कर-मुक्त करने का निर्णय मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं को नई उड़ान देगा। उन्होंने इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की अर्थव्यवस्था को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में क्रांतिकारी कदम बताया। हजारीबाग की जनता की ओर से प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री को धन्यवाद देता हूँ।

हजारीबाग चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष शंभू नाथ अग्रवाल, उपाध्यक्ष सुबोध कुमार और सचिव राकेश ठाकुर ने बजट की सराहना करते हुए कहा कि छोटे कारोबारियों और स्टार्टअप्स के लिए सरकार की योजनाएं सराहनीय हैं। 5 लाख रुपये तक का बिजनेस क्रेडिट कार्ड छोटे उद्यमियों के लिए बड़ा सहारा बनेगा। नए उद्यमियों को 2 करोड़ रुपये तक का कर्ज अगले 5 वर्षों तक कम ब्याज दर पर मिलेगा।

किसानों के सशक्तिकरण के लिए बड़ा कदम: प्रदीप प्रसाद

इस बजट का हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने सहृदय स्वागत करते हुए इसे देश के आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए दूरदर्शी बजट बताया। उन्होंने कहा कि यह बजट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि बजट में युवा, गरीब, महिला और किसान इन चार प्रमुख स्तंभों पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिससे समाज का हर वर्ग सशक्त होगा और देश की अर्थव्यवस्था को नई गति मिलेगी। यह बजट आत्मनिर्भर भारत की नींव को और मजबूत करेगा और देश को विकास की नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा।

देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा आम बजट: रंजन चौधरी

सांसद मनीष जायसवाल के मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी ने इसे भारत की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने वाला और आधारभूत संरचना को सुदृढ़ करने वाला दूरदर्शी बजट बताया। यह बजट गरीब, युवा, वृद्ध, किसान और महिलाओं के उत्थान पर केंद्रित है।

युवाओं और किसानों पर विशेष ध्यान : शेफाली गुप्ता

भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने इस बजट को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि सरकार ने युवाओं को रोजगार देने और किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने पर विशेष ध्यान दिया है। किसान क्रेडिट कार्ड की सीमा बढ़ाकर 5 लाख रुपये कर दी गई है। घरेलू और इलेक्ट्रॉनिक सामान सस्ता करने का प्रावधान किया गया है। युवाओं को बड़े पैमाने पर रोजगार के नए अवसर दिए जाएंगे।

समावेशी बजट: चंद्र प्रकाश जैन

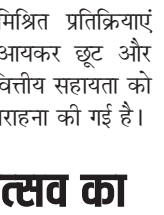

हजारीबाग यूथ विंग के संरक्षक चंद्र प्रकाश जैन ने इसे मध्यम वर्ग, किसान, युवा और महिलाओं के लिए संतुलित बजट बताया।इंफ्रास्ट्रक्चर और मैन्युफैक्चरिंग में बड़े निवेश से रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। प्रधानमंत्री धनधान्य योजना के तहत कृषि क्षेत्र को नई ताकत मिलेगी।हर घर को साफ पानी और सस्ती बिजली देने का लक्ष्य 2028 तक पूरा किया जाएगा।

विशेषज्ञों की रायः राहत और चुनौतियां दोनों मौजूद : आर्थिक विशेषज्ञों के अनुसार, आयकर में छूट से मध्यम वर्ग की क्रय शक्ति बढ़ेगी, जिससे अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी। हालांकि, कुछ विशेषज्ञों ने बढ़ते राजस्व घाटे पर चिंता व्यक्त की है और सरकार से राजस्व और व्यय के बीच संतुलन बनाए रखने की अपील की है। हालांकि, बजट को लेकर कुछ वर्गों ने असंतोष भी जताया है। स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र के लिए अपेक्षित बजट आवंटन नहीं हुआ। बजट 2025-26 को लेकर मिश्रित प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं। आयकर छूट और किसानों के लिए वित्तीय सहायता को लेकर बजट की सराहना की गई है।

बजट में विकसित भारत का संकल्प : राकेश प्रसाद

भुरकुंडा (रामगढ़)। लोकसभा में पेश किए गए बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा के झारखंड प्रदेश उपाध्यक्ष राकेश प्रसाद ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आर्थिक रूप से विश्व में तेज गति से मजबूत हो रहा है। हमारी भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया के सबसे ऊंचे पायदान पर होगी। उन्होंने कहा कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा लोकसभा में पेश किए गए बजट में विकसित भारत का संकल्प है। बजट में समावेशी विकास और हर वर्ग के लोगों को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प है। बजट में मध्यम वर्ग और नौकरी पेशा वालों के लिए 7 लाख रुपये आमदनी पर आयकर छुट को बढ़ाकर 12 लाख रुपये कर देना अभूतपूर्व कदम है। किसान क्रेडिट कार्ड के लिमिट को 5 लाख तक बढ़ाने से देश के किसानों को बड़ा लाभ होगा। भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष श्री प्रसाद ने जनकल्याणकारी बजट के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं वित्त मंत्री को बधाई देते हुए उनके प्रति आभार प्रकट किया है।

मध्यम वर्ग को राहत: अजीत गुप्ता

बजट को भाजपा नेता अजीत गुप्ता ने मध्यम वर्ग को राहत पहुंचाने वाला बताया। कहा कि में युवा, किसान, व्यवसाय , केंद्रीय कर्मचारी ,बुजुर्गों ,महिलाओं बच्चों सभी को ध्यान रखा गया है। इसलिए बजट संतुलित है।

बजट मुरारीलाल का सपना : धर्मराज राम

कुजू। कांग्रेस प्रदेश सचिव धर्मराज राम ने वित मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किये गये बजट को सिर्फ मुरारीलाल के सपने जैसा बताया। उन्होंने कहा कि हर बार सिर्फ युवाओं को रोजगार देने की बात कहते हैं, लेकिन छात्र लगातार धरने पर बैठ रहे हैं। किसानों की बात करते हैं, पिछले 12 वर्षों में किसानों की आत्महत्या का ग्राफ बढ़ता ही रहा है। यहां तक कि उनलोगों को देशद्रोही आतंकवादी नाम दिया गया है। आम आदमी की महंगाई से कमर टूट गई है। किताबों और दवाओं पर 18-18 प्रतिशत टैक्स लगाया जा रहा है, और हीरों जेवरातो में 5 प्रतिशत टैक्स लगाया जाता है। यह गरीब विरोधी बजट है। यह सरकार पूरी तरह से विफल हो गई है। इनलोगों को नैतिकता के नाते इस्तीफा देना चाहिए।

होटल उत्सव का उद्घाटन आज

भुरकुंडा (रामगढ़)। मेन रोड भुरकुण्डा स्थित राज नर्सिंग हॉम के बगल में 2 फरवरी रविवार को सुबह 11 बजे उत्सव मैरेज हॉल में होटल उत्सव फेमिली रेस्टोरेंट का भव्य उद्घाटन होगा। उक्त जानकारी देते हुए रेस्टोरेंट के प्रोपराइटर डॉ. राजेंद्र महतो ने कहा कि शादी-विवाह, रिंग सेरेमनी, बर्थ डे पार्टी, शादी का साल गिरह एवं सभी तरह के पार्टी के लिए क्षेत्रवासी मो. 9905746368 पर सम्पर्क करें। हमारे रेस्टोरेंट में ठहरने के लिए किफायती दर पर रूम की व्यवस्था के साथ-साथ खाने में भेज एवं नन भेज की समुचित व्यवस्था है। उन्होंने कहा कि उचित मूल्य व लजीज व्यंजनों के साथ-साथ यहां सभी तरह की सुविधाएं उपलब्ध है। ग्राहकों के सुविधाओं का यहां पूरा ख्याल रखा जायेगा। ग्राहकों की संतुष्टि ही हमारे प्रतिष्ठान की पहचान भी होगी।

चौपारण में वाहनों की आवाजाही शुरू

हजारीबाग। प्रयागराज महाकुंभ के कारण बिहार-झारखंड सीमा पर चल रहे 72 घंटे के जाम में शनिवार को आंशिक राहत मिली है। दिल्ली-कोलकाता राष्ट्रीय राजमार्ग (जीटी रोड) पर स्थित चौपारण के चोरदाहा चेक पोस्ट पर छोटी गाड़ियों की आवाजाही शुरू हो गई है, लेकिन बड़े वाहनों की आवाजाही पर अभी भी प्रतिबंध जारी है। उत्तर प्रदेश द्वारा सभी राज्यों से आने वाले वाहनों के लिए सीमाएं सील करने के बाद बिहार ने भी जीटी रोड से जुड़े राज्यों की सीमाओं को बंद कर दिया था। हालांकि, बाद में छोटी गाड़ियों के लिए प्रतिबंध हटा लिया गया। छोटी गाड़ियां वैकल्पिक मार्गों का उपयोग कर रही हैं, जबकि बड़े वाहन अभी भी जीटी रोड पर फंसे हुए हैं। चौपारण थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश ने लोगों से जीटी रोड पर आने से बचने की अपील की है। उत्तर प्रदेश द्वारा सीमाएं खोलने के बाद ही बिहार बड़े वाहनों के लिए प्रतिबंध हटाएगा। स्थानीय पुलिस और चोरदाहा चेक पोस्ट के अधिकारी यातायात को सुचारू करने में जुटे हुए हैं और स्थिति पर लगातार नजर रख रहे हैं। उल्लेखनीय है कि महाकुंभ से लौट रहे लोग यूपी की जाम से निकले तो बरही-चौपारण के बीच महाजाम में फंस गए। यहां शुक्रवार तक गाड़ियों की 35 किमी से ज्यादा लंबी कतार लग गई थी। दरअसल, यहां चार दिन से जाम की स्थिति थी।

रामगढ़ में परीक्षा केंद्रों की मजिस्ट्रेट करेंगे निगरानी

रामगढ़। 11 फरवरी से शुरू होने वाले मैट्रिक और इंटर की परीक्षा में सुरक्षा व्यवस्था काफी कड़ी होगी। शनिवार को रामगढ़ एसडीओ अनुराग कुमार तिवारी ने जिले के सभी अंचल अधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी और दंडाधिकारियों की मौजूदगी में बैठक की। इस समीक्षा के दौरान उन्होंने परीक्षा केंद्रों की सुरक्षा में मुस्तैद रहने का निर्देश दिया। किस तरीके से दंडाधिकारियों की प्रतिनियुक्ति रहेगी, प्रश्न पत्र कैसे समय पर परीक्षा केंद्रों पर पहुंचेगा और उत्तर पुस्तिका को जमा कराया जाएगा, इस पर विचार विमर्श किया गया। एसडीओ ने बताया कि परीक्षा केंद्र पर दंडाधिकारी हर समय मौजूद रहेंगे। सुरक्षा पदाधिकारियों के साथ तालमेल बैठाकर शांतिपूर्ण माहौल में कदाचार मुक्त परीक्षा संपन्न करनी है।

चरण चिह्न मंदिर में आज से भक्ति की बयार बहेगी

खबर मन्त्र संवाददाता

बसंत पंचमी पर सोमवार को गुलाल व पुष्प की खेली जायेगी होली

कुजू। वसन्तोत्सव के अवसर पर कुजू बंदरा चूंआ स्थित चैतन्य महाप्रभु चरण चिह्न मंदिर में रविवार से भक्ति की धारा बहेगी। मंगल घट स्थापना, अधिवास कीर्तन के बाद अखंडनाम कीर्तन का आयोजन होगा। 3 फरवरी को वसन्त पंचमी को बृजधाम की तर्ज पर रंग, गुलाल व पुष्पों की होली खेली जाएगी। महाप्रभु जी की लीला स्थली चरण पहाड़ी में ब्रजधाम व नवद्वीप से सन्त, महंत व गायन कलाकरों की टीम पहुंच गई है। इस बीच शनिवार को पत्रकार वार्ता में ब्रजधाम वृंदावन-गोवर्धन की परिक्रमा के राधाकुंड श्यामकुंड स्थित 500 साल पुरानी चैतन्य महाप्रभु के शिष्य श्रीपाद रघुनाथ दास गोस्वामी गद्दी के गद्दीनशीन पीठाधीश्वर महंत केशव दास महाराज ने बताया कि श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु का नवद्वीप धाम से जगन्नाथपुरी व झारखण्ड होते हुए 540 वर्ष पूर्व बृज में आगमन हुआ है। जब वे बृजधाम के लिए गए तो झारखंड की चरण पहाड़ियों में मानव को ही नहीं बल्कि जीव जंतुओं को भी प्रेम तत्व प्रदान किया है। ठाकुर जी की महिमा अपरंपार है। आज भी चरण पहाड़ी में श्रीकृष्ण पावन अवतार चैतन्य महाप्रभु के चरण चिन्ह व लीलाएं मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि चरण पहाड़ी धाम का आध्यात्मिक दृष्टि भौतिक विकास होना जरूरी है। हमारे इन प्राचीन तीर्थ स्थलों का विकास होगा, तभी हमारी सनातन संस्कृति जीवित रहेगी। कार्यक्रम के आयोजक चरण चिन्ह मंदिर धाम के महंत प्रेम दास महाराज ने बताया कि वैष्णवजन महाप्रभु की लीलाओं का पुनः अनुसरण कर रहे हैं। मंगल घट स्थापना, अधिगास व अखंड नाम कीर्तन के बीच नगर परिक्रमा ढप, ढोलक, मृदङ्ग की धुन पर लगाई जाएगी। 3 फरवरी को दोपहर 11 बजे महाप्रभु की लीला में ठाकुरजी की 64 महंत के भोग लगाए जाएंगे। इसके बाद होली पर्व का आगाज होगा और इस बीच फाग भजनों की धुन पर भक्तों के बीच रंग, गुलाल व फूलों की होली खेली जाएगी। भंडारे में हजारों भक्त प्रसाद ग्रहण करेंगे। सन्त नन्द गोपाल दास ने बताया कि महाप्रभु जी के छह शिष्य हुए हैं। वे सदा कृष्ण प्रेम में रमे रहते और मुख से कृष्ण-कृष्ण कीर्तन करते हुए बढ़ते थे । आज भी बृजधाम में चैतन्य महाप्रभु के छह शिष्यों में से राधाकुंड में श्रीपाद रघुनाथ दास गोस्वामी गद्दी स्थापित है। जिसके पीठाधीश्वर महंत चरण पहाड़ी धाम आये हैं। उन्होंने बताया कि जिस तरह वर्तमान में सनातन धर्म व संस्कृति रक्षा के लिए देश में उत्तर से लेकर दक्षिण तक काम हुआ है, झारखंड की सरकार को भी इस तरह काम करना चाहिए। चरण पहाड़ी धाम पहुंचने वाला रास्ता सरल व सुगम होना चाहिए। इस अवसर पर चैतन्य महाप्रभु चरण चिन्ह मन्दिर के महन्त प्रेम दास महाराज, नन्द गोपाल दास महाराज, प्रेमचंद, पत्रकार कृष्णचन्द्र दुबे, विनोद ठाकुर, माधव दास, छैल बिहारी दास, राजेश अग्रवाल आदि थे।

एक नजर में

जयनारायण मेहता व सरिता देवी को श्रद्धांजलि

इचाक। प्रखंड के प्रसिद्ध समाजसेवी स्व. जयनारायण मेहता एवं उनकी धर्मपत्नी स्व. सरिता देवी की पुण्यतिथि शनिवार को उनके समाधि स्थल और उच्च विद्यालय बरकाखुर्द में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। स्व. जयनारायण मेहता, स्वतंत्रता सेनानी स्व. रुद्रनारायण मेहता के पुत्र थे और उन्होंने समाजसेवा व शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया था। श्रद्धांजलि सभा में जिला परिषद अध्यक्ष उमेश प्रसाद मेहता, भाजपा जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह, वरिष्ठ नेता बटेश्वर मेहता, भाजपा जिला महामंत्री शिव प्रसाद मेहता, मुखिया संजू कुमारी, स्व. मेहता के पुत्र ओमप्रकाश मेहता, श्रीकांत मेहता, पुत्रबधू संजू कुमारी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि उमेश प्रसाद मेहता ने कहा कि व्यक्ति का गुण कभी भुलाया नहीं जाता और स्व. जयनारायण मेहता का समाज के प्रति समर्पण सदैव प्रेरणा देगा। भाजपा जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह ने कहा कि पुण्यतिथि उन्हीं का मनाया जाता है जिन्होंने समाज के लिए विशेष योगदान दिया हो। वरिष्ठ नेता बटेश्वर मेहता ने उनकी शिक्षा और समाजसेवा में भूमिका की सराहना की। भाजपा किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष इन्द्रनारायण कुशवाहा ने कहा कि स्व. मेहता का सपना तभी पूरा होगा जब उनके परिजन उनके दिखाए मार्ग पर चलेंगे। इस अवसर पर कई सामाजिक एवं राजनीतिक हस्तियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

सरस्वती पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक

इचाक। सरस्वती पूजा को शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण माहौल में संपन्न कराने के उद्देश्य से शनिवार को इचाक थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता बीडीओ संतोष कुमार ने की, जबकि संचालन थाना प्रभारी संतोष कुमार सिंह ने किया। बैठक में प्रखंड विकास पदाधिकारी संतोष कुमार ने स्पष्ट रूप से निर्देश दिया कि पूरे प्रखंड में चलंत डीजे पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। उन्होंने कहा कि प्रशासन उन पूजा समितियों को हर संभव सहयोग करेगा, जो शांतिपूर्ण और नियमों के अनुरूप सरस्वती पूजा का आयोजन करेंगी। थाना प्रभारी संतोष कुमार सिंह ने पूजा आयोजकों से आग्रह किया कि वे सरकारी दिशानिर्देशों का पालन करते हुए सौहार्दपूर्ण माहौल में उत्सव मनाएं। उन्होंने आयोजक समिति के अध्यक्ष, सचिव सहित पांच प्रमुख सदस्यों और डीजे साउंड मालिकों के नाम एवं मोबाइल नंबर इचाक थाना में जमा करने का निर्देश दिया। साथ ही, डीजे संचालकों को शपथ पत्र जमा करने को कहा गया। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि अश्लील गाने बजाने या सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक और भड़काऊ पोस्ट करने पर कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। बैठक में मुखिया संघ के जिला अध्यक्ष रंजीत कुमार, बीस सूत्री अध्यक्ष मनोहर राम, उप प्रमुख सत्येंद्र कुमार, पंसस विनय उर्फ विक्की धवन, राजद नेता शत्रुघ्न राम, मोहम्मद हकीक, गजेंद्र प्रजापति, राजेंद्र मेहता, विनोद यादव, छोटन राणा, बबलू मेहता, विजय मेहता सहित कई पूजा समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

बीएम मेमोरियल स्कूल में छात्रों को दी गयी विदाई

बड़कागांव। बीएम मेमोरियल स्कूल में कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर अपने सीनियर्स को यादगार विदाई दी। समारोह की अध्यक्षता प्रधानाध्यापक कैलाश कुमार ने की, जबकि संचालन कक्षा 9 की छात्रा नंदनी कुमारी और माही गुप्ता ने शेरो-शायरी के साथ किया। कार्यक्रम में निर्देशक संदीप कुशवाहा ने विद्यार्थियों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वे जहां भी जाएं, अपने विद्यालय और परिवार का मान-सम्मान बनाए रखें। उन्होंने छात्रों से मैट्रिक परीक्षा में बेहतरीन प्रदर्शन कर अपने गांव, प्रखंड और जिले का नाम रोशन करने का आह्वान किया। इस अवसर पर उपनिदेशक पिंटू कुशवाहा दिनकर, प्राचार्य कैलाश कुमार, उपप्राचार्य पूनम कुमारी, शिक्षक चेयरमैन रंजीत कुमार सहित विद्यालय के कई शिक्षक-शिक्षिकाएं और सैकड़ों छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न नृत्य, गायन और भाषण प्रस्तुत किए गए, जिसने माहौल को भावनात्मक और आनंदमय बना दिया। कार्यक्रम के अंत में कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों को आशीर्वचन देकर उनके सुखद भविष्य की कामना की गई।

कटकमदाग थाना में शांति समिति की बैठक

कटकमदाग। सरस्वती पूजा को शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण माहौल में संपन्न कराने के उद्देश्य से कटकमदाग थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता थाना प्रभारी पंकज कुमार ने की, जिसमें विभिन्न पूजा समितियों के सदस्य, जनप्रतिनिधि और गणमान्य लोग उपस्थित थे। बैठक के दौरान थाना प्रभारी पंकज कुमार ने स्पष्ट रूप से कहा कि सरस्वती पूजा विसर्जन के दौरान चलंत डीजे बजाने पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। उन्होंने सभी पूजा समितियों से आग्रह किया कि वे प्रशासन के निदेशों का पालन करें और शांतिपूर्ण ढंग से पूजा एवं विसर्जन संपन्न कराएं। उन्होंने लोगों से नशा मुक्त वातावरण बनाए रखने की भी अपील की और अभिभावकों से अनुरोध किया कि वे अपने बच्चों को नशा से दूर रखने के लिए ठोस कदम उठाएं। उन्होंने कहा कि अगर किसी भी विसर्जन जुलूस के दौरान डीजे बजाया जाता है, तो उसे तत्काल जब्त कर लिया जाएगा और संबंधित व्यक्तियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। बैठक में बीस सूत्री अध्यक्ष सुनील कुमार ओझा, भाजपा किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष इंद्र नारायण कुशवाहा, वार्ड पार्षद दीपक कुमार सिंह, विनय कुमार सिंह, अख्तर नूरी, दिनेश तुरी, अजय कुमार, मोहम्मद इमरान, संजय राणा और अभिषेक कुमार सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

शिक्षक रत्नेश्वर नाथ पाठक को दी गयी विदाई

हजारीबाग। मध्य विद्यालय कंडसार में गणित के लोकप्रिय शिक्षक रत्नेश्वर नाथ पाठक के सेवानिवृत्ति के अवसर पर बच्चों, शिक्षकों और गणमान्य अतिथियों ने उन्हें सम्मानपूर्वक विदाई दी। कार्यक्रम की शुरूआत प्रधानाध्यापिका संध्या कुमारी द्वारा श्री पाठक को बुके और मानपत्र भेंट कर स्वागत करने से हुई। विद्यालय की नन्ही छात्रा अवनी कुमारी ने तिलक लगाकर सभी अतिथियों का अभिनंदन किया। इसके बाद बच्चों ने गीत, नृत्य और संगीत के माध्यम से रंगारंग प्रस्तुति दी, जिससे माहौल भावुक हो गया। विद्यालय परिवार ने श्री पाठक के तीन दशकों के बेदाग और समर्पित सेवाकाल की सराहना की और उन्हें अन्य शिक्षकों के लिए प्रेरणास्त्रोत बताया। इस अवसर पर कंडसार पंचायत के उप मुखिया राकेश सिंह, वरिष्ठ शिक्षक सुनील कुमार, सुधीर कुमार यादव, शिक्षिका रीना कुमारी, संजू कुमारी, लक्ष्मी नारायण सिंह, ब्रेक थ्रू संस्था के अविनाश कुमार, पत्रकार अखौरी ब्रजेश सहाय, मनोज मिश्र, प्रमोद उपाध्याय, डॉ. अमरनाथ पाठक सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। भावुक क्षण तब आ गया जब बच्चे और शिक्षक फूट-फूट कर रो पड़े। श्री पाठक की पत्नी सीमा पाठक, बेटी अदिति स्नेहा, बहू प्रियंका मिश्रा पाठक, पोता आयुष्मान पाठक सहित अन्य परिजन भी इस भावनात्मक समारोह के साक्षी बने।

वसंत के शब्दशिल्पी महाप्राण निराला

मुरलीधर

ऋतुराज वसंत का आगमन हो चुका है। मधुरिमा, सरसता एवं हरीतिमा से सुसज्जित धरा के कण कण में सौन्दर्य प्रस्फुटित हो रहा है। प्राणवंत प्रकृति का लावण्य चतुर्दिक निखर उठा है। वसंत ने सारी सृष्टि में मधुर संगीत भर दिया है। वन उपवन कोयल की कूक से आह्लादित हो रहे हैं । रंग और सुगंध से सराबोर वसंत के आगमन पर रसप्लावित धरित्री संगीतमय हो झूम रही है। जब जब वसंत ऋतु आती है तब तब हिन्दी साहित्य रसिकों की चेतना में महाप्राण कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की ये पंक्तियां गूंजने लगती हैं

सखि, वसंत आया।
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया।
किसलय-वसना नव-वय लतिका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु पतिका
मधुप-वृंद बंदी
पिक-स्वर नभ सरसाया।

वसंत ऋतु निराला की धड़कनों में बसती थी । निराला ने 'हिंदी के सुमनों के प्रति पत्र' कविता में लिखा भी है झ मैं ही वसन्त का अग्रदूत। वसंत पर निराला ने श्रेष्ठतम गीत लिखे हैं। घनघोर अभावों का सामना करने के बावजूद उनकी चेतना में वसंत की महक विद्यमान रही। अपने अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य से सबको सम्मोहित करती वसंत ऋतु के समान ही निराला ने अपनी अनुपम कविताओं से हिंदी साहित्य जगत को सम्मोहित किया।

वसंत पंचमी के साथ महाकवि निराला का अप्रतिम लगाव था। वाणी के वरद पुत्र कविवर 'निराला का जन्मदिन भी वसंत पंचमी को ही मनाया जाता है। उनका जन्म वैसे तो माघ शुक्ल एकादशी, संवत 1955 तदनुसार इक्कीस फरवरी 1899 ई. को हुआ था, लेकिन उन्होंने स्वेच्छा से वसंत पंचमी को अपना जन्म दिन घोषित किया था। 1930 ई. में गंगा पुस्तकमाला के प्रकाशक दुलारे लाल भार्गव ने वसंत पंचमी के दिन गंगा पुस्तकमाला का महोत्सव और अपना जन्मदिन मनाया था । इस अवसर पर निराला ने भी एक निबंध पढ़ा। डॉ.रामविलास शर्मा बताते हैं कि उन्होंने देखा कि दुलारेलाल भार्गव वसंत पंचमी को अपना जन्मदिवस मनाते हैं। उन्होंने निश्चय किया कि वह भी वसंत पंचमी को ही पैदा हुए थे। वसंत पंचमी सरस्वती पूजा का दिन, निराला सरस्वती के वरद् पुत्र, वसंत पंचमी को न पैदा होते तो कब पैदा होते? नामकरण संस्कार से लेकर जन्मदिवस तक निराला ने अपना जन्मपत्र नए सिरे से लिख डाला। भाग्य के लेख को बदलने की कवि की इस अद्भुत जिद के कारण ही गंगा प्रसाद पांडेय ने 'निराला' को महाप्राण कहा था।

वसंत के जितने मोहक काव्य चित्र निराला ने प्रस्तुत किये हैं उतने शायद ही किसी ने किये हो। वसंत अपने पूरे रंग वैभव के साथ उनके गीतों में नज़र आता है। वसंत में धरती पग पग रंग जाती है; वृक्षों के अंतस की लालिमा निखर जाती है। वसंत की सुषमा का यह अनूठा चित्र द्रष्टव्य है

रंग गई पग-पग धन्य धरा
हुई जग जगमग मनोहरा।
वर्ण गंध धर, मधु-मरन्द भर
तरु उर की अरुणिमा तरुणतर
खुली रूप कलियों में पर भर
स्तर-स्तर सुपरिसरा।
गूंज उठा पिक-पावन पंचम
खग-कुल-कलरव मृदुल मनोरम,
फूलों के आनन आनन में
फूटे रंग वासंती, गुलाबी,
लाल पलास, लिए सुख, स्वाबी,
नील, श्वेत शतदल सर के जल,
चमके हैं केशर पंचानन में।

वसन्त में जब कोयल बोलती है तो उसके स्वर की मादकता हमारी नस नस में घुल जाती है। प्राणों के भीतर अनहदनाद गुंजरित होने लगता है। कवि लिखता है

एनके
सुख
के भय कांपती प्रणय-क्लम
वन श्री चारुतरा।

सृष्टि के कण-कण में छिपा सौंदर्य वसंत के रंग-बिरंगे फूलों के भीतर प्रस्फुटित हो उठा है। ऐसा लगता है मानो फूलों के चेहरों पर कूची फिरा दी गई हो

कूची तुम्हारी फिरी कानन में
कुंज-कुंज कोयल बोली है,
स्वर की मादकता घोली है।
कांपा है घन पल्लव-कानन,
गूंजी गुहा श्रवण-उन्मादन,
तने सहज छादन-आच्छादन,
नस ने रस-वशता तोली है।

स्नेह से सिंचित करने वाली ऋतु है वसन्त। इसके आगमन मात्र से हमारी रगों में उल्लास का संचार होने लगता है। रसोद्रेक का चमत्कारिक प्रभाव प्रकृति में इस प्रकार परिलक्षित होने लगता है

फिर बेले में कलियां आई।
डालों की अलियां मुस्काई।
सींचे बिना रहे जो जीते,
स्फीत हुए सहसा रस पीते
नस-नस दौड़ गई हैं खुशियां
नैहर की कलियाँ लहराई।

कवि जीवन भर अभावों के भीषण दंश झेलता रहा मगर जीवन में बीते कुछ वासंती क्षणों को भूल नहीं पता है। कवि के जीवन में वसन्त की मधुरिमा लेकर पहले तो उनकी सहचरी मनोहरा देवी आई, बाद में लाडली बिटिया सरोज वसंतवत आई। कवि की ये वासंती स्मृतियाँ 'सरोज-स्मृति' कविता में इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है।

देखा मैंने, वह मूर्ति धीति
मेरे वसंत की प्रथम गीति-
श्रृंगार, रहा जो निराकार,
रस कविता में उच्छ्वसित धार
गाया स्वर्गीय प्रिया-संग-
भरता प्राणों में राग झ रंग,
रति रूप प्राप्त कर रहा वही,
आकाश बदलकर बना मही।

उनकी अनेक कविताओं में वसन्त की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती का स्तवन किया गया है। सरस्वती की आराधना करके शब्दों को सार्थकता प्रदान करने वाले निराला के अंतर्मन में सरस्वती और वसंत दोनों रमे हुए हैं। निराला की कविता वसंत के सौंदर्य रूप तथा सरस्वती के रस रूप की उपासना है। महाकवि माघ ने लिखा था- क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयताया?। वसंत और सरस्वती दोनों ही पल प्रतिपल नवीनता के द्योतक हैं

नव गति, नव लय, ताल छंद नव
नवल कंठ, नव जलद मंद्र रव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर नव स्वर दे!

मां शारदा का वसंत पर अतिशय अनुराग है। वसंत की सुसज्जित माला धारण कर वह वरदायिनी बनती है।

वरद हुई शारदा जी हमारी पहनी वसंत की माला संवारी।

निराला ने 1920 के आस-पास अपनी साहित्यिक यात्रा शुरू की। वीणावादिनी के इस वरद पुत्र ने 1961 तक अनवरत लिखते हुए अनेक कालजयी रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। 'अनामिका, ' 'परिमल', 'गीतिका', 'द्वितीय अनामिका', 'तुलसीदास', 'अणिमा', 'बेला', 'नए पत्ते', 'गीत कुंज, 'आराधना', 'सांध्य काकली', 'अपरा' जैसे काव्य-संग्रहों की रचना की। 'अप्सरा', 'अलका', 'प्रभावती', 'निरूपमा', 'कुल्ली भाट' और 'बिल्लेसुर' 'बकरिहा' शीर्षक से उपन्यासों तथा 'लिली', 'चतुरी चमार', 'सुकुल की बीवी', 'सखी' और 'देवी' नामक कहानी संग्रहों का सृजन किया। 'मतवाला' व 'समन्वय' पत्रिकाओं का संपादन भी किया। सौ पदों में लिखी गई तुलसीदास निराला की सबसे बड़ी कविता है।

निराला का साहित्य प्रकृति सौंदर्य, प्रेम के औदात्य, आध्यात्मिकता, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक चेतना एवं मानवीय संवेदना से सराबोर है साहित्य जगत को अपनी अविस्मरणीय रचनाओं से वसंत का अहसास कराने वाले इस महाप्राण कवि का व्यक्तिगत जीवन अभावों एवं कष्टों से भरा रहा मगर बेबाकी एवं फक्कड़पन से भरा यह कवि समझौतापरस्त नहीं बना। ठिठुराती सर्दी में एक असहाय वृद्धा के मुख से बेटा का संबोधन सुनकर अपनी नई रजाई उसे ओढ़ा देने वाला हिन्दी का यह कवि सिंहासन तक को ठोकर मारने का जज्बा रखता था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के यशस्वी वाइस चांसलर अमरनाथ झा ने एक बार निराला को अंग्रेजी में पत्र लिखकर अपने घर पर काव्य पाठ के लिए निमंत्रित किया। शिक्षा, संस्कृति और प्रशासकीय सेवाओं के क्षेत्र में अमरनाथ झा की तूती बोलती थी। मगर स्वाभिमानी निराला सरीखे कवि को यह गवारा न था कि पद या सम्पन्नता के गुमान में कवि दरबार आयोजित करने वाले प्रभावशाली व्यक्ति के घर हाजरी बजाकर भांडवत काव्यपाठ करें। उन्होंने जवाब भेजा झ ह्लआई एम रिच ऑफ माई पुअर इंग्लिश, आई वाज ऑनर्ड बाई योर इनविटेशन टू रिसाइट माई पोयम्स एट योर हाउस। हाउ एवर मोर आनर्ड आई विल फील इफ यू कम टू माई हाउस टू लिसिन टू माई पोयम्स।ह्व (मैं गरीब अंग्रेजी का धनिक हूँ। आपने मुझे अपने घर आकर कविता सुनाने का निमंत्रण दिया मैं गौरवान्वित हुआ। लेकिन मैं और अधिक गौरव का अनुभव करूँगा यदि आप मेरे घर आकर मेरी कविता सुनें)।ह्व इसी प्रकार एक बार ओरछा नरेश से अपना परिचय देते हुए निराला ने कहा, ह्लहम वो हैं जिनके बाप-दादों की पालकी आपके बाप-दादा उठाते थे।ह्व यहाँ कवि परंपरा पर गर्व करने वाले निराला ने उस घटना का संकेत किया था, जब राजा छत्रसाल ने कवि भूषण की पालकी स्वयं उठा ली थी

जीवनपर्यन्त साहित्य झ रसिकों को वासन्ती शब्दसुमनों से रसप्लावित करने वाले शब्दशिल्पी निराला के जीवन में मात्र 22 वर्ष की अल्पायु में पत्नी के चिरवियोग से पतझड़ आ गया और उसके बाद बिटिया सरोज के असामायिक निधन से यह पतझड़ स्थाई बन गया। दुर्दांत दुर्भाग्य के प्रबल प्रहारों को झेलते झेलते आखिर शोक संतप्त निराला की मनोदशा व्यथा एवं वेदना से टूट-सी गई और 15 अक्टूबर, 1961 को यह अमर कवि इस लोक से विदा हो गया।

निराला वाकई निराला ही थे उनकी स्मृति आते ही हमारे चित्त में वसंत की सुरभि और सौंदर्य मूर्तिमान हो उठते हैं। हमारा अंतस स्वत? ही गुनगुनाने लगता है।

कृष्ण ने गीता में वसंत को अपनी सृष्टि माना

वसंत की शुरुआत माघ महीने की शुक्ल पंचमी से हो जाती है। रामायण में मर्हिष वाल्मीकि ने वसंत का अत्यंत मनोहारी चित्रण किया है। भगवान कृष्ण ने गीता में 'ऋतुनां कुसुमाकर' कहकर वसंत को अपनी सृष्टि माना है।

कविवर जयदेव तो वसंत का वर्णन करते थकते ही नहीं। सतत आकर्षक लगने वाला निसर्ग वसंत ऋतु में अत्यधिक लुभावना लगने लगता है। अपने अनोखे सौंदर्य के कारण वह मनुष्यों को आकृष्ट करता है।

वसंत का उत्सव प्रकृति की पूजा का उत्सव है। सदैव सुंदर दिखने वाली प्रकृति वसंत ऋतु में सोलह कलाओं में दीप्त हो उठती है। यौवन हमारे जीवन का मधुमास वसंत है तो वसंत इस सृष्टि का यौवन।

मानव को अपने स्वास्थ्य और जीवन के सौंदर्य के लिए प्रकृति के अनुपम सान्निध्य में जाना चाहिए। निसर्ग में ऐसा जादू है कि मानव की वह समस्त वेदनाओं को तत्काल भुला देता है। निसर्ग का सान्निध्य यदि सदैव प्राप्त होता रहे तो मानव जीवन पर उसका प्रभाव बहुत ही गहरा होता है।

निसर्ग में अहंकार नहीं है। अत वह प्रभु के अत्यधिक निकट है। इसी कारण निसर्ग के सान्निध्य में जाने पर हम भी स्वयं को प्रभु के अधिक निकट महसूस करते हैं।

सुख-दुख के समस्त द्वंद्वों से परे है - निसर्ग। वसंत हो या वर्षा, अलग-अलग रूपों में प्रभु का हाथ सृष्टि पर फिरता ही रहता है और सम्पूर्ण निसर्ग प्रभु के स्पर्श से निखर उठता है।

जीवन में भी यदि प्रभु का स्पर्श हो तो सम्पूर्ण जीवन ही बदल जाता है। जीवन में वसंत खिल उठेगा, जीवन के दुख, दैन्य, सब क्षण भर में दूर हो जाएंगे। प्रभु स्पर्शी जीवन में निरंतर एक ही ऋतु का साम्राज्य होता है और वह मादक ऋतु है वसंत!

निसर्ग के सान्निध्य से मानव के तन में स्फूर्ति, मन में उल्लास, बुद्धि में प्रसन्नता और हृदय में चेतना की सृष्टि होती है, वसंत मुख्य द्वार से प्रविष्ट हो रहा है। समग्र सृष्टि सुमधुर प्रतीत होने लगती है। सृष्टि के अनुपम माधुर्य का पान करने के लिए संभवतः दो नेत्र काफी नहीं। सृष्टि की सुंदरता और यौवन की रसिकता का जहां सुमेल हो, वहां निराशा, नीरसता और निष्क्रियता का क्या काम। परंतु निसर्ग की सुंदरता व मानव की रसिकता में यदि प्रभु का स्वर न हो तो वह विलास का मार्ग बनकर मनुष्य को विनाश के गर्त में डाल देती है। इसलिए वसंत के संगीत में गीता के स्वर होने चाहिए। वसंत का उत्सव अमर आशावाद का प्रतीक है। वसंत का सच्चा पुजारी जीवन में कभी निराश नहीं होता। पतझड़ में जिस प्रकार वृक्ष के पत्ते गिर जाते हैं, उसी प्रकार वह अपने जीवन में से निराशा और असफलताओं को झटक देता है। निराशा से घिरे हुए जीवन में वसंत आशा का संदेश लेकर आता है। निराशा के वातावरण में आशा की अनोखी किरण फूट पड़ती है। भक्ति और शक्ति के सुंदर सहयोग से यह जीवन और प्रकृति सुंदर हो उठते हैं। उसका जीवन मानो गीता का जीवंत भाष्य प्रतीत होने लगता है। जीवन में आने वाले समस्त दुखों को झेलने और सकारात्मक दृष्टि से देखने का विवेक उत्पन्न होता है।

वसंत अर्थात आशा व सिद्धि का सुंदर संयोग, कल्पना और वास्तविकता का सुभग समन्वय है। यह निराशा पर आशा और अमंगल पर मंगल की विजय है। जीवन और वसंत को जिसने एकरूप कर दिया है, ऐसे मानव को हमारी संस्कृति संत कहकर पुकारती है। जो जीवन में वसंत लाए वही संत हैं।

यौवन व संयम, आशा और सिद्धि, कल्पना और वास्तविकता, भक्ति और शक्ति, सर्जन और विसर्जन, इन सबका समन्वय करने वाला और जीवन में सौंदर्य, संगीत और स्नेह का निर्माण करने वाला वसंत हमारे जीवन में साकार हो, तभी यह पता चलेगा कि हमने वास्तविक अर्थों में वसंत के सार को समझा और उसे अपने जीवन में उतारा है।

स्पीड न्यूज

पूर्व पार्षद असलम व अन्य के खिलाफ कार्रवाई पर लगी रोक

रांची। हिन्दपीढ़ी थाना क्षेत्र में पिछले दिनों हुई गोलीबारी और मारपीट की घटना के अभियुक्तों को रांची सिविल कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने इस केस से जुड़े अभियुक्तों के खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक का आदेश दिया है। पीड़क कार्रवाई पर रोक के आदेश के बाद पुलिस अभियुक्तों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर सकती। यह आदेश रांची सिविल कोर्ट के प्रधान न्यायायुक्त की अदालत ने दिया है। दरअसल 23 जनवरी को रांची के हिन्दपीढ़ी थाना क्षेत्र में मारपीट और गोलीबारी की घटना हुई थी। जिसके बाद पूर्व पार्षद असलम उनके भाई आसिफ और दिलावर के विरुद्ध मोहम्मद कलीम ने प्राथमिकी दर्ज करवाई है। आरोपियों की ओर से अधिवक्ता तनवीर ने बहस की।

साइबर अपराधी को सीआईडी ने किया गिरफ्तार

रांची। एचडीएफसी पॉलिसी के पैसे को वापस कराने के नाम पर 15.45 लाख की ठगी करने वाला साइबर अपराधी को सीआईडी ने गिरफ्तार किया है। डीजीपी सह सीआईडी डीजी अनुराग गुप्ता के निर्देश पर सीआईडी की साइबर सेल ने कार्रवाई करते हुए सैकत दास को पकड़ा है। वह मूल रूप से कोलकाता का रहने वाला है। गिरफ्तार साइबर अपराधी ने धनबाद जिले के बाघमारा का रहने वाले एक व्यक्ति से ठगी की घटना को अंजाम दिया था। शनिवार को सीआईडी ने इसको लेकर जानकारी दी। ज्ञात हो कि इस अपराध को करने के लिए साइबर अपराधी विभिन्न फर्जी नम्बरों से लोगों को कॉल करते हैं और डेड इंसुरेस पॉलिसी, पॉलिसी क्लेम तथा लोन दिलाने के नाम पर लोगों को प्रलोभन देकर विभिन्न बैंक खाताओं में धोखे से विश्वास में लेकर पैसे की ठगी कर लेते हैं।

चुनावी फायदे के लिए बनाया गया है बजट : केशव महतो कमलेश

रांची। केंद्र सरकार द्वारा शनिवार को पेश किए गए बजट पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बजट को ढपोरशंखी बताया। उन्होंने कहा कि बजट से देश को बहुत आशाएं थीं लेकिन वह धूल धूसरित हो गई। चुनावी फायदे के लिए राजनीतिक बजट बनाया गया है। समाज के कमजोर वर्गों के लिए कोई ठोस योजना बजट में नहीं है। किसान कर्ज के मारे आत्महत्या कर रहे हैं लेकिन केंद्र सरकार कर्ज माफी की नीति की बजाय क्रेडिट लिमिट बढ़ाने की घोषणा कर रही है।

नागपुरी विभाग के विभागाध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया डॉ उमेश नन्द तिवारी

रांची। रांची विश्वविद्यालय के टीआरएल संकाय के स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग में शनिवार को नये विभागाध्यक्ष के रूप में डॉ उमेश नन्द तिवारी ने पदभार ग्रहण किया। इस मौके पर विभाग के डॉ बीरेन्द्र कुमार महतो एवं डॉ रीझू नायक की अगुवाई में विभाग के शिक्षक, छात्र, शोधार्थी एवं कर्मचारियों ने संयुक्त रूप से बुके देकर डॉ तिवारी का स्वागत किया। डॉ तिवारी ने कहा कि मुझे खुशी है कि मुझे दोबारा विभागाध्यक्ष का कार्यभार सौंपा गया है। मेरी कोशिश होगी कि हम सब मिलजुल कर अपने-अपने दायित्व का निर्वहण करेंगे। मौके पर बुद्धेश्वर बड़ाईक, सोनू सपवार व शोधार्थियों ने स्वागत गान प्रस्तुत किया।

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह
स्वामित्व वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह
द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 95708-48433
पिनः -834006
e-mail
khabarmantra.city@gmail.com
R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797
*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी। प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

रघुवर दास, सांसद समेत भाजपाइयों ने बजट को सराहा, कांग्रेस और जेएमएम ने कोसा

रघुवर दास, विद्युतवरण महतो, डॉ अजय कुमार, राकेश तिवारी, संजीव सरदार, फादर केएस कासिमिर और काले।

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। भारत सरकार की वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने आज संसद में आम बजट 2025 पेश किया। बजट प्रस्तुति के बाद सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने आम बजट की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है जबकि कांग्रेस, झामुमो समेत पूरे विपक्ष ने बजट में आम भारतीयों की अनदेखी एवं दिशाहीन बजट की संज्ञा दी है।

लोक कल्याणकारी, दूरदर्शी और राष्ट्र को समर्पित बजट : रघुवर दास

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किए गए वित्तिय वर्ष 2025-26 के आम बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि वर्ष 2025 का केंद्रीय बजट विकासवादी और प्रगतिशील बजट है। चंद शब्दों में कहे तो यह बजट लोक कल्याणकारी और देश को समर्पित दूरदर्शी बजट है।

किसानों, मध्यम वर्ग और गरीबों का आम बजट : विद्युतबरण महतो

जमशेदपुर लोकसभा क्षेत्र के सांसद बिद्युत बरण महतो ने केंद्रीय बजट 2025 के संबंध में कहा कि यह बजट किसान, गरीब,मध्यम वर्ग, महिला एवं बच्चों की शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य, स्टार्टअप और इनोवेशन से लेकर इन्वेस्टमेंट तक हर क्षेत्र को समाहित करने वाला है। यह पीएम के आत्मनिर्भर भारत का यह रोड मैप है।

राजनीतिक स्वार्थ से प्रेरित है केंद्रीय बजट 2025 : डॉ. अजय

पूर्व सांसद सह कांग्रेस के वरीय नेता डॉ अजय कुमार ने बजट पर कहा कि यह बजट आगामी विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए अपनी राजनीतिक लाभ के लिए बनाया है। उन्होंने कहा कि नौकरियाँ तो हैं नहीं, मध्यम वर्ग हर तरफ से शोषित है। वहीं 80 करोड़ जनता मुफ्त भोजन पर निर्भर है। 10 साल तक मध्यम वर्ग पिस्ता रहा है। महंगाई चरम सीमा पर है।

बिहार-दिल्ली विस चुनाव का आम बजट पर प्रभाव : राकेश तिवारी

झारखंड कांग्रेस के प्रदेश सचिव राकेश तिवारी ने बजट पर कहा यह बजट आगामी बिहार के विधानसभा चुनाव एवं दिल्ली के विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखकर चुनावी बजट के रूप में बनाया गया है इस बजट से महंगाई की मार झेल रही जनता को कोई फायदा नहीं होने वाला है।

बजट में आदिवासियों, महिलाओं की अनदेखी : संजीव सरदार

विधायक संजीव सरदार ने आज प्रस्तुत किये गये आम बजट पर असंतोष व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि बजट में आदिवासी जनजातीय समाज, किसानों, युवाओं, महिलाओं और कर्मचारियों के लिए कोई ठोस प्रावधान नहीं किये गये हैं। संजीव सरदार ने विशेष रूप से इस बात पर नाराजगी जताई कि झारखंड राज्य के लिए बजट में पर्याप्त आवंटन नहीं किया गया है, जिससे राज्य के विकास कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

शिक्षा बजट की घोषणा बेहद सराहनीय : फादर केएस कासिमिर

एक्सएलआरआई के दिल्ली एनसीआर कैंपस के निदेशक फादर केएस केसिमिर ने बजट में शिक्षा बजट की घोषणा के साथ, हम एक उज्ज्वल और अधिक न्यायसंगत भविष्य को आकार देने के लिए हमारे देश की प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण क्षण देख रहे हैं। यह बजट इस समझ को दर्शाता है कि शिक्षा प्रगति की आधारशिला है क्योंकि यह न केवल बुनियादी ढांचे और डिजिटल शिक्षा को बढ़ाती है।

मध्यम वर्ग को आयकर में भारी छूट सराहनीय : मनोज सिंह

खादी ग्रामोद्योग आयोग (पूर्व क्षेत्र), भारत सरकार, के सदस्य एवं स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य मनोज कुमार सिंह ने कहा कि मोदी सरकार ने आम बजट 2025-26 में मध्यम वर्ग के लिये आयकर छूट की सीमा 7 लाख से बढ़ाकर 12 लाख करके शानदार तोहफा दिया है।

विकसित भारत का ग्रोथ इंजन बनेगा बजट : अमरप्रीत सिंह काले

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता अमरप्रीत सिंह काले ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा है कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किया गया वित्तीय वर्ष 2025-26 का आम बजट देश की आर्थिक प्रगति को नई ऊर्जा और गति प्रदान करने वाला है।

गैंगस्टर सुजीत के हथियार नेटवर्क का खुलासा, मददगारों की हुई पहचान !

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। जेल से ही अपने गैंग को मजबूत करने की कोशिश में लगे कुख्यात गैंगस्टर सुजीत सिन्हा को बिहार, एमपी और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों से मदद मिल रही है। इन राज्यों में बैठे सुजीत के खास लोग झारखंड में गैंग को हथियार के साथ-साथ आर्थिक मजबूती देने की कोशिश कर रहे हैं।

रिमांड पर आए सुजीत ने किए कई खुलासे

कुख्यात सुजीत सिन्हा जेल में है लेकिन वहीं से कई तरह की जुगत लगा रहा है ताकि उसके गैंग का प्रभाव हर तरफ बढ़े। लेकिन दूसरी तरफ झारखंड एटीएस हर हाल में सुजीत सिन्हा गैंग पर नकेल कसने में लगी हुई है। सुजीत गैंग पर नकेल कसने की रणनीति के तहत रांची पुलिस और झारखंड एटीएस की टीम ने सुजीत सिन्हा को रिमांड पर लेकर दो दिनों तक पूछताछ की है। जिसमें सुजीत सिन्हा ने एटीएस के सामने अपने कई राज खोल दिए।

सुजीत सिन्हा ने अपने वैसे तमाम मददगारों के नाम भी एटीएस को बताए हैं जो लोग उन्हें हथियार उपलब्ध करवा रहे हैं और रंगदारी के पैसों का निवेश कर रहे हैं। जानकारी के अनुसार बिहार, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल के कुछ सफेदपोश सुजीत की काली कमाई को बिजनेस में लगा रहे हैं। वहीं बाहरी राज्यों के कुछ आर्म्स सप्लायर सुजीत के निर्देश पर उसके गैंग को हथियार और कारतूस सप्लाई कर रहे हैं। ऐसे तमाम सफेदपोश और आर्म्स सप्लायर की सूची तैयार कर एटीएस बाहरी राज्यों की पुलिस के साथ संपर्क में है ताकि मामले की पुष्टि कर उसके मददगारों पर नकेल कसी जा सके।

दो दिन तक सुजीत को लेकर घूमी एटीएस

रांची पुलिस ने सुजीत सिन्हा को 48 घंटे के लिए रिमांड पर लिया था। इस दौरान एटीएस और रांची पुलिस की टीम ने उन तमाम जगहों का फिजिकल वेरिफिकेशन भी सुजीत सिन्हा को ले जाकर किया। जहां उसके द्वारा रंगदारी मांगी गई थी या फिर वहां उसके गुर्गों के द्वारा गोलीबारी की गई थी।

इस कड़ी में सुजीत सिन्हा के बारे में झारखंड एटीएस और रांची पुलिस की टीम को कई अहम जानकारियां हासिल हुई हैं। उसके नए से लेकर पुराने मददगार तक की पूरी लिस्ट एटीएस के हाथ लग चुकी है। ऐसे में सुजीत गिरोह के तमाम मददगारों को चि?त कर उनको सर्विलांस पर रखा गया है।

जुटाया जा रहा है इनपुट

झारखंड एटीएस के एसपी ऋषभ झा ने बताया कि सुजीत सिन्हा से पूछताछ में कई तरह की जानकारियां हासिल हुई हैं।

मसलन हाल के दिनों में उसके नए मददगार कौन-कौन हैं, उसके गैंग में नए चेहरे कौन हैं। इसके अलावा सबसे बड़ी बात यह है कि झारखंड से बाहर जो लोग सुजीत गैंग को हथियार सप्लाई कर रहे हैं उनके बारे में भी जानकारी मिली है। अब सुजीत सिन्हा के बयान को लेकर कई राज्यों की पुलिस से संपर्क साधा गया है ताकि जिन हथियार तस्करों के नाम सामने आए है उनकी डिटेल मिल सके।

शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए बच्चों के सफल भविष्य गढ़ने में अपना योगदान निभाए : डीसी

रांची। उपायुक्त ने अपने संबोधन में कहा की विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए बच्चों के सफल भविष्य गढ़ने में अपना योगदान निभाए, वर्ष 2007 में स्कूलों की शुरूआत हुई। जिस उद्देश्य से इस स्कूल को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए खोला गया था। आज विद्यालय अपने उद्देश्य में लगातार आगे बढ़ रहा है। साथ ही उन्होंने कहा की यहाँ के शिक्षकों को बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देते हुए उन्हें एक वैल्यू सिस्टम भी देना है, जो यहाँ के शिक्षक दे भी रहें है।बच्चों द्वारा दी गई शानदार कार्यक्रम अपने आप में मंत्रमुक्त कर देने वाला रहा। कार्यक्रम देख कर उन्हें काफी प्रसन्नता हुई। उन्होंने कहा की इस कार्यक्रम में सभी बच्चों ने एक से एक बढ़ कर रंगारंग प्रस्तुति देते हुए सबों का मन मोह लिया। सभी बच्चों को उनके उज्जवल भविष्य की ढेर सारी शुभकामनाऐं। उपायुक्त ने सभी बच्चों और शिक्षिकों से कहा की बच्चें जिम्मेदारी के साथ पढ़ाई करें और शिक्षक जिम्मेदारी के साथ पढ़ाते हुए बच्चों को नई-नई चुनौती से कैसे लड़ा जाए, कैसे चुनौती से सीख लेते हुए आगे बढ़ना है, ये बच्चों को बताए। उन्होंने अंत में सभी को शुभकामनाऐं देते हुए कहा की जब भी विद्यालय प्रबंधन को जिला प्रशासन से कोई मदद की आवश्यकता रहेगी जिला प्रशासन हमेशा विद्यालय के साथ खड़ी है।

रांची नगर निगम ने पारस अस्पताल से की 58 लाख से अधिक की वसूली

रांची। रांची नगर निगम की टीम ने राजस्व संग्रहण के कार्यों में तेजी लानी शुरू कर दी है। इस क्रम में शनिवार को वार्ड नंबर 25, अपर बाजार, रांची रेलवे स्टेशन रोड और लालपुर एरिया में विशेष अभियान चलाया। इस दौरान स्टेशन रोड में होटल शिव वंश पैलेस की मापी की गयी. होटल निरंजन के परिसर में रेसिडेंशियल होल्डिंग दिखाया गया जिस पर उन्हें जल्द कमर्शियल होल्डिंग लेने का निर्देश दिया गया। होटल वैभव में जी+2 की होल्डिंग पायी गयी जबकि होटल जी+3 में संचालित था। उन्हें जल्द ही रि-एसेसमेंट करने का निर्देश निगम के द्वारा दिया गया। होटल यश रेसीडेंसी में ट्रेड लाइसेंस नवीकरण और भवन के रि-एसेसमेंट के लिए कहा गया। कुशवाहा खाजा भंडार को तीन दिनों के भीतर ट्रेड लाइसेंस लेने को निर्देशित किया गया। निगम की राजस्व शाखा की टीम ने एक दिन में ही पारस अस्पताल से 58 लाख 36 हजार 842 रुपए के बकाया राशि की वसूली की। वसूली अभियान में उप प्रशासक गौतम प्रसाद साहू, सहायक प्रशासक चंद्रदीप कुमार व राजस्व शाखा की टीम भी शामिल थी।

जांच अभियान को और दी जाएगी गति : शनिवार को उप प्रशासक गौतम प्रसाद साहू की अध्यक्षता में राजस्व शाखा के पदाधिकारियों, निगम के टैक्स कलेक्टर और मेसर्स श्री पब्लिकेशन एंड स्टेशनर्स के कर संग्रहकताओं की एक बैठक हुई। इस दौरान उप प्रशासक ने कहा कि सभी संग्रहकर्ता अपने अपने आवंटित वार्ड में शत प्रतिशत डोर टू डोर विजिट करते लक्ष्य प्राप्त करें। हर भवन के होल्डिंग एवं इसके उपयोग की जांच करना सुनिश्ति करें। जिस क्षेत्र या वार्ड में अधिक मैनपावर की जरूरत हो, वहां अतिरिक्त टीम लगाकर लक्ष्य प्राप्ति हो।

महोत्सव की भव्यता बताती है, कि पूर्वजों की विरासत को बनाए रखने में सफल हुए हैं : नरेश

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। मोरहाबादी मैदान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय जतरा महोत्सव का शनिवार को धूम धाम से समापन हो गया। इसमें आदिवासी परंपरा व समृद्ध संस्कृति का अद्भुत नजारा दिखा। झारखंड के अलावा हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा , छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल से भी लोग इसमें शामिल हुए। जतरा मे पहुंचे 200 से ज्यादा खोड़हा दलों को आयोजन समिति को शॉल और बुके देकर सम्मानित किया गया। महोत्सव के अध्यक्ष नरेश पाहन ने कहा कि राष्ट्रीय जतरा महोत्सव हमारी संस्कृति तथा सभ्यता की पहचान है।

जतरा के माध्यम से एक-दूसरे से मेल मिलाप होता है साथ ही पूर्वजों के विरासत को बचाने का एक माध्यम है। महोत्सव में झारखंड के कलाकारों ने एक से बढ़कर एक लोक संगीत की धमाकेदार प्रस्तुति दी। नागपुरी स्टार नितेश कच्छप, पूनम कच्छप, पवन रॉय इत्यादि कलाकारों की प्रस्तुति ने राष्ट्रीय जतरा महोत्सव में आए लोगों का मन मोह लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सोनू खलखो, अर्जुन मुंडा, रवि मुंडा, कोषाध्यक्ष विक्की करमाली, मीडिया प्रभारी निरंजन भारती, महासचिव नीलम बिरुली, उपाध्यक्ष अमित मुंडा, मिथिलेश कुमार, राकेश मुंडा,अमित तिर्की, अशोक मुंडा, कोषाध्यक्ष विक्की करमाली, मोहन तिर्की, सचिव अरुण पहान, सलाहकार मानसिंह मुंडा, दीप्तराज बेदीया,सहसचिव दीपक मुंडा,सह कोषाध्यक्ष सुरेश मिर्धा, रिकी नायक,मीडिया प्रभारी विनय नायक, सदस्य शीतल तिर्की इत्यादि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आम आदमी की उम्मीदों का बजट : चंद्र प्रकाश

रांची। आजसू पार्टी के वरीय उपाध्यक्ष व गिरिडीह के सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी ने संसद में पेश आम बजट की सराहना की है। उन्होंने कहा कि यह बजट आम आदमी की उम्मीदों का बजट है। इस बजट में सबका ध्यान रखा गया है। हर उम्र के लोगों की बात सुनी गई है। महिला, युवा, छात्र, बुजुर्ग , किसान व नौकरी पेशा का ध्यान रखा गया है। विशेष कर मध्यम वर्ग के लोगों का हितों की रक्षा की गई है। आधारभूत संरचना मजबूत करने के साथ-साथ छोटे-छोटे उद्यमियों के विकास का भी ख्याल रखा गया है।

कला एवं विज्ञान प्रदर्शनी में बच्चों ने दिखाया अपना हुनर

रांची। सनराइज एकेडमी स्कूल मनी टोला में शनिवार को कला एवं विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में बच्चों ने एक से बढ़कर एक मॉडल को प्रदर्शत किया। मौके पर बच्चें ने अपने हुनर का लोहा मनवाते हुए वार्टर हारवेस्टींग,प्रर्यावरण पर आधारित मॉडल,ट्रैफिक सहित कई अन्य मॉडल बनाया। इस प्रदर्शनी में क्लास नर्सरी से 10 तक के बच्चों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागीयों को वार्ड नंबर 49 के निर्वतमान पार्षद जमीला खातून और पार्षद पति रिजवान हुसैन ने मेडल और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। मौके पर स्कूल के प्राचार्य गुलाम गौस ने कहा कि इस तरह के आयोजन से बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता है।

एसोटेक हिल्स सेक्टर-2 का भव्य शुभारंभ

रांची में विकसित होगी अत्याधुनिक एकीकृत टाउनशिप

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। शनिवार को टैगोर हिल रोड स्थित बैंक कॉलोनी के समीप आज एसोटेक हिल्स सेक्टर-2 का भव्य शुभारंभ किया गया। रांची की पहली एकीकृत टाउनशिप के रूप में विकसित हो रही इस परियोजना में आधुनिक सुविधाओं से युक्त 2.5 बीएचके एवं 3 बीएचके के आवास उपलब्ध होंगे। एसोटेक लिमिटेड के निदेशक अर्पण पटेल ने बताया कि टाइम्स ग्रुप द्वारा सर्वश्रेष्ठ नवोन्मेषी एकीकृत टाउनशिप का पुरस्कार प्राप्त कर चुकी यह परियोजना रेरा पंजीकृत है। उन्होंने कहा कि सेक्टर-1 की सफलता के बाद इस नई परियोजना में आधुनिक जीवनशैली की सभी सुविधाएं उपलब्ध होंगी। परियोजना में स्विमिंग पूल युक्त क्लब हाउस, आधुनिक जिम, उद्यान, योग केंद्र, 24 घंटे सुरक्षा व्यवस्था, ऑप्टिकल फाइबर कनेक्टिविटी तथा एसोटेक बुलेवार्ड शॉपिंग कॉम्प्लेक्स की सुविधा होगी। आवासीय इकाइयों में 8 फीट ऊंचे प्रवेश द्वार एवं आधुनिक मॉड्यूलर किचन की व्यवस्था की गई है। एसबीआई, पंजाब नेशनल बैंक एवं झारखंड राज्य ग्रामीण बैंक से वित्तीय स्वीकृति प्राप्त इस परियोजना में 2.5 बीएचके के फ्लैट 975 वर्ग फुट तथा 3 बीएचके के फ्लैट 1,470 वर्ग फुट के होंगे। 1987 में स्थापित एसोटेक समूह ने अब तक छह राज्यों में 45 से अधिक परियोजनाएं सफलतापूर्वक पूरी की हैं। समूह ने नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद, गुरुग्राम, दिल्ली एनसीआर, ओडिशा, झारखंड, उत्तराखंड एवं मध्य प्रदेश में अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाएं विकसित की हैं।

एक नजर में

समावेशी विकास और सामाजिक न्याय की दिशा में बड़ा कदम : सुदेश कुमार महतो

रांची। केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तुत केंद्रीय बजट 2025, समावेशी विकास और सामाजिक न्याय पर विशेष जोर देता है। यह बजट देश के गरीब, किसानों, मध्यम वर्ग और उद्यमियों के सशक्तिकरण को प्राथमिकता देते हुए, आर्थिक संतुलन और समृद्ध समाज बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस बजट में बिहार की तरह झारखंड की अपेक्षाओं को भी प्रमुखता दी गई है। झारखंड में बड़ी संख्या में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोग रहते हैं, साथ ही महिला उद्यमियों की भी अच्छी-खासी संख्या है। इस बजट में इन वर्गों के विकास के लिए ठोस कदम उठाए गए हैं। यह बजट प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक शानदार कदम है। यह आर्थिक असमानता को दूर करते हुए समाज के हर वर्ग को आगे बढ़ने का समान अवसर प्रदान करेगा। यह बजट भारत को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और समृद्ध राष्ट्र बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगा।

बजट नौजवानों, गरीब, किसानों व महिलाओं के लिए है : वेदांत कौस्तव

रांची। सिविल इंजीनियर वेदांत कौस्तव ने केन्द्रीय बजट की सराहना की। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को लोकसभा में बजट 2025 पेश किया। उन्होंने बताया कि नई टैक्स रिजीम में 12 लाख रुपये तक की इनकम पर कोई टैक्स नहीं लगेगा। सरकार की इस घोषणा को आय कर से जुड़े पिछले एक दशक में किए गए सबसे बड़े सुधारों में से एक माना जा रहा है। देश की नजर नये इनकम टैक्स बिल पर है, जिसे अगले हफ्ते लाने की घोषणा की गई है। कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों की दवाओं के दाम घटाने के लिए कस्टम ड्यूटी घटाने की घोषणा के साथ 6 जीवनरक्षक दवाओं और कैंसर की 36 दवाएं टैक्स फ्री करने की घोषणा अहम है। गरीबों को बड़ी राहत दी है। इनके अलावा किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने की घोषणा के साथ इसे तीन लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख रुपये करना और स्ट्रीट वेंडर्स को आर्थिक रूप से मदद करने के लिए 30 हजार रुपये का क्रेडिट कार्ड देने और इसे यूपीआई से जोड़ने की घोषणा भी महत्वपूर्ण है। बजट में बिहार के लिए बड़ी घोषणा है। मखाना बोर्ड का गठन होगा. यह इसके उत्पादन से लेकर मार्केटिंग तक में सहायता करेगा। वित्त सबसे ज्यादा मखाना का उत्पादन बिहार में ही होता है। जाहिर तौर पर इससे रोजगार की संभावना विकसित होगी। बजट में किसानों के लिए पीएम धनधान्य योजना का ऐलान, दलित और आदिवासी महिलाओं को सशक्त करने के लिए नई स्कीम, युवाओं के लिए शिक्षा और कौशल विकास पर जोर, खाद्य क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ाने पर जोर को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। नौजवानों के कौशल को बेहतर करने के लिए पांच नेशनल सेंटर स्थापित करने और यहां ग्लोबल विशेषज्ञों की मदद से कौशल के क्षेत्र में काम करने और भारतीय भाषा पुस्तक स्कीम की घोषणा के अच्छे परिणाम मिलेंगे। इसके जरिये भारतीय भाषा में किताबों की पहुंच, वह भी डिजिटल तरीके से प्राथमिक और उच्च शिक्षा की किताबें उपबल्ध करा

समृद्ध एवं विकसित भारत के लिए समावेषी बजट : डॉ अभिषेक

रांची। बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए झारखण्ड चैंबर के कार्यकारिणी सदस्य डॉ0 अभिषेक रामाधीन ने कहा कि समृद्ध एवं विकसित भारत के लिए समावेषी बजट है। गरीब, किसान, युवा और महिलाओं का ध्यान रखा गया है। मेडिकल फील्ड में 75 हजार नये एमबीबीएस सीट जिसमें 10 हजार इसी वर्ष से, 200 सरकारी अस्पतालों में कैंसर डे केयर सेंटर बनाने, मेडिकल टूरिज्म के लिए इजी वीजा, 36 कैंसर की दवा को टैक्स फ्री करना, मेडिकल इक्वीपमेंट सस्ता, इंफ्योरेंस सेक्टर में 100 प्रतिषत एफडीआइ करने से मेडिकल इंफ्योरेंस में लोगों को ज्यादा लाभ मिलेगा। झारखंड चैम्बर,कार्यकारिणी सदस्य अमित शर्मा ने कहा कि बजट में एजुकेशन और कौशल विकास पर विषेष फोकस किया गया है। स्टार्टअप के बजट में बढ़ावा देने और युवाओं को सस्ते लोन देने का एलान स्वागतयोग्य है।

वित्त मंत्री ने दिल्ली और बिहार चुनाव के मद्देनजर पेश किया है बजट : राजेश ठाकुर

रांची। केंद्रीय मंत्री द्वारा शनिवार को पेश किए गए आम बजट पर कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा है कि इस बजट में केवल 2 प्रतिशत लोगों का ध्यान रखा गया है, जबकि आम जनता की जरूरतों को नजरअंदाज किया गया है। पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि यह बजट केवल डबल इंजन वाली सरकारों के लिए तैयार किया गया है। उनका मानना है कि बीजेपी सरकार जानती है कि अगर डबल इंजन वाली सरकार को बजट का लाभ नहीं दिया गया तो इसका राजनीतिक परिणाम बुरा हो सकता है। राजेश ठाकुर ने कहा है कि यह बजट दिल्ली और बिहार के आगामी चुनावों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। उनका कहना है कि सरकार ने दवाइयों को मुफ्त करने और दवाओं की कीमतों में कटौती की बात कही है, लेकिन वास्तविकता यह है कि पिछले 10 वर्षों में लोग भूख और कुपोषण के कारण बीमार होते जा रहे हैं।

केंद्रीय बजट, विकास, सुधार और सशक्तिकरण की दिशा में बड़ा कदम : गौतम सिंह

रांची। अबुआ अधिकार मंच के गौतम सिंह ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किए गए केंद्रीय बजट 2025 को विकास, सुधार और सशक्तिकरण पर केंद्रित बताते हुए इसे आम जनता, किसानों, युवाओं, महिलाओं और छोटे व्यापारियों के लिए लाभकारी करार दिया। उन्होंने कहा कि यह बजट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार की विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

बजट गरीब विरोधी और पक्षपातपूर्ण : एनएसयूआइ

रांची। एनएसयूआइ राज्य उपाध्यक्ष अमन अहमद ने पेश केंद्रीय बजट पर कहा की भाजपा काल में विकसित भारत एक सपना बन चुका है। विकसित भारत का यह खोखला बजट है। भाजपा सरकार और उनके सहयोगी दलों से और उसके बजट से कोई उम्मीद नहीं, छात्र छात्राओं और युवाओं के लिए बजट में कुछ नहीं है । यह सिर्फ एक छलावा है। बजट में रोजगार, महंगाई, कौशल, एमएसएमई और मध्यम वर्ग पर ध्यान केंद्रित नहीं किया गया है । बजट गरीब विरोधी और पक्षपातपूर्ण है।

आम बजट : सता पक्ष ने की सराहना, विपक्ष ने कहा- लोक लुभावन बजट

खबर मन्त्र टोली

मेदिनीनगर। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा सदन में आम बजट पेश करते ही पक्ष और विपक्ष भी अपनी-अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने में पीछे नहीं रहे। जहां सता पक्ष ने बजट की जमकर सराहना की। वहीं विपक्ष के नेताओं ने आम बजट को लोक लुभावन बताकर अपनी भड़ास निकाली।

मध्यम वर्ग, युवा, किसान महिलाओं के लिए श्रेष्ठ बजट : आनंद शंकर

चेंबर अध्यक्ष आनंद शंकर ने आज के बजट को मध्यम व्यवसायियों, सर्विस क्लास, किसानों, युवा स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने वाला तथा महिलाओं के चहुंमुखी विकास का बजट बताया। श्री शंकर ने कहा बजट में विशेष कर 12 लाख तक आय वाले को इनकम टैक्स से मुक्त किया जाना स्वागत योग्य है। इससे सर्विस क्लास के साथ-साथ मध्य व्यवसायियों को काफी राहत मिलेगा।बजट में कई संभावनायें भारत के इकोनामिक ग्रोथ की ओर दर्शाता है।

विकसित भारत की नयी यात्रा का बजट : विधायक डॉ शशिभूषण

पांकी विधायक डॉ कुशवाहा शशिभूषण मेहता ने बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के द्वारा पेश किया गया आम बजट स्वागतयोग्य है। ये विकसित भारत की नयी यात्रा का बजट है। उन्होंने कहा कि ये बजट सर्व समावेशी, सर्वस्पर्शी एवं सभी वर्गों के लिये विकास के नये द्वार खोलने का बजट है। देश में निवास करने वाली लगभग 70 से 80 प्रतिशत मध्यमवर्गीय आबादी के लिये बड़ा ऐलान किया गया है।

सबका साथ सबका विकास वाला बजट

भारत सरकार द्वारा पेश किया गया गया देश के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निभायेगा। उक्त बातें डालटनगंज विधानसभा क्षेत्र के विधायक आलोक चौरसिया ने बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कही। कहा कि इससे व्यवसायी एवं उद्यमियों को काफी राहत मिलने वाला है।

दूरदर्शी बजट, विकसित भारत का लक्ष्य पूरा करेगा

भाजपा किसान मोरचा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ज्योतिरीश्वर सिंह ने आज वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किये गये बजट को आम आदमी का बजट बताया है। बजट पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये श्री सिंह ने कहा कि यह गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति का बजट है।

आम जनता व आत्मनिर्भर भारत का है यह आम बजट

भाजपा पलामू जिला कार्यालय मंत्री श्वेतांक गर्ग ने देश के आम बजट को आम जनता का तथा आत्मनिर्भर भारत का बजट बताया। श्री गर्ग ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि केंद्र ने हर श्रेणी के नागरिकों को ध्यान में रखकर बजट बनाया है।

सभी लोगों को ध्यान में रख पेश किया गया बजट

भाजपा के प्रदेश महामंत्री मनोज सिंह ने केंद्रीय बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त कर कहा कि यह बजट युवा, महिला, मध्यमवर्गीय परिवार के हित वाला बजट है। उन्होंने कहा कि प्रति महीना एक लाख रूपये आय करने वाले लोगों को टैक्स में छूट दी गयी है।

विकसित भारत का संकल्प पूरा करेगा बजट

भाजपा प्रदेश कोषाध्यक्ष सह पांकी पूर्वी पूर्व जिप सदस्य लवली गुप्ता ने सदन में मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए सरकार का आम बजट का रहना किया। बताया कि इस बजट में महिला, गरीब, किसान, युवा, व्यापारी, कृषि व मध्यम वर्गीय परिवारों को आर्थिक राहत मिलेगी।

आम जनता को राहत देनेवाला है यह बजट

भाजपा के पलामू जिलाध्यक्ष अमित तिवारी ने केंद्रीय बजट पर कहा कि यह बजट सभी वर्ग के लोगों के लिए राहत देने वाली एवं स्वागत योग्य है। उन्होंने कहा कि इस बजट से कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मध्यम वर्ग सहित सभी लोगों को उचित स्थान प्रदान किया गया है।

देश का बजट या बिहार का बजट

पलामू कांग्रेस जिलाध्यक्ष जेश रंजन पाठक उर्फ बिट्टू पाठक ने बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि वह यह नहीं समझ पा रहे हैं कि यह भारत सरकार का बजट था या यह बिहार सरकार का बजट था?

आम लोगों को लुभानेवाला है बजट

झामुमो के पूर्व जिलाध्यक्ष सह जिला मंडली के संयोजक राजेंद्र सिन्हा ने कहा कि केंद्रीय बजट देश के कारपोरेट घरानों को लाभ देनेवाला है। इस बजट से देश के आम आवाम व गरीबों को छला गया है। यह लोक लुभावन बजट है।

बेरोजगार युवा के लिए छलावा बजट

राजद जिलाध्यक्ष धनंजय पासवान ने कहा कि केंद्रीय बजट में बेरोजगार युवाओं को कहीं कोई जगह नहीं दी गई है। इस बजट से वे अपने आप को ठगा महसूस कर रहे हैं। मध्यमवर्गीय परिवार व महिलाओं को ठगा गया है।

पुनः छले गये गरीब किसान : संजीव

झामुमो नेता सह झारखंड हिंदू धार्मिक न्यास बोर्ड के सदस्य संजीव तिवारी ने केंद्रीय बजट पर तीखी प्रतिक्रया व्यक्त करते हुए कहा कि भारत सरकार का बजट छलावा है। इससे पुनः गरीब किसान व मध्यम वर्गीय परिवार छले गये हैं।

लोक लुभावन बजट है : अविनाश देव

झामुमो नेता सह शिक्षाविद अविनाश देव ने बजट पर कहा कि केंद्रीय बजट में छात्र छात्राओं के विकास के लिए कोई स्थान नहीं दिया गया है। केंद्रीय बजट सिर्फ छलावा है। बजट में गरीब नहीं अमीरों के हित का ख्याल रखा गया है।

किसान, नौजवान व मध्यम वर्ग का बजट

झारखंड राज्य विवि संविदा शिक्षक संघ के अध्यक्ष राकेश पाठक ने बजट को काफी देशहित में लाभकरी बताया। कहा कि इससे छात्र छात्राओं को काफी राहत मिलेगी। मेडिकल कॉलेज के सीटों में बढ़ोत्तरी सराहनीय है।

बजट गरीबों के पेट पर लात मार रहा है

राजद प्रदेश महासचिव राजेश रौशन ने कहा कि केंद्र सरकार के बजट से गरीब, मजदूर लोगों को पेट पर लात मारने का काम किया गया है। भाजपा गरीब विरोधी पार्टी है जो कृषि प्रधान देश में किसानों के लिए कुछ विशेष नहीं लाया है।

झारखंड के पर कोई फोकस नहीं: सतीश

आजसू के केंद्रीय सचिव सतीश कुमार ने कहा कि झारखंड के विकास के लिए केंद्रीय बजट में नजर अंदाज किया गया। राज्य के बिकास के लिए व गरीबी रेखा को कम करने के लिये विशेष प्रावधान की जरूरत थी।

मध्यमवर्ग को रिझाने वाला बजट: राकेश

झारखंड जनक्रांति मोर्चा (ज) के केंद्रीय अध्यक्ष राकेश पासवान ने कहा कि बजट ने मिडिल क्लास को रिझाया है। 12 लाख स्लैब पर टैक्स नहीं लगने की बात कही है। इसके फायदे मिडल क्लास को मिलेगा, वे खुश हो जायेंगे।

नया और सशक्त भारत का बजट

सांसद पलामू श्री विष्णु दयाल राम ने कहा कि 2025-26 का बजट यह भारत के युवाओं को आत्मनिर्भरता, किसानों को अधिक आय, नारी शक्ति को सम्मान व स्वाभिमान तथा विशेष रूप से मध्यम एवं निम्न आय वर्ग को बेहतर जीवन स्तर देने वाला बजट है। दस वर्षों में दुनिया ने एक नया और सशक्त भारत देखा है, इस बजट से स्पष्ट है कि भारत वैश्विक आर्थिकी में अपनी भूमिका और भी बड़ी करने जा रहा है। विकसित भारत के जनसंकल्प में हर भारतीय को शामिल करते भारत के इस बजट के लिए पीएम मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

स्पीड न्यूज

युवा, गरीब, महिला-किसान सबको सशक्त करेगा आम बजट: शत्रुध्न सिंह

पांकी पलामू। केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में मोदी सरकार 3.0 पूर्णकालिक आम बजट पेश किया। भाजपा पांकी मंडल अध्यक्ष शत्रुध्न सिंह ने मोदी सरकार की आम बजट पर कहा कि सीतारमण द्वारा पेश बजट से हर वर्ग को लाभ मिलेगा। देश की अर्थव्यवस्था और भी मजबूत होगी। आम बजट सकारात्मक एवं स्वागत योग्य है। उन्होंने कहा कि बजट से सभी वर्गों को लाभ मिलेगा।

सरस्वती पूजा में डीजे और अश्लील गानों पर रहेगा पूर्ण प्रतिबंध

मोहम्मदगंज। थाना परिसर में शनिवार को सरस्वती पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता सीओ रणवीर कुमार ने की, जबकि संचालन एसआई शेख अमानुल्लाह ने किया। इस दौरान पूजा और मूर्ति विसर्जन को लेकर प्रशासन की ओर से जरूरी दिशा-निर्देश दिये गये। बैठक में निर्णय लिया गया कि मूर्ति विसर्जन के दौरान डीजे नहीं बजाया जायेगा और अश्लील गानों पर पूरी तरह से प्रतिबंध रहेगा। बैठक में एस आई हरेराम सिंह, सुरेंद्र तिवारी, सुबीर किस्कू सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

अवैध पोस्ते की खेती की गयी नष्ट

पांकी पलामू। मनातू थाना क्षेत्र के टंडवा कुशहा टोला में गैरमजरूआ भूमि पर लगभग 1.5 एकड़ में अवैध रूप से की जा रही अफीम की खेती को मनातू पुलिस, वन विभाग एवं अंचल अधिकारी, मनातू के संयुक्त अभियान के तहत नष्ट किया गया। यह कार्रवाई गुप्त सूचना के आधार पर हुई, जिसमें संबंधित विभागों की टीम ने पूरी फसल को नष्ट कर दिया।

पेयजल लाभुकों के घर-घर जाकर जल कर वसूली अभियान चलाया

नीलांबर पीतांबरपुर। पेयजल कर वसूली अभियान के तहत प्रखंड में शुक्रवार को ग्राम ढेला व ग्राम बाबुदुम्मी में बहु ग्रामीण पेयजलापूर्ति लेस्लीगंज के अध्यक्ष सह कुराईनपतरा पंचायत के मुखिया पूनम देवी, विभाग के कनीय अभियंता सुमन कुमार, प्रखंड समन्वयक ओम प्रकाश ने पेयजल लाभुकों के घर-घर जाकर जल कर वसूली अभियान चलाया। अध्यक्ष पूनम देवी ने बताया कि बहु ग्रामीण पेयजलापूर्ति योजना पेयजल लाभुकों से जल कर वसूल कर ही विभाग से संबंधित कमीर्यों को मानदेय देने व रख-रखाव किया जाता है। इसमें ढेला के जलसाहिया अनीता देवी, बाबुदुम्मी जलसाहिया रेनू देवी, पेयजल कर्मी नीरज सिंह वसूली अभियान में जुटे थे।

नाई समाज ने लिया एकजुटता का संकल्प

पांकी पलामू। राष्ट्रीय नाई महासभा के द्वारा शनिवार को सगालीम स्थित पीरि नदी के पास सामाजिक वनभोज कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे विभिन्न विन्दुओं पर चर्चा की गई। मौके पर राष्ट्रीय नाई महासभा जिला अध्यक्ष प्रो बचन ठाकुर ने सामाजिक एकता पर बल देते हुए कहा की एकजुटता ही हमारी ताकत है। इसे बरकरार रखने के लिए सभी का सहयोग जरुरी है। वनभोज हम सभी को एकजुट होने का हिस्सा है। कहा कि समाज में हम सभी अपने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा जरूर दें। साथ ही राजनितिक एवं सामाजिक स्तर पर विचार किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बिनोद ठाकुर ने की जबकि धन्यवाद ज्ञानपन अमलेश ठाकुर ने किया।

हुसैनाबाद के दुधिया जंगल से नौ किग्रा का आईडी केन बम बरामद

■ पुलिस नक्सलियों के विरूद्ध सर्च अभियान चला रही थी : एसपी रीष्मा रमेसन

खबर मन्त्र संवाददाता

जानकारी देतीं पलामू एसपी व उपस्थित अन्य।

मेदिनीनगर। पलामू जिला के नक्सल प्रभावित क्षेत्र पांडू, मोहम्मदगंज, हैदरनगर, विश्रामपुर, लठेया व महुदंड के जंगली व पहाड़ी क्षेत्रों में पुलिस की चार टीम तैयार कर नक्सलियों के विरूद्ध सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा था। इसमें उक्त थाना के पुलिस के अलावे झारखंड जगुआर, जैप आठ एवं आईआरबी, डीएसपी सैट की पुलिस शामिल थी। सभी जंगली व पहाड़ी क्षेत्र के सिंघना हाथीदह, लोहबंधा, माहुर, सीताचुआं, डंडीला, घाघरा, मचवादामर, बरवाही समेत विभिन्न क्षेत्रों में अभियान चला रहे थे। इस दौरान हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के दुधिया जंगल में रास्ते के समीप बरगद के पेड़ के पास एक लगभग नौ किग्रा का केन बम लगाया गया था जिसे पुलिस ने शक के आधार पर सर्च कर निकाला।

मुख्य बातें : एसपी रीष्मा रमेसन ने प्रेस वार्ता कर बताया कि यह केन बम नक्सलियों ने सुरक्षा बलों को लक्ष्य कर घटना को अंजाम देने के लिए लगाया था। माकपा माओवादी के 15 लाख का ईनामी रिजनल कमांडर नीतेश यादव उर्फ इरफान एवं दस लाख का ईनामी जोनल कमांडर संजय यादव उर्फ गोदराय यादव, इम्तेयाज अंसारी उर्फ ठेगन मियां अपने दस्ता के सदस्यों के साथ महुदंड व हुसैनाबाद क्षेत्रों में सक्रिय हैं। इस सूचना के आलोक में हुसैनाबाद एसडीपीओ मो याकूब के नेतृत्व में पुलिस टीम गठित कर सर्च अभियान चलाया जा रहा था।

नया आयाम स्थापित करेगा बजट : अन्नपूर्णा देवी

कोडरमा। सांसद अन्नपूर्णा देवी ने बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा संसद में पेश किया गया 2025-26 का बजट, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प की सिद्धि की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करने वाला है। यह सर्वसमावेशी बजट न सिर्फ भारत के वर्तमान को संवारेगा बल्कि आने वाले वर्षों में देश की प्रगति की राह को भी रोशन करेगा। यानी, गरीब, युवा, अन्नदाता किसान एवं नारीशक्ति के हितों को केंद्र में रखकर निर्मित यह सर्वस्पर्शीय बजट प्रत्येक वर्ग के लिए अत्यंत ही लाभदायक सिद्ध होगा। साथ ही विकास के नए आयाम स्थापित करेगा। इस भविष्योन्मुखी एवं लोककल्याणकारी केंद्रीय बजट की सौगात के लिए मैं प्रधानमंत्री एवं वित्तमंत्री का हृदय से आभार व्यक्त करती हूं।

गरीब, युवाओं, किसानों और नारी शक्ति का बजट : डॉ.नीरा

कोडरमा विधायक डॉ.नीरा यादव ने बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि आज का बजट किसान और महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत करेगा। देश तेज गति से आगे बढ़ रहा है, इस गति को और बल मिलेगा। बजट में स्वास्थ्य और रोजगार पर खास ध्यान दिया गया है। उन्होंने कहा कि नए टैक्स रिजीम में अब 12 लाख रुपये तक की कमाई पर कोई टैक्स नहीं लगेगा, इससे मध्यम वर्ग को बड़ी राहत होगी। वरिष्ठ नागरिकों को भी बजट से बड़ी राहत मिलेगी, उनके लिए टैक्स छूट की सीमा भी 50 हजार से बढ़ाकर 1 लाख रुपये कर दी गई है।

प्रेमनाथ बने शहीद भगत सिंह महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य

खबर मन्त्र संवाददाता

■ अध्यक्ष सचिव समेत शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मियों ने दी बधाई

प्रभारी प्राचार्य का स्वागत करते शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारी।

हुसैनाबाद पलामू। प्रभारी प्राचार्य संजय सिंह की सेवानिवृति के बाद शहीद भगत सिंह कॉलेज जपला के वरीय व्याख्याता प्रेमनाथ को शासी निकाय के अध्यक्ष विधायक संजय कुमार सिंह यादव तथा अंतरिम सचिव सुशीला मिश्रा के आदेशानुसार प्रभारी प्राचार्य का पदभार दिया गया। नये प्रभारी प्राचार्य को कॉलेज के अंतरिम सचिव, शिक्षक-शिक्षकेत्तर कर्मचारी ने शॉल एवं माला देकर स्वागत किया। मौके पर शिक्षक-शिक्षकेतर कर्मचारी अरविंद सिह, कृष्ण सिंह, शंभू शरण सिंह, संजय सिंह, नागेंद्र सिंह, धनंजय सिंह, अनिल सिंह, कंचन सिंह, आकाश कुमार सिंह, मो मुरुसीद, अमित रंजन मिश्रा, अरुण कुमार सिंह, दिग्विजय सिह आदि थे।

पूर्वडीहा की प्रेरणा बनी डॉक्टर एम्स पटना में सेकेंड टॉपर बनी

खबर मन्त्र संवाददाता

प्रेरणा को सम्मानित करते अतिथि।

चैनपुर पलामू। प्रखंड के पूर्वडीहा के दिवाकर दूबे की सुपुत्री प्रेरणा कुमारी ने 4 साल की कड़ी मेहनत कर एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी की तथा डॉक्टर की उपाधि हासिल की। दो भाई बहनों में छोटी प्रेरणा बचपन से ही पढ़ने में मेधावी रही है। 10वीं की पढ़ाई डीएवी डालटनगंज और 12वीं डीएवी कपिलदेव रांची से की तथा डॉक्टर बनने का रास्ता चुनी। जनवरी 2025 में फाइनल परीक्षा में प्रेरणा ने एम्स पटना से सेकेंड टौपर बनकर शल्य चिकित्सा एवं हड्डी रोग विशेषज्ञ में डाक्टर बनी। प्रेरणा के पिता श्री दिवाकर दूबे सीओ हैं और वर्तमान में बोकारो चास में पदस्थापित हैं तथा माता गृहिणी हैं। अपनी सुपुत्री के इस सफलता पर बहुत खुश नजर आये। इस विषय पर बात करते हुए पूर्वडीहा के समाजसेवी विकास दूबे ने बताया कि यह पूरे गांव के लिए गौरव की बात है आज गांव में खुशी का माहौल है।

समावेशी व विकासोन्मुख बजट है : ऋषिकेश दूबे

मेदिनीनगर। अखिल भारतीय जीवन बीमा संघ के पलामू अध्यक्ष सह लाइफ मेंबर फेडरेशन ऑफ ऑल व्यापार संगठन ने कहा कि यह बजट एक समावेशी और विकासोन्मुख बजट है जिसमें समाज के हर वर्ग लाभान्वित करने की कोशिश की गई है। आयकर सीमा को 12 लाख तक करना एक स्वागत योग्य कदम है इससे मध्यम वर्ग को राहत मिलेगी।

उपडाकघर का स्थान परिवर्तित

मोहम्मदगंज। उपडाकघर मोहम्मदगंज जपला मेन रोड में चंद्रबहादुर सिंह के रविवारीय बाजार स्थित नये भवन में शिफ्ट हो गया है। उपडाकपाल रत्नेश कुमार ने कहा कि नये भवन में क्षेत्र के लोगों को बेहतर सुविधा मिलेगी। बदलते दौर में डाक विभाग से पत्र-पार्सल के साथ सरकार की योजनाओं का लाभ भी मिल रहा है। मोहम्मदगंज उप डाकघर में लोगों को डाक, पार्सल मदों की बुकिंग, बचत, बीमा, आईपीपीबी व अन्य सारी सुविधाएं मिलेंगी।

त्रिवेणी में मृत लोगों के लिए की गयी प्रार्थना

मेदिनीनगर। पलामू जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बिट्टू पाठक ने प्रयागराज त्रिवेणी में स्नान कर बीते मंगलवार को महाकुंभ में भगदड़ में मृतकों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। इसके साथ ही हादसे में घायल लोगों के जल्द स्वस्थ होने की कामना की। इसके बाद अजमेर शरीफ स्थित ख्वाजा गरीब नवाज के दरबार में चादरपोशी कर महाकुंभ में भगदड़ हादसे के मृतकों को जन्नत में आला मुकाम अता करने, हिंदुस्तान में अमन और भाईचारा कायम रहने की दुआ करायी।

हृदयाघात से ग्रामीण चिकित्सक का इंतकाल

हरिहरगंज पलामू। शहरी क्षेत्र के बंजारी मुहल्ला निवासी ग्रामीण चिकित्सक समाजसेवी डॉ महबूब आलम अंसारी की हृदयाघात से शनिवार को मौत हो गयी। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये। मृतक का पुत्र खालीद अंसारी ने बताया कि सुबह में तबीयत बिगड़ने पर उन्हें तत्काल औरंगाबाद ले जाया गया। जहां इलाज के दौरान इंतकाल हो गया। उनकी मौत की खबर सुनते ही बड़ी संख्या में लोग आवास पहुंचकर परिजनों को सांत्वना दी। लोग उनके मृदुल स्वभाव और सेवा भावना की तारीफ कर रहे हैं। बाद में रात 8 बजे बंजारी कब्रिस्तान में उन्हें सुपुर्द ए खाक किया गया। चिकित्सक की मौत पर कई लोगों ने शोक संवेदना भी प्रकट की है।

मां सरस्वती की मूर्ति स्थापना सह प्राण प्रतिष्ठा यज्ञ प्रारंभ

खबर मन्त्र संवाददाता

■ श्रद्धालुओं ने निकाली कलश यात्रा

सतबरवा। प्रखंड के हलुमाड़ गांव में शनिवार से माता सरस्वती की मूर्ति स्थापना सह प्राण प्रतिष्ठा यज्ञ प्रारंभ हो गया। यज्ञ कार्यक्रम 1 फरवरी से 4 फरवरी तक चलेगा। शनिवार को बाजे- गाजे के साथ कलश यात्रा निकाली गयी, जिसमें श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। कलश यात्रा हलुमाड़ के सखुवाटांड टोला स्थित सरस्वती मंदिर से लेदवाखांड़ दुमुहान पहुंचा, जहां श्रद्धालु भक्तों ने विधि विधान से कलश में जल भरकर मानासोती, हलुमाड़, होते हुए यज्ञ मंडप पहुंचे। कलश यात्रा में जिप सदस्य सुधा कुमारी, उप प्रमुख कामाख्या यादव, मुखिया संघ अध्यक्ष गिरवर राम, डॉ अशोक राम, भीष्म चौरसिया, अमलेश चौरसिया आदि थे।

बीमारी से लड़ने में सबका योगदान महत्वपूर्ण हैं: एसडीएम

हुसैनाबाद पलामू। अनुमंडल कार्यालय के मुख्य सभागार में एसडीएम गौरांग महतो समेत अनुमंडल के तीनों प्रखंडों के सीओ व बीडीओ समेत कई अधिकारियों ने कुष्ठ निवारण के जागरूकता व रोकथाम की शपथ ली। अध्यक्षता एसडीओ गौरांग महतो ने किया, वंही अनुमण्डल स्वास्थ्य प्रोग्राम पदाधिकारी विभूति प्रसाद ने जानकारी देते हुए बताया कि कुष्ठ जागरूकता अभियान और कुष्ठ खोजी अभियान, 31 जनवरी से 14 फरवरी तक प्रत्येक गांव में चलेगा।

प्रधान डाकघर में बनाया जा रहा आधार कार्ड : पोस्टमास्टर रूपेश

खबर मन्त्र संवाददाता

■ आधार कार्ड में सुधार और बायोमेट्रिक कराना अनिवार्य

मेदिनीनगर। पलामू प्रमंडल के प्रधान डाकघर में बच्चों का आधार कार्ड बन रहा है। साथ ही आधार में सुधार और बायोमैट्रिक भी हो रहा है। यह जानकारी प्रधान डाकघर में पदस्थापित पोस्टमास्टर रूपेश वर्मा ने दी। बताया कि पलामू जिला के लोग आधार कार्ड बनवाने व उसमें सुधार कराने के लिए जहां-तहां भटककर परेशान होते हैं। अपील की है कि प्रधान डाकघर आकर कार्य करा सकते हैं। प्रधान डाकघर में सुबह 9 से शाम 5 बजे तक काम हो रहा है जिसमें विभिन्न प्रकार की सेवाएं दी जा रही है। 5 साल के बच्चे का निःशुल्क आधार बनाना, मोबाइल नंबर जोड़ना, पता परिवर्तन करना, जन्मतिथि में सुधार करना, जिनका भी आधार कार्ड बनें हुए 10 साल हो गया है उन्हें एक बार अपना बायोमेट्रिक करना अनिवार्य है।

देश विदेश से आईएसएम में जुटे विद्वान साइंटिस्ट, केन्द्रीय मंत्री मोहन रेड्डी ने कहा

तीन वर्षों में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी

विशेष संवाददाता

धनबाद। पद्मश्री बीवी मोहन रेड्डी ने आज यहां कहा कि भारत जिस तेजी से बड़ी अर्थ व्यवस्था की ओर अग्रसर है उससे स्पष्ट है कि देश 2028 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था वाला देश बन जायेगा। श्री रेड्डी आज यहां आईआईटी (आईएसएम) में देश विदेश से जुटे प्रमुख उद्योग विशेषज्ञ और शिक्षाविदों के समागम को संबोधित कर रहे थे। विषय था खनन, ऊर्जा और स्थिरता के भविष्य को आकार देने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा। कार्यशाला पेनमैन ऑडिटोरियम में हुई। जिसे आईएसएम ने टैक्समिन के सहयोग से इंडस्ट्री इंस्टीट्यूट इंटरैक्शन 2025 के तहत आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम में भविष्य की खनन तकनीकों, टकराव रोकथाम प्रणालियों, क्रिटिकल मिनरल्स में वैश्विक रुझान, वैश्विक परिदृश्य में भारत की स्थिति और नेट-जीरो उत्सर्जन प्राप्त करने की रणनीतियों जैसे विभिन्न विषयों की विस्तृत चर्चा की गई। खनन क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा, डीकाबोर्नाइजेशन और कॉरपोरेट स्थिरता के लिए नवाचारों पर विशेष जोर दिया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण आर एंड डी फेयर का उद्घाटन था, जिसमें विभिन्न विभागों और अनुसंधान केंद्रों ने स्मार्ट माइनिंग, क्रिटिकल मिनरल्स और ग्रीन एनर्जी में अपनी नवीनतम तकनीकों और प्रगतियों को प्रदर्शित किया। डॉ बीवीआर मोहन रेड्डी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था पर प्रकाश डाला। डॉ रेड्डी ने उद्योग और शिक्षण संस्थानों के बीच मजबूत सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया और उद्योगों को अधिक जोखिम भरे, क्रांतिकारी अनुसंधान में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया।

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आईआईटी के निदेशक प्रो. अमित पात्रा सेयोग के महत्व पर जोर दिया और संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं के लिए बढ़े हुए वित्त पोषण की घोषणा की। अजीत कुमार सक्सेना (सीएमडी एमओआईएल इंडिया लिमिटेड) ने क्रिटिकल मिनरल्स की भूमिका पर प्रकाश डाला, जो ग्रीन एनर्जी और नेट-जीरो उत्सर्जन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं।

सिंफर के निदेशक प्रो. ए.के. मिश्र आर्थिक विकास में खनन के महत्वपूर्ण योगदान पर चर्चा की और उद्योग की सार्वजनिक धारणा को बदलने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. वी.एम.एस.आर. मूर्ति (निदेशक, आईआईईएसटी शिवपुर) ने स्मार्ट माइनिंग, क्रिटिकल मिनरल्स और ग्रीन एनर्जी को शैक्षणिक पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया जिससे छात्र भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार हो सकें।

बोकारो में चला 'हेलमेट नहीं तो पेट्रोल नहीं' जागरूकता सह जांच अभियान

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। उपायुक्त विजया जाधव के निर्देशानुसार मोटरयान निरीक्षक अभय चौधरी एवं अमित कुमार के नेतृत्व में हेलमेट नहीं तो पेट्रोल नहीं जागरूकता सह जांच अभियान चलाया जा रहा है। इस दौरान जिले के विभिन्न पेट्रोल पंपों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान पेट्रोल पंप संचालकों को निर्देश दिया गया कि वे बिना हेलमेट के दोपहिया वाहन चलाने वालों को ईंधन न दें और इस अनिवार्यता के बारे में प्रमुखता से बोर्ड लगाएं। साथ ही इसका अक्षरशः पालन भी करें। परिवहन विभाग झारखंड सरकार द्वारा दिए गए निर्देश के तहत शुरू की गई इस पहल का उद्देश्य सवार और पीछे बैठे यात्रियों दोनों के लिए हेलमेट का उपयोग सुनिश्चित करके यातायात दुर्घटनाओं को कम करना है। अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए नियमित निरीक्षण भी किए जाएंगे तथा नियमों का पालन न करने वाले पेट्रोल पंपों संचालकों पर जुमार्ना या कानूनी कार्रवाई की जाएगी। मोटरयान निरीक्षक ने नियम के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि यह सड़क सुरक्षा और जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम है। स्कूलों, कॉलेजों और स्थानीय समुदायों को शामिल करते हुए जन जागरूकता अभियान भी चलाए जा रहे हैं ताकि आम नागरिकों को हेलमेट की आवश्यकता के बारे में जागरूक किया जा सके। बाइक चलाने और पीछे बैठने वालों- दोनों को हेलमेट लगाना होगा। पेट्रोल पंप पर बिना हेलमेट तेल भरवाने के लिए जबरदस्ती करने वालों का चालान काटा जाएगा। इसके लिए सभी पंप मालिकों को सीसीटीवी कैमरे की फुटेज देनी होगी। इस दौरान यातायात निरीक्षक आरके राणा, जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधक गोविंद सहित अन्य उपस्थित थे।

दुमका : सरस्वती पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक

खबर मन्त्र संवाददाता

दुमका। सरस्वती पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक मुफस्सिल थाना परिसर में शनिवार को आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता नगर थाना प्रभारी अमित लकड़ा एवं मुफस्सिल थाना प्रभारी सत्यम कुमार ने संयुक्त रूप से किया। बैठक में मुफस्सिल थाना प्रभारी सत्यम कुमार ने सरस्वती पूजा शांति एवं सौहार्द के साथ मनाने की अपील करते हुए राज्य सरकार के द्वारा जारी निदेर्शों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि पूजा समिति को एक आवेदन समर्पित करना अनिवार्य होगा। जिसमें समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव का नाम और नंबर देने होंगे। आवेदन में पूजा, विसर्जन की समय एवं रूट निर्धारित करना होगा। डीजे पर पूरी तरह पाबंदी होगी। पूजा के दौरान किसी दूसरे समुदाय के धार्मिक भावना आहत नहीं हो, ऐसे गाने पर पाबंदी होगी। बड़े पूजा पंडालों में लाईट के लिए जरनेटर एवं अग्निशामक यंत्र आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। नगर थाना प्रभारी अमित लकड़ा ने लोगों को अफवाहों से बचने एवं किसी प्रकार की असमाजिक तत्वों की हरकते को पुलिस को सूचित करने का अपील किया। कमेटी के सदस्यों का नाम मोबाइल नंबर देने सहित कई आवश्यक निर्देश दिया। इस दौरान पूजा में शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की। उन्होंने बताया कि सोशल मीडिया पर पुलिस की पैनी नजर होगी। कहीं भी किसी तरह की गड़बड़ी की सूचना तत्काल थाना को देने का आग्रह किया। बैठक में दिग्घी ओपी थाना प्रभारी अनुज सिंह, एएसआई बिहारी उरांव, प्रदीप्तो मुखर्जी, मुस्ताक अली, रूपेश यादव, मुकेश सिंह, संजय यादव उपस्थित थे।

एक नजर में

तेनुघाट पत्रकार संध ने मंत्री का किया स्वागत

बेरमो/तेनुघाट कोर्ट। तेनुघाट पत्रकार संघ के द्वारा एल आई सी ऑफिस तेनुघाट में आयोजित सम्मान समारोह में मंत्री योगेंद्र प्रसाद को फूल माला एवं शॉल ओढ़ाकर तथा बुके देकर सम्मानित किया गया। और जर्जर प्रेस क्लब को मरम्मत करने तथा तेनुघाट में रह रहे लोगों को जमीन और मकान को लीज करने की मांग की गई। उपस्थित ग्रामीणों की समस्याओं को उन्होंने सुना और निष्पादन करने का भरोसा दिया। इस मौके पर तेनुघाट पेय जल एवं स्वच्छता विभाग के सहायक अभियंता शास्त्री साह, रोहित कुमार मंडल कनीय अभियंता, प्रतीक सिन्हा कनीय अभियंता पेटरवार, पुलिस निरीक्षक महेश प्रसाद सिंह, कथारा ओपी प्रभारी राजेश कुमार, तेनुघाट ओपी प्रभारी अजीत कुमार, प्रभारी प्रफुल कुमार, पूर्व मुखिया रेखा सिन्हा, श्रीराम हेंब्रम, अधिवकता अनिल लाल, निशु सिन्हा दिलीप हेंब्रम, राजन नायक, पंकज, संजय शर्मा सहित कई पत्रकार मौजूद थे।

एसकेएमयू पीजी में नामांकन के लिए आवेदन आज से

दुमका। सिदो-कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय में पीजी सत्र 2024-26 के लिए नामांकन की प्रक्रिया आज से शुरू हो रही है। उक्त निर्णय कुलपति प्रो बिमल प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में शुक्रवार को आयोजित नामांकन समिति की बैठक में लिया गया। एसकेएमयू के पीजी कोर्स में नामांकन के लिए इच्छुक छात्र 2 से 16 फरवरी तक चांसलर पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। डीएसडब्ल्यू डॉ जैनेंद्र यादव ने बताया कि यूजी सेमेस्टर-6 का परिणाम प्रकाशित हो चुका है। अब पीजी नामांकन के लिए चांसलर पोर्टल खोला जा रहा है। यूजी पास सभी छात्र 100 रुपये निर्धारित शुल्क का भुगतान कर चांसलर पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि पीजी नामांकन के लिए छात्र चांसलर पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन करेंगे। जिसके बाद उपलब्ध सीटों के आधार पर राज्य सरकार के आरक्षण रोस्टर के आधार पर यूजी के अंकों के आधार पर मेधा सूची तैयार की जाएगी और दस्तावेज सत्यापन के बाद छात्रों को नामांकन शुल्क जमा कर नामांकन लेना होगा। उक्त बैठक में निर्णय लिया गया कि पीजी प्रवेश के साथ एमबीए और एमसीए पाठ्यक्रमों में भी प्रवेश लिया जाएगा। विदित हो कि विश्वविद्यालय परिसर में एमबीए और एमसीए पाठ्यक्रम स्व-वित्तपोषित मोड में संचालित होते हैं। बैठक में डॉ पूनम हेम्ब्रम, डॉ पीपी सिंह, डॉ नीलेश कुमार, डॉ संजय कुमार सिन्हा, डॉ अनिल कुमार वर्मा, डॉ संजीव कुमार, डॉ सुशील टुडू, डॉ संजय कुमार सिंह, डॉ स्वतंत्र सिंह, डॉ शम्स तबरेज खान, डॉ सुजीत सोरेन, डॉ एसके शील, डॉ डीके मिश्र, डॉ राजेश कुमार यादव, डॉ अखिलेश कुमार, डॉ सयैद राजा इमाम रिजवी, डॉ त्रिपुरारी प्रसाद सिंह, डॉ स्मृति कुमारी, दीपक कुमार, कुमारी नेहा, मनोज आदि उपस्थित थे।

डीपीएस चास के 5 विद्यार्थियों का जीके ओलंपियाड में जोनल स्तर पर शीर्ष रैंक

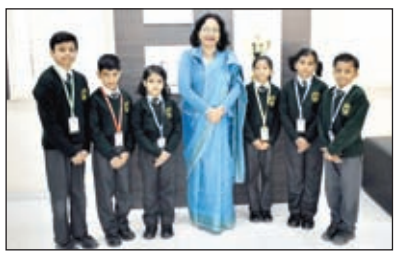

बोकारो। डीपीएस चास के 5 विद्यार्थियों ने सिल्वरजोन फाउंडेशन नई दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय जेनरल नॉलेज ओलंपियाड 2024-25 में जहां शीर्ष रैंक प्राप्त किया है वहीं 45 विद्यार्थियों ने राज्यस्तर पर टॉप 100 की सूची में शीर्ष 50 के अंदर अपना स्थान हासिल कर अपनी प्रतिभा का परचम लहराया है। कक्षा पहली के जान्वी राज अरफा परवीन नुवेश सागर और कक्षा दूसरी के अंकित राज और प्रणव प्रकाश ने अपनी-अपनी कक्षा श्रेणियों में जोनल स्तर पर पहला स्थान हासिल किया। 7वीं के आयुष चंद्र महथा ने राज्य स्तर पर रैंक वन तीन विद्यार्थियों परिधि सिंह माहिका मेहरा और रुद्र प्रताप सिंह ने तीसरा स्थान हासिल किया है। इसके अतिरिक्त जीएस डारविन शुभम कुमार आयुष कुमार सुदीप सेन आयुष कुमार अंश हिमांशु कुमार महतो अक्षित आनंद श्रेष्ठ रंजन रित्विक अभिनव कुमार अद्वित सिंह अथर्व कुमार सिंह तन्मय भारती सुमित कुमार मिश्रा वंश राज स्मृति शुभम प्रत्यूष कश्यप अर्णव कुमार अरहान अली अध्यन अग्रवाल कृशांग तरेनिया प्रशांत कुमार आदर्श कुमार भैया प्रियांशु राज तन्मय कुमार झा सृष्टि शुक्ला श्रेयांश प्रखर अंकित कुमार पवन कुमार गोराई रियांश रंजन अशरफुल हादी मयंक रंजन अक्षिता सागर शिवांश कुमार सिंह गर्वित कुमार गुप्ता साहिल कुमार आर्यन कुमार पार्थ सारथी दास आकाश कुमार पांडेय अखिलेश कुमार शर्मा चौथे से 27वें स्थान पर काबिज रहे। विद्यालय की चीफ मेंटर डॉ हेमलता एस मोहन व निदेशिका डॉ मनीषा तिवारी ने उन्हें बधाई दी और भविष्य में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

बीएसएल से सेवानिवृत्त कर्मचारियों हेतु आयोजित विदाई समारोह संपन्न

बोकारो। बोकारो स्टील प्लांट से जनवरी 2025 में सेवानिवृत होने वाले कुल 13 अधिशासी तथा 77 अनाधिशासी कर्मियों के लिए मानव संसाधन के ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग के मेन ऑडिटोरियम में अयोजित विदाई समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में ईडी राजश्री बनर्जी एवं बीजीएच के प्रभारी डॉ बी बी करुणामय उपस्थित थे। एजीएम डॉ नन्दा प्रियदर्शिनी ने आगंतुकों का स्वागत किया तथा सेवानिवृत हो रहे कर्मियों को अंतिम निपटारा एवं मैत्री भवन से सम्बंधित जानकारी दी। ईडी राजश्री बनर्जी तथा डॉ बीबी करुणामय ने सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों को उनकी निष्ठापूर्ण सेवा के लिए बधाई देते हुए उनके सुखमय जीवन की कामना की। अंत में निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी तथा राजश्री बनर्जी एवं बीजीएच के प्रभारी डॉ बीबी करुणामय ने सेवानिवृत हो रहे कर्मियों तथा उनके परिवारजनों से मुलाकात की तथा उनके सुखमय जीवन की कामना की। कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन एजीएम डॉ नन्दा प्रियदर्शिनी ने किया।

बीएसएल के कोक ओवन और कोल केमिकल्स में 'सेफ्टी सर्कल' प्रतियोगिता

बोकारो। बोकारो स्टील प्लांट के कोक ओवन और कोल केमिकल्स विभाग में कार्य स्थल की सुरक्षा को और मजबूत बनाने तथा सक्रिय जोखिम प्रबंधन की संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सेफ्टी सर्कल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विभाग की कुल 9 टीमों ने भाग लिया और सुरक्षा उपायों को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए अपने विचार साझा किए। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में जीएम अंजनी कुमार और एस दत्ता राय शामिल थे जिन्होंने सभी प्रस्तुतियों का समग्र मूल्यांकन किया। प्रतियोगिता में टीम प्रगति को प्रथम पुरस्कार तथा टीम स्पार्क को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में अरुण कुमार और जीएम केएन झा ने विजेताओं को सम्मानित किया। इस अवसर पर विभागीय सुरक्षा पदाधिकारी बागान मुर्मू जीएम सी घड़ाई डीजीएम एसके प्रधान एजीएम पीयूष आनंद क्षेत्रीय सुरक्षा पदाधिकारी शशि सुमन समेत कई अधिकारी उपस्थित रहे।

सरस्वती पूजा की तैयारियों में जुटे मूर्तिकार प्रतिमाओं को दिया जा रहा अंतिम रूप

बेरमो। सरस्वती पूजा को लेकर पेटरवार प्रखंड क्षेत्र में तैयारियां जोरों पर हैं। पूजा पंडालों में आकर्षक सजावट का कार्य चल रहा है, वहीं मूर्तिकार देवी सरस्वती की प्रतिमाओं को अंतिम रूप देने में दिन-रात जुटे हुए हैं। स्थानीय मूर्तिकार शुभम आर्ट्स के अनुसार, इस वर्ष भी पारंपरिक और आधुनिक शैली की प्रतिमाओं की मांग बनी हुई है। मूर्तिकार मिट्टी से देवी सरस्वती की सुंदर मूर्तियां तैयार कर रहे हैं। इनमें कुछ मूर्तियां बैठी हुई मुद्रा में तो कुछ खड़ी अवस्था में बनाई गई हैं। प्रतिमाओं को आकर्षक रंगों से सजाया जा रहा है।

कथारा ओपी प्रभारी के कार्यों से प्रभावित होकर कथारा के व्यापारियों ने किया सम्मानित

बेरमो। इन दिनों कथारा ओपी प्रभारी राजेश प्रजापति की कार्यों की हर तरफ सराहना हो रही है। इसी क्रम बीते देर शाम कथारा बाजार टांड़ में एक कार्यक्रम का विशेष आयोजन कर ओपी प्रभारी प्रजापति को कथारा के छोटे बड़े सभी व्यापारियों और दुकानदारों ने सामुहिक रुप से स्वागत किया। इस कार्यक्रम का आयोजन बीस सूत्री अध्यक्ष सह बेरमो प्रखंड कांग्रेस प्रदेश सचिव प्रमोद कुमार सिंह के द्वारा किया गया। मौके पर सिंह ने ओपी प्रभारी की सराहना करते हुए कहे कि जहां लोग पुलिस के नाम सुनते ही सहम जाते है वही ओपी प्रभारी ने इस धारणा को पुरी तरह बदल कर रख दिया है। लोग इनसे डरने के जगह प्रेम करते हैं और लोग सिधे सिधे इनसे जुड़े रहते हैं। इतना ही नहीं इनके द्वारा किए गए समाजिक कार्यो की हर तरफ लोग तारीफ कर रहे हैं। जबकि इस आयोजन का संचालन विजय पटेल द्वारा किया गया। मौके पर बाजार समिति कथारा के पूर्व मुखिया घनश्याम प्रसाद, संदीप सिंह, बिहारी राम, प्रदीप राम, विनोद राम, अर्जुन, राजेश राम, विक्की, सागर, दिलीप राम, शिवा, संजय,संतोष बहादुर, अमित राम, बसंती देवी, गायत्री देवी, भानु देवी, ममता देवी, सुनीता देवी, निर्मला देवी, भुटकी देवी, संकुन्तला देवी, सावित्री देवी इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

स्पीड न्यूज

ह्यूमन राइट्स ने प्रयागराज हादसे में मृत लोगों को दी श्रद्धांजलि

बोकारो। यूनिवर्सल ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन के तत्वावधान में प्रदेश अध्यक्ष आशा देवी की अध्यक्षता में एक बैठक स्थानीय सेक्टर 3 में हुई। इसमें प्रयागराज कुंभ में आकस्मिक दुर्घटना में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि दी गई। उपस्थित लोगों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की। मौके पर तारकेश्वर महतो सुमन सिंह नवीन सिंह बीके पासवान सुमित सिंह प्रेमलता आरती देवी मीरा देवी पुष्पा मिश्रा मंजू सिंह एसएन प्रसाद आदि उपस्थित थे। बैठक का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन गंगेश कुमार पाठक ने किया।

बीडीए कॉलेज पिछरी के प्रभारी प्राचार्य बने आसित कुमार घोषाल

बेरमो। बिंदेश्वरी दुबे आवासीय महाविद्यालय पिछरी के प्रभारी प्राचार्य आसित कुमार घोषाल ने शनिवार को पदभार ग्रहण किया। इस दौरान उपस्थित शिक्षकों ने पुष्प गुच्छ देकर शुभकामनाएं दी। बता दे कि 31 जनवरी को प्रभारी प्राचार्य प्रो सच्चिदानंद सिंह के सेवानिवृत्त होने पर प्रो आसित को प्रभारी प्राचार्य नियुक्त किया गया था।

दुमका : लिपिक संघ करेंगे भूख हड़ताल

दुमका। बंदोवस्त कार्यालय के कर्मियों के कार्यशैली से नाराज विधि लिपिक संघ की प्रमंडलीय इकाई तीन दिवसीय भूख हड़ताल करेंगे। भूख हड़ताल 6 से 9 फरवरी तक आयोजित होगी। इस बावत संघ महासचिव कंचन यादव ने बताया कि संथाल परगना के सभी छह जिले के लिपिक, ग्राम प्रधान एवं रैयत शामिल होंगे। उन्होंने बंदोवस्त पदाधिकारी के नाम आवेदन लिख बताया कि आउटसोर्सिंग कर्मी एवं नकल सेक्शन के कर्मियों के मनमाने रवैये के विरोध में हड़ताल करेंगे। उन्होंने बताया कि आउससोर्सिंग के कुछ कर्मी एवं अमीन रैयतों को यह कह बहकाते है कि एसओ, एएसओ, प्रधान पेशकार को जैसा कहेंगे, वैसा करेंगे। इस प्रकार रैयतों को ठगा जा रहा है। खतियान एवं आदेश की प्रतिलिपि के लिए आवेदन देने पर सत्यापित प्रतिलिपि निकलने में कई माह लग जाते है। लिपिक संघ ने बंदोवस्त पदाधिकारी को जांच कर कार्रवाई का आग्रह किया है।

चिन्मय विद्यालय में हुई मां की चरण पूजा

बोकारो। स्थानीय चिन्मय विद्यालय के तपोवन सभागार में आचार्या स्वामिनी संयुक्तानंद सरस्वती चिन्मय मिशन बोकारो के मार्गदर्शन में भव्य मातृ पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कक्षा 3 से 5 के बच्चों ने अपनी माताओं के चरण धोकर पुष्प अर्पित कर और आरती उतारकर मातृ भक्ति का परिचय दिया। स्वामिनी संयुक्तानंद ने मातृ पूजा की विशेषता बताते हुए कहा कि मां के बिना जीवन सृष्टि की रचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मातृ पूजन भारतीय संस्कृति की एक अनमोल परंपरा है जो न केवल माता-पिता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देती है बल्कि समाज में संस्कारों को सुदृढ़ करने का कार्य भी करती है।

46वां झारखंड स्थापना दिवस को लेकर उपराजधानी दुमका सज-धज कर तैयार

राज्य के लोगों के नाम झामुमो सुप्रीमो शिबू सोरेन आज देंगे संदेश

खबर मन्त्र संवाददाता

तैयारी को अंतिम रूप देते कारीगर।

दुमका। 46वां झारखंड स्थापना दिवस को लेकर गांधी मैदान में आयोजित होने वाली दो फरवरी को स्थापना दिवस की तैयारी अंतिम चरण पर है। गांधी मैदान पूरी तरह सज-धज कर तैयार हो चुकी है। इस बार स्थापना दिवस समारोह में संथाल परगना प्रमंडल समेत राज्य के कई दिग्गज नेता, मंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्त्ता जुटेंगे।

हर साल की अपेक्षा इस साल स्थापना दिवस समारोह में काफी तादाद में लोग जुटेंगे। समारोह में सीएम हेमंत सोरेन, दिसोम गुरू शिबू सोरेन, सांसद नलीन सोरेन समेत कई विधायक व नेता शिरकत करेंगे। जहां पार्टी का आगामी साल का आगाज करते हुए 47 वां झंडोतोलन पार्टी सुप्रीमो शिबू सोरेन करेंगे। इसके बाद राज्य के लोग दिशोम गुरू शिबू सोरेन का संदेश सुनेंगे। स्थापना दिवस समारोह में राज्य की समस्या एवं समाधान पर चर्चा होगी। केंद्र एवं राज्य सरकार के कार्यशैली पर चर्चा होगी। आगे विकास की रणनीति तैयार होगी। स्थापना दिवस समारोह को लेकर उपराजधानी दुमका पुरी तरह लाईट सज्जा से जगमग कर रही है। सरकारी कार्यालय भवन समेत जिले के विभिन्न मार्गो पर पार्टी के नेताओं के बड़े-बड़े होर्डिंग लगाये गये है। स्थापना दिवस की रैली के लिए हर साल की भांति एसपी कॉलेज मैदान में आदिवासी व मूलवासी समेत पार्टी कार्यकर्त्ता परांपरिक हथियार तीर-धनुष, परांपरिक परिधान पंछी एवं परांपरिक वाद्ययंत्र से टमाक व नगाड़ा से लैश होकर पहुंचेंगे।

जहां से रैली निकल पोखरा चौक स्थित संताल हूल के नायक सिदो कान्हू के प्रतिमा पर माल्यार्पण करेंगे। माल्यार्पण सांसद नलीन सोरेन व स्थानीय विधायक बसंत सोरेन के नेतृत्व में होगी। इसके बाद टीन बाजार होते हुए नीचे बाजार होते हुए मार्गो में पड़ने वाले महापुरूषों के माल्यार्पण एवं नमन करते हुए कार्यक्रम स्थल गांधी मैदान पहुंच सभा में तब्दील हो जायेगा। इसके बाद देर रात तक नेता व मंत्री का संबोधन लोग सुनेंगे। इस बीच कई सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलक दिखेगी। अंत में सीएम हेमंत सोरेन एवं दिशोम गुरू शिबू सोरेन का संदेश से सभा का समापन होगा। शहीदों के नाम से बनाये गए 46 तोरण द्वार उपराजधानी दुमका पूरी तरह हरा रंग के पार्टी के पताखा और झंडे से पटा पड़ा है। शहर के प्रवेश द्वार शहीदों के नाम से तोरण द्वार बनाया गया है। झारखंड आंदोलन में शहीदों को सम्मान के लिए शहीदो के नाम से तोरण द्वार बनाये गये है। जैसा की स्थापना दिवस की सालगिरह के अनुसार इस बार 46 तोरण द्वार बनाये गये है। जिसमें शहीदों का नाम और पार्टी के आला नेताओं का तस्वीरें लगी है।

आरकेएमयू ढोरी क्षेत्र कमिटी का पुनर्गठन सत्येन्द्र अध्यक्ष तथा महारुद्र बने सचिव

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो। एचएमएस से संबंध राष्ट्रीय कोयला मजदूर यूनियन (आरकेएमयू) ढोरी क्षेत्र के कमिटी का पुनर्गठन किया गया है। यह गठन कुंज बिहारी प्रसाद की अध्यक्षता में बैठक कर किया गया। जिसका प्रतिलिपि सभी नये प्रतिनिधि ने सीसीएल ढोरी के महाप्रबंधक के नाम अमला अधिकारी कार्मिक माला कुमारी को दिया।

इसमें संरक्षक कुंज बिहारी प्रसाद रहेंगे, अध्यक्ष सत्येन्द्र कुमार, सचिव महारूद्र कुमार सिंह, उपाध्यक्ष शंकर प्रसाद, अभिषेक शर्मा तथा रविन्द्र साहनी को बनाया गया। सह सचिव अभिजीत बाउरी, अनिल मोदी तथा रवि कुमार साहनी, संगठन मंत्री चन्दन कुमार चौहान, उपसंगठन मंत्री उमा शंकर तथा कोषाध्यक्ष सत्यप्रकाश सिन्हा को बनाया गया। संरक्षक कुंज बिहारी प्रसाद तथा सचिव महारुद्र कुमार सिंह ने कहा कि यह कमिटी सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर पूनर्गठन किया गया है। यूनियन का मुख्य उद्देश्य मजदूरों की समस्या का निराकरण करना है।

साथ ही यूनियन को मजबूती प्रदान करते हुए नए सदस्य को जोड़ा जाएगा। मजदूरों का हमारे यूनियन के तरफ रुझान बढ़ रहा है। दूसरे यूनियन से भी साथी सदस्य हमारे यूनियन के तरफ उम्मीद की किरण से देख रहे है और यूनियन की सदस्यता ले रहे है।

बीसीसीएल डीटी का बेरमो के लोगों ने किया स्वागत

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो। बीसीसीएल के नए निर्देशक तकनीक मनोज कुमार अग्रवाल का बेरमो के कई अधिकारियों कर्मचारियों ने स्वागत किया श्री अग्रवाल ने कहा कि बीसीसीएल की चालू वित्तीय वर्ष में कोयला उत्पादन लक्ष्य को हर हाल में हासिल किया जाएगा। उन्होंने लोगो से बेरमो कोयलांचल क्षेत्र के कोयला उत्पादन की विस्तृत जानकारी ली।

स्वागत करने वाले मे एएडीओसीएम के मैनेजर मुनीनाथ सिह, सेल ऑफिसर विवेक सिंह, साइडिंग मैनेजर प्रदीप कुमार, डिपार्टमेंटल ओपनकास्ट इंचार्ज संतोष कुमार, कमल उपाध्याय, आनंद विश्वकर्मा सहित दर्जनो लोग शामिल थे।

सीसीएल की ढोरी के रह चुके हैं जीएम : मनोज कुमार अग्रवाल का स्थानांतरण 15 मार्च 2024 को सीसीएल से एनसीएल में किया गया था। एनसीएल स्थानांतरण से पहले अग्रवाल सीसीएल के ढोरी एरिया के जीएम पद पर पदस्थापित थे। इससे पूर्व छह नवंबर 2023 को सीसीएल तथा सात नवंबर 2023 को एसईसीएल के डीटी के लिए हुए साक्षात्कार में भी शामिल हुए थे। बीसीसीएल के नये डीटी मनोज कुमार अग्रवाल ने इंटरमीडिएट की परीक्षा पटना विज्ञान महाविद्यालय, पटना से 1985 बैच में पास की है। खनन में बीटेक, आइआइटी (आइएसएम), धनबाद 1986-1990 में किया।

वहीं प्रथम श्रेणी प्रबंधक योग्यता प्रमाणपत्र धारक, डीजीएमएस व बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर (कार्यकारी एमबीए) भारतीय प्रबंधन विद्यालय रांची (2021-2023) हैं।

कोयला मंत्री पुरस्कार से हो चुके है सम्मानित

कोल इंडिया में सर्वश्रेष्ठ एरिया जनरल मैनेजर के लिए 'कोयला मंत्री पुरस्कार 2021-2022' प्राप्त किया। जबकि वित्त वर्ष 2016-17 में सीसीएल के सर्वश्रेष्ठ परियोजना अधिकारी से भी सम्मानित हो चुके है। भारत और विदेशों के दलित और पिछड़े लोगों के उत्थान से संबंधित सामाजिक सेवाओं के लिए 'डॉ अंबेडकर उत्कृष्ट सेवा राष्ट्रीय पुरस्कार-2020' और 'वीर बिरसा मुंडा राष्ट्रीय पुरस्कार-2021' से भी सम्मानित हो चुके हैं।

डीपीएस बोकारो में 'फुलवारी' के जरिये विद्यार्थियों ने दिखाया प्रकृति-प्रेम

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। डीपीएस बोकारो में फूलों की खूबसूरती के साथ झोपड़ी सोहराय पेंटिंग प्राकृतिक साज-सज्जा के साथ ग्रामीण परिवेश और आंचलिकता के बीच कबाड़ से जुगाड़ प्रकृति-प्रेम एवं कलात्मकता का अनूठा संगम देखने को मिला। अवसर था- फुलवारी नामक पुष्प-वनस्पति प्रदर्शनी सह प्रतियोगिता का। विद्यार्थियों ने प्रकृति-प्रेम का परिचय देते हुए अपने प्रदर्श प्रस्तुत किए। भांति-भांति के फूल मौसमी फल औषधीय व सजावटी पौधे बोनसाई व सब्जी सहित विभिन्न कैटेगरी में बच्चों ने 2000 से अधिक वानस्पतिक प्रजातियों की प्रदर्शनी लगाई। विद्यालय के गो ग्रीन इनिशिएटिवह्ल के तहत आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि बीएसएल के सीजीएम टीए कुंदन कुमार ने किया। विद्यार्थियों की कुशल बागवानी कला को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि आज विकास के दौर में जिस प्रकार वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, ऐसे में अधिकाधिक पौधे लगाकर ही हम पृथ्वी की रक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं। प्राचार्य डॉ एएस गंगवार ने कहा कि फुलवारी का उद्देश्य बच्चों को प्रकृति की रक्षा उसके पोषण और पर्यावरण-संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना है। इस दौरान मुख्य अतिथि व प्राचार्य ने पौधारोपण भी किए। प्रदर्शनी में पौधों की उत्कृष्टता यानी स्वास्थ्य मिट्टी बनावट व उसके महत्व के आधार पर निर्णायकों ने पुरस्कार के लिए प्रविष्टियों का चयन किया।

बोकारो मे मगही जागरण मंच का बैठक संपन्न

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो/बेरमो। बोकारो मे मगही जागरण मंच बिहार-झारखंड की सेक्टर 12अ स्थित क्वार्टर नं -1392 (आवासीय कार्यालय) मे बैठक संपन्न हुई। सैकडो की संख्या में मगही समाज के लोग उपस्थित हुए। सभी वक्ताओं ने संगठन का मुख्य उद्देश्य समाज को एकत्रित कर उसका विकास करना है। समाज में एकता और समरसता का भाव तभी पैदा होगा, जब सभी शिक्षित होने के साथ-साथ जागरूक होंगे। ऐसे में शिक्षा और जागरूकता से सामाजिक एकता के लक्ष्य को पाया जा सकता है। साथ ही साथ समाज की एकता बनाये रखने और सामाजिक सौहार्द का संदेश दिया। यहा सर्वसम्मति से होली मिलन समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया। बैठक मे अनिल कुमार सिंह, अमित कुमार सिंह, अभय सिंह, मदन सिंह, राम परिखा सिंह, शशिकांत सिंह, अशोक सिंह, अंजनी सिंह, शंकर दयाल सिंह, सुधीर कुमार सिंह, उदय प्रताप सिंह, आर पी सिंह, विकास सिंह, अभिमन्यु सिंह, पी एन सिंह, अजय सिंह, दिनेश सिंह, कमलेश सिंह, राजीव सिंह सहित लोग उपस्थित हुए।

स्पीड न्यूज

आत्मनिर्भर भारत का रोडमैप बजट : शाह

नयी दिल्ली। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आम बजट को विकसित और हर क्षेत्र में श्रेष्ठ भारत के निर्माण की दिशा में मोदी सरकार की दूरदर्शिता का ब्लूप्रिंट करार दिया है। श्री शाह ने कहा कि बजट विकसित और हर क्षेत्र में श्रेष्ठ भारत के निर्माण की दिशा में मोदी सरकार की दूरदर्शिता का ब्लूप्रिंट है। किसान, गरीब, मध्यम वर्ग, महिला और बच्चों की शिक्षा, पोषण व स्वास्थ्य से लेकर स्टार्ट अप , नवाचार और निवेश तक, हर क्षेत्र को समाहित करता यह बजट मोदी जी के आत्मनिर्भर भारत का रोडमैप है।

आर्थिक संकट के कोई उपाय नहीं: राहुल गांधी

नयी दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बजट 2025-26 को आर्थिक क्षेत्र में सरकार के वैचारिक दिवालियापन की संज्ञा देते हुये कहा कि बजट प्रस्तावों में अर्थव्यवसथा में सुधार के लिये कोई ठोस बात नहीं है। उन्होंने इस बजट को गोली के घाव को मरहम से ठीक करने जैसा प्रयास करार दिया है। कांग्रेस नेता ने कहा कि वित्त मंत्री बजट भाषण में कुछ भी नया नहीं था और तबाह हो रही अर्थव्यवस्था को संभालने के कोई प्रयास नहीं किये गये हैं। कृषि क्षेत्र के लिए एक लाख 87 हजार करोड़ रुपए

कृषि के लिए एक लाख 87 हजार करोड़ रुपए

नयी दिल्ली । केंद्रीय बजट 2025-26 में कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रमुख इंजन करार देते हुए इसके लिए तकरीबन एक लाख 87 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कृषि को भारत की विकास यात्रा के लिए प्रमुख इंजन बताया गया है।

हमास ने तीन और इजराइली बंधक छोड़े

गाजा पट्टी। कुख्यात आतंकवादी समूह हमास और इजराइल के बीच हुए संघर्ष विराम और बंधक रिहाई समझौते के अच्छे परिणाम सामने आने लगे हैं। हमास ने सात अक्टूबर, 2023 को अपहृत किए गए तीन और इजराइली बंधकों को आज रिहा कर दिया। इसके बाद तीनों 484 दिन बाद स्वदेश लौट गए। 54 वर्षीय ओफर काल्डेरन और 35 वर्षीय यार्डन बिबास को सुबह दक्षिण गाजा के खान यूनिस में अंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस के पर्यवेक्षकों की मौजूदगी में रिहा किया गया।

यूएस में एफबीआइ के 24 से ज्यादा अधिकारी बर्खास्त

वाशिंगटन। संयुक्त राज्य अमेरिका में फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई) के छह सबसे वरिष्ठ अधिकारियों और देशभर के एफबीआई फील्ड कार्यालयों के कई प्रमुखों को बाहर कर दिया गया है। अधिकारियों की कुल संख्या 24 से अधिक बताई गई है। इनमें कई अधिकारी ऐसे हैं जिन्होंने छह जनवरी के कैपिटल दंगों की जांच की थी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दूसरा कार्यकाल शुरू करते ही एफबीआई अधिकारियों के खिलाफ शुरू की गई यह सबसे बड़ी कार्रवाई है। एफबीआई संयुक्त राज्य अमेरिका के डिपार्टमेंट ऑफ जस्टिस की सबसे महत्वपूर्ण एजेंसी है।

शेयर बाजार सपाट बंद सेंसेक्स पांच अंक चढ़ा

मुंबई । भारतीय शेयर बाजार शनिवार को सपाट बंद हुआ। कारोबार के अंत में सेंसेक्स 5.39 अंक की तेजी के साथ 77,505.96 और निफ्टी 26.25 अंक की मामूली गिरावट के साथ 23,482.15 पर बंद हुआ। लार्जकैप के साथ मिडकैप और स्मॉलकैप में भी मिलाजुला कारोबार देखने को मिला। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 226.05 अंक या 0.42 प्रतिशत की गिरावट के साथ 53,486.15 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 69.25 अंक या 0.41 प्रतिशत की तेजी के साथ 16,979.15 पर बंद हुआ। हालांकि, बाजार का रुझान सकारात्मक था। बीएसई पर 2,081 शेयर हरे निशान में, 1,829 शेयर लाल निशान में और 127 बिना किसी बदलाव के बंद हुए।

इंफ्रास्ट्रक्चर में होगा बड़ा निवेश

बजट : राज्यों को 50 साल के लिए मिलेगा 1.5 लाख करोड़ का ब्याज-मुक्त कर्ज

सड़कों, पुलों, रेलवे और अन्य बुनियादी ढांचे में खर्च होगा पैसा

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट 2025 में इंफ्रास्ट्रक्चर में बड़ा निवेश करने का ऐलान किया है। सरकार राज्यों को 50 साल के लिए 1.5 लाख करोड़ रुपये का ब्याज-मुक्त कर्ज देगी। ये पैसा सीधे सड़कों, पुलों, रेलवे और अन्य बुनियादी ढांचे में खर्च होगा, जिससे विकास की गाड़ी और तेज दौड़ेगी।

अर्बन चैलेंज फंड लांच : सीतारमण ने शहरों के विकास के लिए 1 लाख करोड़ रुपये का अर्बन चैलेंज फंड भी लॉन्च किया है। इस फंड से शहरों को पानी, साफ-सफाई और रचनात्मक प्रोजेक्ट्स में निवेश का मौका मिलेगा, ताकि वे सिर्फ रहने की जगह नहीं बल्कि विकास के हब बन सकें।

यह फंड राज्यों को नए और अनोखे प्रोजेक्ट्स अपनाने के लिए प्रेरित करेगा। इसके तहत शहरों में प्रतिस्पर्धी और टिकाऊ विकास के मॉडल बनाए जाएंगे, जिससे वहां रहना और बेहतर हो जाएगा।

हर मंत्रालय लाएगा पीपीपी प्रोजेक्ट्स की योजना : हर मंत्रालय अगले तीन साल के लिए पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) प्रोजेक्ट्स की योजना बनाएगा। इसके साथ ही 10 लाख करोड़ रुपये जुटाने के लिए दूसरा एसेट मोनेटाइजेशन प्लान भी शुरू किया गया है।

नए प्रोजेक्ट्स में होगा पैसा पुर्ननिवेश : एसेट मोनेटाइजेशन से जो पैसा आएगा, उसे नए इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स में लगाया जाएगा ताकि विकास की रफ्तार धीमी न हो।

सरकार देगी 25% फंडिंग : जो प्रोजेक्ट बैंक से फंडिंग के लायक होंगे, उनमें सरकार खुद 25% तक की फंडिंग देगी। बाकी का पैसा बांड, बैंकिंग संस्थाओं व पीपीपी मॉडल से जुटाया जाएगा।

शहरी गरीबों पर बरसेगी लक्ष्मी

- रोजगार के साथ मिलेगा सरकारी योजनाओं का लाभ
- पीएम स्वनिधि योजना को भी नए रूप में लाने का ऐलान

नयी दिल्ली। शहरी गरीबों की मदद के लिए केंद्र सरकार ने एक नई योजना लाने की घोषणा की है। यह योजना शहरों में लोगों को रोजगार उपलब्ध करानेवाली हो सकती है। पीएम स्वनिधि योजना के तहत रेहड़ी-पटरी वालों को कारोबार के लिए पैसा उपलब्ध कराने के बाद यह एक और महत्वपूर्ण कार्यक्रम होगा जो शहरों में निर्धन आबादी और कमजोर समूहों की सहायता के लिए चलाया जाएगा। वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार एक नई योजना लाने जा रही है ताकि शहरों में रहने वाले गरीबों की आय बढ़ाने, उन्हें नियमित आजीविका अर्जित करने का अवसर देने के साथ ही जीवन स्तर बेहतर बनाने में मदद की जा सके। माना जा रहा है कि यह योजना शहरों में गरीबों को काम का अवसर प्रदान करने के साथ ही उन्हें सरकारी कल्याणकारी कार्यक्रमों के दायरे में लाने वाली होगी। केंद्र सरकार दीनदयाल उपाध्याय शहरी आजीविका मिशन का दायरा बढ़ाने की दिशा में भी काम कर रही है। इसमें नए लाभार्थी समूहों को स्वयं सहायता समूहों के जरिये सरकारी योजनाओं का लाभ देने के लिए बीस शहरों में पायलट प्रोजेक्ट चल रहा है। नई योजना को इस मिशन से भी जोड़ा जा सकता है। सरकार ने पीएम स्वनिधि योजना की सफलता को आगे बढ़ाने का फैसला किया है। स्कीम को नया स्वरूप दिया जाएगा। पीएम स्वनिधि योजना के तहत अब तक 68 लाख स्ट्रीट वेंडरों को लाभान्वित किया जा चुका है। स्ट्रीट वेंडरों को दस हजार से लेकर पचास हजार रुपये तक का ऋण दिया जाता है।

जल जीवन मिशन की अवधि तीन साल बढ़ी

नयी दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि जल जीवन मिशन का कुल बजटीय परिव्यय बढ़ाकर 67,000 करोड़ रुपए कर मिशन की अवधि को तीन साल बढ़ाया गया है। सीतारमण ने कहा कि जल जीवन मिशन की अवधि तीन साल बढ़ा दी है और सभी घरों को जल जीवन मिशन के तहत 2028 तक स्वच्छ जल उपलब्ध कराया जाएगा। इस मिशन की शुरूआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त 2019 को लालकिला की प्राचीर से की थी। 2024 तक देश के सभी घरों को नल से स्वच्छ उपलब्ध कराया जाना था, लेकिन अभी सभी घरों को नल से स्वच्छ जल नहीं पहुंच रहा है इसलिए मिशन की अवधि बढाई गई है।

ग्रामीण पोस्ट ऑफिस में होगा बड़ा बदलाव : वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार की योजना भारतीय डाक विभाग को 1.5 लाख ग्रामीण डाकघरों के साथ बड़े लॉजिस्टिक्स संगठन में बदलने की है। मंत्री ने कहा कि 1.5 लाख ग्रामीण डाकघरों के साथ बड़े सार्वजनिक लॉजिस्टिक संगठन में तब्दील किया जाएगा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए उत्प्रेरक बनेगा।

रक्षा मंत्रालय के लिए रिकार्ड 6.81 लाख करोड़ आवंटित

एजेंसी

- 2024-25 के बजट से 9.53 प्रतिशत अधिक

नयी दिल्ली। सरकार ने सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए वित्त वर्ष 2025-26 के बजट में रक्षा मंत्रालय के लिए रिकार्ड 6,81,210.27 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। रक्षा मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि यह आवंटन वित्त वर्ष 2024-25 के बजटीय अनुमान से 9.53 प्रतिशत अधिक है और केंद्रीय बजट का 13.45 प्रतिशत है, जो मंत्रालयों में सबसे अधिक है। इसमें से 1,80,000 करोड़ रुपये यानी कुल आवंटन का 26.43 प्रतिशत रक्षा सेवाओं पर पूंजीगत व्यय पर खर्च किया जाएगा। बजट में सशस्त्र बलों के राजस्व का आवंटन 3,11,732.30 करोड़ रुपये है, जो कुल आवंटन का 45.76 प्रतिशत है। इसमें रक्षा पेंशन का हिस्सा 1,60,795 करोड़ रुपये यानी 23.60 प्रतिशत है और शेष 28,682.97 करोड़ रुपये यानी 4.21 प्रतिशत रक्षा मंत्रालय के तहत नागरिक संगठनों के लिए है। मंत्रालय ने 2025-26 को सुधारों के वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया है, जो सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण के लिए सरकार के संकल्प को और मजबूत करेगा और इसका उद्देश्य आवंटन का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए रक्षा खरीद प्रक्रिया में सरलीकरण करना है।

रक्षा मंत्री ने प्रधानमंत्री के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने की दिशा में बजट पेश करने के लिए वित्त मंत्री को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह बजट युवाओं, गरीबों, किसानों, महिलाओं और समाज के अन्य सभी वर्गों के विकास को बढ़ावा देगा। मौजूदा भू-राजनीतिक परिदृश्य में, जहाँ विश्व आधुनिक युद्ध के बदलते प्रतिमान को देख रहा है, भारतीय सशस्त्र बलों को अत्याधुनिक हथियारों से लैस करने और उन्हें तकनीकी रूप से उन्नत युद्ध-तैयार बल में बदलने की आवश्यकता है। इसे ध्यान में रखते हुए, रक्षा बलों के 1,80,000 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।

36 जीवन रक्षक दवाओं पर आयात शुल्क में छूट

नयी दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट में जीवन रक्षक दवाओं को सस्ता बनाने के लिये इस तरह की 36 आयातित दवाओं और उनको बनाने में काम आने वाले बल्क ड्रग्स पर आधार आयात शुल्क (बीसीडी) को खत्म करने की घोषणा की है। सीतारमण ने कहा कि छह जीवन रक्षक दवाओं को पांच प्रतिशत शुल्क की रियायती दर के तहत लाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 37 अन्य दवाओं तथा 13 नए रोगी सहायता कार्यक्रमों को बीसीडी से मुक्त रखा जाएगा, बशर्ते ये दवाइयां और सहायता कार्यक्रम मरीजों को मुफ्त में उपलब्ध कराये जाते हों।

मधुबनी की साड़ी पहन निर्मला सीतारमण ने पेश किया बजट

नयी दिल्ली । केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को केंद्रीय बजट पेश करने के मौके पर बेहद खास साड़ी पहनी है, जिसे लेकर हर जगह चर्चा हो रही है। इस बार उन्होंने मधुबनी पेंटिंग वाली साड़ी पहनी है, जिसमें मधुबनी की कला का चित्रण किया गया है। यह साड़ी उन्हें पद्म विजेता दुलारी देवी ने भेंट की थी।

केसीसी की सीमा पांच लाख हुई

एजेंसी

पहली बार उद्यम शुरू करने वाली एससी व एसटी महिलाओं को दो करोड़ का ऋण

नयी दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) के लिए ब्याज सहायता योजना की सीमा तीन लाख रुपये से बढ़ाकर पांच लाख रुपये करने की घोषणा की। शनिवार को संसद में बजट पेश करते हुए सीतारमण ने कहा कि सरकार सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों (एमएसएमई) के लिए ऋण गारंटी कवर बढ़ाएगी ताकि उनकी कर्ज तक पहुंच में सुधार हो सके। इसके अलावा, सरकार सूक्ष्म उद्यमों के लिए पांच लाख रुपये की सीमा वाले कस्टमाइज्ड क्रेडिट कार्ड पेश करेगी।

उन्होंने कहा कि किसान क्रेडिट कार्ड 7.7 करोड़ किसानों, मछुआरों और डेयरी किसानों को अल्पकालिक ऋण की सुविधा प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि अच्छी तरह से संचालित नियार्तोन्मुख एमएसएमई को 20 करोड़ रुपये तक का सावधि ऋण प्रदान किया जाएगा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि सरकार पहली बार उद्यम शुरू करने वाली पांच लाख महिलाओं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों के लिए दो करोड़ रुपये का ऋण शुरू करेगी। वित्त मंत्री ने 2025-26 के लिए केंद्रीय बजट पेश करते हुए यह भी कहा कि एसएमई और बड़े उद्योगों के लिए एक विनिर्माण मिशन स्थापित किया जाएगा। इसके अलावा सरकार श्रम-प्रधान क्षेत्रों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए सुविधाजनक उपाय करेगी। उन्होंने कहा कि ऋण गारंटी कवर को दोगुना करके 20 करोड़ रुपये किया जाएगा तथा गारंटी शुल्क को घटाकर एक प्रतिशत किया जाएगा। मंत्री ने बिहार में राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी, उद्यमिता एवं प्रबंधन संस्थान की स्थापना करने की घोषणा भी की।

स्टार्टअप के लिए दस हजार करोड़ आवंटित

नयी दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने उद्यमियों के वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए 10 हजार करोड़ रुपये के कोष के साथ स्टार्टअप के लिए फंड ऑफ फंड्स योजना के एक और दौर का एलान किया। सीतारमण ने वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग ने अब तक 1.57 लाख से अधिक स्टार्टअप को मान्यता दी है। स्टार्टअप इंडिया जैसी पहलों के माध्यम से सरकार ने इस विकास को पोषित करने और उद्यमियों की अगली पीढ़ी को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्टार्टअप इंडिया की कार्य योजना 16 जनवरी 2016 को पेश की गई थी। केंद्र सरकार उसी वर्ष स्टार्टअप की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए 10 हजार करोड़ रुपये के कोष के साथ फंड ऑफ फंड्स फॉर स्टार्टअप्स (एफएफएस) योजना लाई थी। इसकी निगरानी एजेंसी डीपीआईआईटी है।

निर्मला सीतारमण के आठवें बजट भाषण की झलकियां

नयी दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को पूर्वाह्न 11 बजे लोकसभा में विपक्ष के हंगामें के बीच वित्त वर्ष 2025-26 का बजट भाषण शुरू किया। सीतारमण का लगातार आठवां और मोदी सरकार का चौदहवां बजट प्रस्तुतीकरण था।

- सदन की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्षी सदस्यों ने प्रयागराज के कुंभ में बुधवार को हुई भगदड़ में कई श्रद्धालुओं के हताहत होने का मामला उठाया और चर्चा की मांग की।
- लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने विपक्षी सदस्यों को शांत रहने की अपील करते हुये वित्त मंत्री को बजट प्रस्तुत करने का मौका देने को कहा। श्री बिरला ने कहा कि विपक्ष को राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान उन्हें अपनी बात कहने का पूरा मौका दिया जायेगा।
- पूर्वाह्न 11 बजकर एक मिनट पर सीतारमण ने हंगामें के बीच बजट भाषण शुरू कर दिया।
- हंगामा कर रहे विपक्षी सदस्यों पर बिरला की अपील का कोई असर नहीं हुआ और सपा के सदस्य कुछ देर के लिये सदन के बीचोबीच आ गये।
- इसके बाद कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार) और द्रमुक के सदस्यों ने सदन से बहिर्गमन किया।
- हल्के पीले बार्डर की गहरे क्रीम रंग की साड़ी पहने सीतारमण बजट भाषण के दौरान जब कोई विशेष घोषणा करतीं तो सत्ता पक्ष के सदस्य मेजे थपथपाकर उसका स्वागत करते थे।
- वित्त मंत्री ने पटना स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में विद्यार्थियों की सीटें बढ़ाने की घोषणा जब की तो विपक्षी सदस्य हंसते हुये देखे गये और उन्होंने हल्का सा शोरगुल किया।
- समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश के बारे में भी कुछ बोलिये।
- बजट भाषण के दौरान ही विपक्ष के एक सदस्य ने कहा कि महाकुंभ में भगदड़ में मरने वालों की सूची दीजिये। गायब लोगों का पता चलना चाहिये।
- सीतारमण ने जब आयकर में रियायत की घोषणा की तो सत्ता पक्ष के सदस्यों ने ...मोदी. मोदी... के नारे लगाये। वित्त मंत्री ने बजट भाषण के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का दो बार नाम लिया।

रेलवे की 4.60 लाख करोड़ की परियोजनाएं स्वीकृत

एजेंसी

- 100 नयी अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनें, 50 नयीं नमो भारत एक्सप्रेस , 200 वंदे भारत (चेयरकार एवं स्लीपर) का निर्माण, 1000 नये फ्लाईओवर एवं अंडरपास का निर्माण, 17500 जनरल कोच बनाने की योजनाएं शामिल

नयी दिल्ली। आम बजट 2025-26 में रेलवे की चार लाख 60 हजार करोड़ की परियोजनाओं को स्वीकृति देने के साथ दो लाख 64 हजार करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है, जिसमें से दो लाख 52 हजार करोड़ रुपए पूंजीगत व्यय के लिए दिये गये हैं जबकि करीब 12 हजार करोड़ रुपए सरकारी निजी साझीदारी (पीपीपी) के अंतर्गत निवेश से आएंगे। रेल, सूचना प्रसारण, इलैक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने लोकसभा में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के पहले पूर्ण आम बजट में रेलवे के लिए आवंटन की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने रेलवे के लिए इस साल दो लाख 64 हजार करोड़ रुपए की योजना मंजूर की है जिसमें दो लाख 52 हजार करोड़ रुपए पूंजीगत आवंटन है जबकि करीब 12 हजार करोड़ रुपए पीपीपी के अंतर्गत परियोजनाओं में निवेश से आने का अनुमान है। रेलवे का परिचालन अनुपात 98.2 रहने का अनुमान है। रेल मंत्री ने कहा कि बजट में रेलवे की चार लाख 60 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं को स्वीकृति दी गयी है जिनका दो से तीन साल में क्रियान्वयन होना है। उन्होंने कहा कि बजट में रेलवे के संरक्षा बजट एक लाख 16 हजार करोड़ रुपए का है जो पिछले वर्ष एक लाख 14 हजार करोड़ रुपए का रहा है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि बीते दिसंबर एवं जनवरी माह में रेलवे में कोई भी दुर्घटना दर्ज नहीं की गयी है।

उन्होंने एक सवाल के जवाब में बताया कि दस हजार लोकोमोटिव्स और 15 हजार किलोमीटर पटरियों पर कवच

लगाने का काम तेजी से चल रहा है। इसके अलावा अब देश में करीब दस हजार किलोमीटर के मार्ग पर ऑटोमैटिक ब्लॉक सिगनलिंग (एबीएस) लगायी जा रही है। इसके लिए विद्युत पारेषण लाइनों का उच्चीकरण 225 किलोवाट के स्तर पर किया जाना है। वैष्णव ने कहा कि बजट में रेलवे के लिए स्वीकृत परियोजनाओं में 100 नयी अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनें, 50 नयीं नमो भारत एक्सप्रेस गाड़ियां, 200 वंदे भारत एक्सप्रेस (चेयरकार एवं स्लीपर) का विनिर्माण, 1000 नये फ्लाईओवर एवं अंडरपास का निर्माण, 17500 जनरल कोच बनाने की योजनाएं शामिल हैं।

रेलवे के सकल प्रदर्शन के बारे में सवालों के जवाब में उन्होंने कहा कि इस साल 31 मार्च को भारतीय रेलवे 1.6 अरब टन माल ढुलाई का विश्व कीर्तिमान कायम करेगी तथा अगले वर्ष 31 मार्च 2026 में तीन लाख करोड़ रुपए की आय का रिकॉर्ड बनाएगी। लद्दाख एवं अरुणाचल प्रदेश में रेलवे लाइन बिछाने की परियोजनाओं में प्रगति के बारे में पूछे जाने पर रेल मंत्री ने कहा कि बिलासपुर मनाली लेह की लाइन और अरुणाचल प्रदेश की तवांग को जोड़ने वाली लाइन के बारे में रक्षा मंत्रालय से विचार विमर्श करके डीपीआर बनायी जा रही है। देश में हाईस्पीड बुलेट ट्रेन के विनिर्माण के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि वर्ष 2047 तक भारत में 7000 किलोमीटर हाईस्पीड रेलवे लाइन बिछायी जानी है और उसके लिए 280 किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से चलने वाली गाड़ियों को विकसित करने की तैयारी शुरू हो चुकी है। उन्होंने कहा कि स्वदेशी बुलेट ट्रेन अहमदाबाद मुंबई हाईस्पीड रेलवे ट्रैक पर नहीं चलेगी। उस परियोजना में भी अच्छी प्रगति हो रही है।

राज्यों की भागीदारी से शीर्ष 50 पर्यटन स्थल होंगे विकसित

नयी दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने केन्द्रीय बजट 2025-26 में कहा कि राज्यों की भागीदारी से शीर्ष 50 पर्यटन स्थल विकसित कर पर्यटन को रोजगार प्रेरित विकास के रूप में स्थापित किया जाएगा। सीतारमण ने कहा कि पर्यटन को रोजगार प्रेरित विकास के रूप में स्थापित किया है। रोजगार आधारित विकास हेतु युवाओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रम की पहल की गई है। इसके साथ ही होमस्टे के लिए मुद्रा लोन, यात्रा सुगमता में सुधार और पर्यटन स्थलों तक संपर्क, ई-वीजा सुविधा में सरलीकरण और राज्यों को प्रदर्शन आधारित प्रोत्साहन जैसे उपाय भी किए गए हैं। उन्होंने कहा कि राज्यों के सहयोग से देश में 50 पर्यटन स्थल विकसित किए जाएंगे। होटल एवं अन्य प्रमुख अवसंरचनाओं के विकास के लिए भूमि की व्यवस्था राज्यों द्वारा की जाएगी और इन क्षेत्रों में बनने वाले होटलों को अवसंरचना एचएमएल में शामिल किया जाएगा।